E-mail:-adhuniksamachar2014@gmail.com website:www.adhuniksamachar.com

आधुनिक समाचार

आधुनिक भारत का आधुनिक नजरिया

प्रयागराज से प्रकाशित हिन्दी दैनिक

12th ANNIVERSARY

वर्ष -12 अंक - 127 | प्रयागराज, शनिवार 29 अगस्त, 2026 | पृष्ठ- 8 | मूल्य : 3.00 रूपये

नेपाल बाढ़- 472 लोगों की मौत की पुष्टि, 1500 अभी भी लापता, 290 भारतीयों की तलाश जारी

काठमांडू। नेपाल-तिब्बत बॉर्डर पर बुधवार सुबह आई अचानक बाढ़ ने नेपाल के रसुवा समेत कई इलाकों में भारी तबाही मचा दी। बाढ़ और भूस्खलन से दोनों देशों में अब तक 472 लोगों की मौत हो चुकी है, जबकि 1500 से ज्यादा लोग अभी भी लापता हैं। इनमें करीब 290 भारतीय भी शामिल हैं। बाढ़ का पानी तिब्बत की तरफ से नेपाल में आया था और अब जिस झील में पानी जमा है, उसके दोबारा टूटने पर फिर बाढ़ आने का खतरा बना हुआ है। ट्रम्प ने नेपाल को हर संभव मदद देने का भरोसा दिया है। एनबीसी न्यूज के मुताबिक अमेरिकी राष्ट्रपति ने बताया कि उन्होंने नेपाल के अधिकारियों से बाढ़ से हुए नुकसान के बारे में जानकारी ली है। तबाही के आंकड़े- नेपाल में 469 लोगों की मौत की पुष्टि हुई है। 977 लोग अब भी लापता हैं। लापता लोगों में 517 विदेशी नागरिक, 45 नेपाली सेना के जवान और 41 नेपाल पुलिसकर्मी शामिल हैं। तिब्बत में-3 लोगों की मौत की पुष्टि हुई है। 558 लोग अब भी लापता हैं। लापता लोगों में 260 विदेशी नागरिक शामिल हैं। चीन ने झील के सर्वे के लिए इंजीनियर्स की टीम भेजी-चीन ने नेपाल सीमा के पास तिब्बत में बनी एक अस्थायी झील का सर्वे शुरू कर दिया है। आशंका है कि झील के टूटने से बाढ़ का नया खतरा पैदा हो सकता है। इसी को देखते हुए इंजीनियरों की टीम हवाई सर्वे और 3डी मॉडलिंग के जरिए हालात का आकलन कर रही है। नेपाल में आई बाढ़ के बाद गंडक नदी का जलस्तर बढ़ गया है। इससे बिहार के पुचहरिया गांव के बाबू टोला में बाढ़ और कटाव का खतरा बढ़ गया है। एक स्थानीय निवासी ने बताया, 'पानी का स्तर लगातार बढ़ रहा है। प्रशासन ने लोगों से ऊंची जगहों पर जाने को कहा है, लेकिन लोग अभी भी गांव में ही हैं।' नेपाल सरकार ने भारत, चीन, अमेरिका, ब्रिटेन समेत कई देशों की ओर से भेजी गई विदेशी रेस्क्यू टीमों की पेशकश ठुकरा दी है। सरकार का कहना है कि नेपाल की सेना और पुलिस खुद राहत-बचाव अभियान संभालने में सक्षम हैं। यह फैसला नेपाली सेना और पुलिस की सलाह के बाद लिया गया है। नेपाल के अधिकारियों के मुताबिक, 2015 के भूकंप के दौरान बड़ी संख्या में विदेशी रेस्क्यू टीमों के आने से बचाव अभियान के तालमेल में दिक्कतें आई थीं। इसी को देखते हुए इस बार विदेशी टीमों की जगह आर्थिक मदद लेने का फैसला किया गया है। भारत ने भी एनडीआरएफ भेजने की पेशकश की थी, जिसे नेपाल ने स्वीकार नहीं किया।**आगे की खबर पेज संख्या 07 पर...**

ट्रम्प ने कनाडा से जुड़ी झील का नाम बदला,'लेक ओंटारियो' अब 'लेक अमेरिका' कहलाएगा

वॉशिंगटन। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने गुरुवार को लेक ओंटारियो का नाम बदलकर 'लेक अमेरिका' करने के आदेश पर साइन किए। आदेश के मुताबिक, 30 दिनों में यह प्रक्रिया पूरी होगी और इसके बाद अमेरिका के सरकारी नक्शों व रिकॉर्ड में नया नाम इस्तेमाल किया जाएगा। ट्रम्प ने इस फैसले की तुलना मैक्सिको की खाड़ी का नाम बदलकर 'अमेरिका की खाड़ी' करने से की। उन्होंने मजाक में कहा कि अब अमेरिका के पास एक खाड़ी और एक झील है, शायद आगे अटलांटिक या प्रशांत महासागर का नाम बदलने के बारे में भी सोचना पड़े। वहीं, कनाडा के प्रधानमंत्री मार्क कार्नी ने लेक ओंटारियो का नाम बदलने के फैसले पर प्रतिक्रिया दी। उन्होंने कहा- हम जानते हैं अमेरिका नाम बदल रहा है, लेकिन कनाडाई भी जानते हैं कि हकीकत में इसका नाम लेक ओंटारियो ही है। पहले भी, अब भी और हमेशा। कनाडा इस झील को लेक ओंटारियो ही बुलाएगा। लेक ओंटारियो अमेरिका और कनाडा के बीच स्थित पांच बड़ी झीलों में से एक है। इसके एक तरफ न्यूयॉर्क और दूसरी तरफ कनाडा का ओंटारियो प्रांत है। दोनों देशों की सीमा भी इसी झील से होकर गुजरती है।ट्रम्प ने अपने आदेश में कहा कि लेक ओंटारियो अमेरिका की अर्थव्यवस्था और विरासत का अहम हिस्सा है। यह व्यापार, जहाजरानी, रक्षा, कृषि और ऊर्जा के लिए महत्वपूर्ण है। उन्होंने बताया कि ग्रेट लेक्स के संरक्षण पर अमेरिका ने पिछले 10 साल में करीब 4 अरब डॉलर यानी 38 हजार करोड़ रुपए खर्च किए हैं। अमेरिका और कनाडा के बीच व्यापार को लेकर तनाव-नाम बदलने का फैसला अमेरिका और कनाडा के बीच बढ़ते व्यापारिक तनाव के बीच आया है। हाल ही में अमेरिका ने कनाडा के करीब 20 अरब डॉलर यानी लगभग 1.7 लाख करोड़ रुपए के सामान पर 50फीसदी टैरिफ लगाने का फैसला किया है। इसके जवाब में कनाडा ने भी अमेरिकी सामान पर उतना ही टैरिफ लगाने का ऐलान किया। ट्रम्प ने कहा कि व्यापार के मामले में कनाडा से निपटना सबसे मुश्किल है। उन्होंने आरोप लगाया कि कनाडा अमेरिका के साथ ठीक व्यवहार नहीं करता और वह किसी भी हाल में यह स्वीकार नहीं कर सकते। लेक ओंटारियो के नाम पर पड़ा ओंटारियो प्रांत का नाम-लेक ओंटारियो का नाम यूरोपीय लोगों के अमेरिका पहुंचने से भी पहले से चला आ रहा है। यह नाम ह्यूरॉन समुदाय की भाषा के एक शब्द से निकला है, जिसका अर्थ 'चमकते पानी की झील' बताया जाता है। बाद में कनाडा के ओंटारियो प्रांत का नाम भी इसी झील के नाम पर रखा गया। हालांकि, नाम बदलने को लेकर एक अहम बात है।

तिब्बत में फिर झील फटी, लोगों से सुरक्षित जगह पर जाने को कहा, अब तक 478 मौतें, 1500 लापता

काठमांडू। नेपाल-तिब्बत सीमा के पास बनी एक और झील फट गई है। यह झील चोचेन नदी और पुरेपु सांगपो नदी के संगम के पास बनी थी। चीन ने इसके फटने की आशंका एक दिन पहले ही जताई थी। झील फटने के बाद पानी का स्तर बढ़ने लगा है। खतरे की वजह से के रसुवा जिले में रेस्क्यू ऑपरेशन 90 मिनट के लिए रोक दिया गया है। भोटेकोशी, त्रिशूली और नारायणी नदी के पास के कई गांव खाली कराए जा रहे हैं। लोगों और सुरक्षाकर्मियों को तुरंत सुरक्षित जगहों पर जाने को कहा गया है। इस बीच चीन ने भी तिब्बत में राहत और बचाव अभियान रोक दिया है और लेवल-4 अलर्ट जारी किया है। दोबारा बाढ़ आने के खतरे को देखते हुए यह कदम उठाया गया है। बाढ़ और भूस्खलन से दोनों देशों में अब तक 478 लोगों की मौत हो चुकी है, जबकि 1,500 से ज्यादा लोग लापता हैं। इनमें करीब 290 भारतीय भी शामिल हैं। तबाही के आंकड़े- नेपाल में:-475 लोगों की मौत की पुष्टि हुई है। 977 लोग अब भी लापता हैं। लापता लोगों में 517 विदेशी नागरिक, 45 नेपाली सेना के जवान और 41 नेपाल पुलिसकर्मी शामिल हैं। तिब्बत में- 3 लोगों की मौत की पुष्टि हुई है। 558 लोग अब भी लापता हैं। लापता लोगों में 260 विदेशी नागरिक शामिल हैं। बाढ़ के बाद 121 विदेशियों का रेस्कयू, इनमें भारत के 85 नागरिक- नेपाल पर्यटन बोर्ड के ताजा अपडेट के मुताबिक, भोटेकोशी बाढ़ के बाद अब तक 121 विदेशी नागरिकों को सुरक्षित निकाला गया है। इनमें 85 भारतीय, 16 चीनी, 9 दक्षिण कोरियाई, 2 अमेरिकी और 2 रूसी नागरिक शामिल हैं।

रेडियो खराबी से ट्रम्प का हेलिकॉप्टर विमान के करीब पहुंचा था, एटीएस को एक हफ्ते पहले से दिक्कत की जानकारी थी, फिर भी चूक हुई

वॉशिंगटन। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प का हेलिकॉप्टर मरीन वन और एक यात्री विमान के करीब पहुंचने की वजह सामने आई है। जांच के मुताबिक रेडियो संपर्क में आई खराबी के कारण एयर ट्रैफिक कंट्रोलर्स (एटीएस) को हेलिकॉप्टर की उड़ान से पहले मिलने वाली जरूरी चेतावनी नहीं मिल पाई। यह घटना 4 अगस्त को हुई थी। ट्रम्प को लेकर मरीन वन व्हाइट हाउस के पास से उड़ान भर रहा था, तभी रीगन नेशनल एयरपोर्ट से एक यात्री विमान को भी टेकऑफ की मंजूरी मिल गई। हेलिकॉप्टर और विमान कुछ देर के लिए काफी करीब आ गए, लेकिन पायलटों की सतर्कता से टकराव टल गया। जांच में यह भी सामने आया कि एयर ट्रैफिक कंट्रोलर्स को इस रेडियो खराबी की जानकारी एक हफ्ते पहले ही हो गई थी। इसके बावजूद घटना वाले दिन राष्ट्रपति की सुरक्षा में चूक हुई। व्हाइट हाउस में निर्माण के कारण रेडियो में खराबी आई- जांच में पता चला कि व्हाइट हाउस में चल रहे निर्माण के कारण मरीन वन के उड़ान भरने की जगह बदल दी गई थी। हेलिकॉप्टर ने द एलिप्स से उड़ान भरी थी। द एलिप्स और रीगन एयरपोर्ट के पास लगे रेडियो रिसीवर के बीच सीधा संपर्क ठीक नहीं था। इसी वजह से हेलिकॉप्टर की रेडियो कॉल कंट्रोल टावर तक सही तरीके से नहीं पहुंच पाई। एक हफ्ते पहले मीटिंग में दिक्कत पर चर्चा हुई थी-घटना से पहले 30 जुलाई को मरीन वन के पायलटों और एयर ट्रैफिक कंट्रोलर्स की बैठक हुई थी। इसमें तीन मिनट पहले दी जाने वाली फ्लाइट वॉर्निंग के कंट्रोल टावर तक नहीं पहुंचने की बात सामने आई थी। तब तय किया गया था कि रेडियो संपर्क न होने पर किसी दूसरे विमान या व्यक्ति के जरिए यह सूचना दी जाएगी। 4 अगस्त को पायलटों ने जॉइंट बेस एनाकोस्टिया-बोलिंग के जरिए भी कंट्रोल टावर तक संदेश पहुंचाने की कोशिश की। हालांकि, यह तरीका भी काम नहीं आया। कंट्रोलर्स को मरीन वन के उड़ान भरने की जानकारी नहीं मिली और इसी दौरान यात्री विमान को टेकऑफ की मंजूरी दे दी गई। ट्रम्प का हेलिकॉप्टर और विमान सिर्फ 1.3 किमी दूर थे- एनटीएसबी के शुरुआती आंकड़ों के मुताबिक, दोनों विमानों के बीच सबसे कम दूरी करीब 1.3 किलोमीटर थी। उनकी ऊंचाई में भी महज 250 फीट का अंतर रह गया था। यात्री विमान के टक्कर से बचाने वाले सिस्टम ने चेतावनी दी थी। मरीन वन के पायलटों ने भी विमान को देख लिया और कुछ देर रुक गए, जिससे दोनों अलग हो गए। एफएए के नियम के मुताबिक, ऐसे हालात में दो विमानों के बीच कम से कम 2.4 किलोमीटर की दूरी या ऊंचाई में 500 फीट का अंतर होना जरूरी है। अब रेडियो सिस्टम ठीक किया गया-घटना के बाद एफएए की तकनीकी टीम ने रेडियो सिस्टम की जांच की। रिसीवर को रिहायशी इलाके से हटाकर रीगन एयरपोर्ट के कंट्रोल टावर के ऊपर लगा दिया गया। इसके बाद किए गए परीक्षणों में रेडियो संपर्क ठीक पाया गया। यह घटना पिछले साल के रीगन एयरपोर्ट हादसे के बाद और गंभीर मानी जा रही है। 29 जनवरी 2025 को एक यात्री विमान और अमेरिकी सेना के ब्लैक हॉक हेलिकॉप्टर की टक्कर में 67 लोगों की मौत हुई थी। इसके बाद एयरपोर्ट के आसपास हेलिकॉप्टर और विमानों की आवाजाही को लेकर सुरक्षा नियम कड़े किए गए थे।

ममता बोलीं- बीजेपी ने चुनाव 'हाईजैक' किया,वोट लूटने के लिए एसआईआर का इस्तेमाल अब बंगाल पुलिस के जरिए डर का माहौल बनाया जा रहा

कोलकाता। पश्चिम बंगाल की पूर्व सीएम ममता बनर्जी ने शुक्रवार को कहा कि भाजपा ने चुनाव 'हाईजैक' करने के लिए चुनाव आयोग का इस्तेमाल किया।वोटर लिस्ट से लाखों नाम गैर-कानूनी तरीके से हटाकर 'वोट लूटने' के लिए एसआईआर का इस्तेमाल किया गया। ममता ने आगे कहा- भाजपा बंगाल में बांटने वाली राजनीति कर रही है और डर फैलाने के लिए पुलिस का इस्तेमाल कर रही है। तृणमूल छात्र परिषद का आज स्थापना दिवस है। ममता सहित पार्टी के सीनियर नेताओं ने कोलकाता में एक इवेंट में छात्रों को संबोधित किया। ममता की स्पीच, बड़ी बातें; कहा- भाजपा ने पुलिस को राक्षस बना दिया

1. भाजपा सरकार में पुलिस का खराब रवैयाः टीएमसी के शासन में पुलिस का मानवीय चेहरा था, लेकिन बीजेपी ने पुलिस को राक्षसी संस्था में बदल दिया। ममता ने कहा कि वह अपने समर्थकों के खिलाफ 'पुलिस की ज्यादती' रोकेंगी। उन्होंने कहा कि यह रक्षाबंधन पर उनका संकल्प है। 2. बंगाल में भाजपा की विभाजनकारी नीतिः ममता ने बीजेपी पर बंगाल में विभाजनकारी राजनीति करने और पुलिस के जरिए लोगों में डर फैलाने का आरोप लगाया।

नेपाल में भूकंप, 3 दिन बाद फिर बाढ़ की चेतावनी, अब तक 389 मौतें, 84 भारतीयों का रेस्क्यू, 290 लापता

काठमांडू। नेपाल में गुरुवार रात 9:18 बजे 3.2 तीव्रता का भूकंप आया। नेशनल सेंटर फॉर सीस्मोलॉजी के मुताबिक, इसका केंद्र 10 किमी की गहराई पर था। इसी के साथ नेपाल में फिर बाढ़ का खतरा मंडरा रहा है। चीन ने बताया है कि रसुवागढ़ी बॉर्डर से 18 किमी ऊपर तिब्बत के ल्हेंदे नदी में एक नई बैरियर झील बन गई है। झील करीब 0.11 वर्ग किमी में फैली है। इसमें करीब करीब 200 करोड़ लीटर पानी जमा है। अगले 3 दिनों में 300 करोड़ लीटर और पानी आ सकता है। झील का बांध टूटा तो नेपाल के भोटेकोशी और त्रिशूली नदी में फिर अचानक बाढ़ आ सकती है। बुधवार को नेपाल-तिब्बत बॉर्डर के पास ल्हेंदे नदी में ग्लेशियर टूटने से बाढ़ ने भारी तबाही मचाई। नेपाल में बाढ़ से अब तक 389 लोगों की मौत हो चुकी है। करीब 1500 लोग लापता हैं। इनमें 290 भारतीय नागरिक हैं। वहीं, अब तक 84 भारतीयों को सुरक्षित बचाया गया है। इनमें त्रिशूली-1 हाइड्रोपावर प्रोजेक्ट के 63 कर्मचारी और तमिलनाडु के 21 लोग शामिल हैं। लैंडस्लाइड से 5.2 तीव्रता के भूकंप जितना झटका-बुधवार सुबह 8:37 बजे नेपाल-चीन सीमा के पास तेज झटके महसूस किए गए। शुरुआत में अमेरिकी भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण (यूएसजीएस) ने इसे 4.4 तीव्रता का भूकंप बताया था। लेकिन बाद में पता चला कि पहाड़ का एक बड़ा हिस्सा बर्फ और चट्टानों के साथ ल्हेंदे खोला नदी में गिरा था। ल्हेंदे खोला, भोटेकोशी नदी की सहायक नदी है। भोटेकोशी चीन से निकलकर नेपाल में प्रवेश करती है। बाद में यूएसजीएस ने भी स्पष्ट किया कि 5.2 तीव्रता के भूकंप जैसा यह झटका लैंडस्लाइड के कारण पैदा हुआ था। पूर्व डीआरडीओ चेयरमैन जी. सतीश रेड्डी समेत 35 कैलाश यात्री सुरक्षित-नेपाल में बाढ़ के बीच हैदराबाद से कैलाश मानसरोवर यात्रा पर गया 45 सदस्यीय दल सुरक्षित है। यह यात्रा एमएसआर चैरिटेबल ट्रस्ट के तहत आयोजित की गई थी। दल में 35 यात्री और 10 सपोर्ट स्टाफ शामिल हैं। इसमें पूर्व डीआरडीओ चेयरमैन जी. सतीश रेड्डी और उनका परिवार भी शामिल है। ट्रस्ट ने बताया कि सभी ने कैलाश की परिक्रमा पूरी कर ली है और अब वापस लौट रहे हैं। जिस कीरुंग रास्ते से उन्हें लौटना था, वहां बाढ़ आने के बाद चीनी और तिब्बती अधिकारियों ने उनका रास्ता बदल दिया है। अब दल दूसरे रास्ते से नेपाल लौटेगा। यात्री गुरुवार को सागा में रुकेंगे और शुक्रवार को न्यालम पहुंचेंगे। वहां इमिग्रेशन की प्रक्रिया पूरी करने के बाद काठमांडू जाएंगे और फिर हैदराबाद लौटेंगे। सतीश रेड्डी ने भी फोन पर बताया कि सभी लोग सुरक्षित हैं। उन्होंने कहा कि बाढ़ के कारण वापसी का नया रास्ता तय किया जा रहा है और उम्मीद है कि वे 30 अगस्त तक दिल्ली पहुंच जाएंगे।

पहली बार सीएम विजय तय सीट छोड़कर मंत्रियों के बीच बैठे,तमिलनाडु विधानसभा में ऐसा पहली बार हुआ

चेन्नई। तमिलनाडु विधानसभा में गुरुवार को असामान्य नजारा देखने को मिला। मुख्यमंत्री सी. जोसेफ विजय अपनी निर्धारित सीट छोड़कर मंत्रियों के बीच जाकर बैठ गए।रिपोर्ट्स के मुताबिक, विधानसभा के इतिहास में यह पहली बार है कि जब किसी मुख्यमंत्री ने अपनी तय सीट छोड़कर मंत्री के लिए निर्धारित सीट पर बैठकर कार्यवाही में हिस्सा लिया। वे सदन के नेता और मंत्री केए सेंगोट्टैयन और मंत्री आधव अर्जुन के बीच जाकर बैठ गए। मुख्यमंत्री के लिए विधानसभा में स्पीकर की सीट के पास अलग सीट निर्धारित होती है। वहीं मंत्री सामने की कतार में बैठते हैं। उनकी सीटें आमतौर पर वरिष्ठता के आधार पर तय होती हैं। विधायक और मंत्री कभी-कभी आपसी बातचीत के लिए अपनी सीट बदल लेते हैं, लेकिन मुख्यमंत्री का अपनी निर्धारित सीट छोड़कर मंत्री की सीट पर जाकर बैठना सामान्य नहीं था। अधिकारियों की गैर मौजूदगी पर विपक्ष ने सवाल उठाए- विजय के सीट बदलने से पहले विधानसभा में महत्वपूर्ण मुद्दों पर चर्चा के दौरान वरिष्ठ अधिकारियों की गैर मौजूदगी को लेकर सवाल उठा। विपक्ष के नेता उदयनिधि स्टालिन ने पूछा कि विभागीय सचिव चर्चा के दौरान सदन में मौजूद क्यों नहीं हैं।

क्वेटा में 200 साल पुराना गुरुद्वारा गिराया,शॉपिंग मॉल बनाया जा रहा, बीजेपी बोली- सिखों की विरासत खत्म की जा रही

इस्लामाबाद/क्वेटा। पाकिस्तान के बलूचिस्तान की राजधानी क्वेटा में करीब 200 साल पुराने ऐतिहासिक 'श्री गुरु सिंह सभा गुरुद्वारा' को गिरा दिया गया। अब इस जगह पर एक मॉल का निर्माण किया जा रहा है। बलूचिस्तान गुरुद्वारा सिंह सभा के सदस्य सरदार जसबीर सिंह के अनुसार, पूरा सिख समाज इसका विरोध कर रहा है, लेकिन अभी तक सरकार कोई एक्शन नहीं ले रही। उन्होंने बताया कि बलूचिस्तान में कभी 12 गुरुद्वारे थे, जिनमें से अब सिर्फ 2 बचे हैं।गुरुद्वारे को गिराए जाने पर भारत में भी कड़ा विरोध हो रहा है। भाजपा के नेशनल स्पोक्सपर्सन आरपी सिंह ने कहा कि ये पाकिस्तान में सिखों की विरासत खत्म करने की कोशिश है। अकाल तख्त साहिब को पाकिस्तान सरकार के सामने मामला उठाना चाहिए और स्वतंत्र जांच होनी चाहिए। 200 साल पुराने गुरुद्वारे में खुला था स्कूल-क्वेटा के आर्चर रोड स्थित श्री गुरु सिंह सभा गुरुद्वारा परिसर में बाद में सेंट गैब्रिएल स्कूल संचालित हो रहा था। सिख समुदाय के नेता सरदार जसबीर सिंह के मुताबिक, अब उसी गुरुद्वारे को ढहाकर यहां शॉपिंग प्लाजा का निर्माण कराया जा रहा है। मामला बलूचिस्तान हाई कोर्ट तक पहुंचा, लेकिन कोर्ट ने फिलहाल निर्माण रोकने से इनकार कर दिया है। निजी बिल्डर को जमीन बेची गई- सिख समुदाय के मुताबिक, यह जमीन श्री गुरु सिंह सभा से जुड़ी संपत्ति थी। आरोप है कि इवैक्यूई ट्रस्ट प्रॉपर्टी बोर्ड (ईटीपीबी) ने इसे एक निजी बिल्डर को बेच दिया। अब सवाल उठ रहा है कि ईटीपीबी को इस धार्मिक संपत्ति को बेचने का अधिकार किस आधार पर मिला और जमीन की बिक्री की प्रक्रिया क्या थी? इस पर पाकिस्तान सरकार या ईटीपीबी की ओर से आधिकारिक जवाब सामने आना बाकी है। 4 पॉइंट्स में पढ़ें क्या बोले आरपी सिंह- मॉल का निर्माण तुरंत रोकने की मांगः भाजपा नेशनल स्पोक्सपर्सन आरपी सिंह ने गुरुद्वारा साहिब की जमीन पर हो रहे मॉल के निर्माण को तत्काल रोकने की मांग की। उन्होंने कहा कि ऐतिहासिक गुरुद्वारा परिसर का पुनर्निर्माण और संरक्षण सुनिश्चित किया जाना चाहिए। साथ ही बलूचिस्तान ही नहीं, पूरे पाकिस्तान में बचे सिख धार्मिक स्थलों और उनकी संपत्तियों की सुरक्षा की मांग की। गुरुद्वारा गिराने वालों पर एक्शन होः आरपी सिंह ने गुरुद्वारा श्री गुरु सिंह सभा साहिब को गिराए जाने की निंदा करते हुए इसके लिए जिम्मेदार लोगों पर कार्रवाई की मांग की। उन्होंने कहा कि धार्मिक स्थल को हटाकर वहां व्यावसायिक निर्माण किया जाना गंभीर मामला है।

उन्होंने गुरुद्वारा विध्वंस की पूरी और स्वतंत्र जांच कराने की भी मांग उठाई। अकाल तख्त साहिब से मामला उठाने की अपीलः आरपी सिंह ने श्री अकाल तख्त साहिब के जत्थेदार ज्ञानी कुलदीप सिंह गड़गज्ज से मामले का तत्काल संज्ञान लेने की अपील की। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान में सिख धार्मिक विरासत से जुड़े मामलों पर स्पष्ट और कड़ा रुख सामने आना चाहिए। उनका कहना है कि ऐतिहासिक गुरुद्वारों के संरक्षण को लेकर गंभीरता से आवाज उठाने की जरूरत है। यह सिर्फ इमारत नहीं, सिख विरासत का सवालः आरपी सिंह ने कहा कि मामला सिर्फ एक इमारत या जमीन तक सीमित नहीं है। गुरुद्वारे सिख इतिहास, धार्मिक परंपरा और गुरु साहिबान से जुड़ी स्मृतियों के केंद्र हैं।

दबिश के दौरान 36 लीटर शराब व 150 किलो लहन बरामद

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। गुरूवार को कच्ची शराब बनाने के अड्डों एवं संदिग्ध घरों पर दबिश दी गई।

जिलाधिकारी सरनीत कौर ब्रोका के आदेशानुसार जनपद में अवैध शराब के निर्माण, बिक्री एवं तस्करी के विरुद्ध चलाए जा रहे प्रवर्तन अभियान के अंतर्गत आबकारी निरीक्षक क्षेत्र-2 रोबिन आर्य मय हमराह टीम द्वारा विभिन्न स्थानों पर दबिश की कार्रवाई की गई। आबकारी टीम द्वारा महराजगंज तहसील के थाना बछरावां अंतर्गत संदिग्ध ग्राम पश्चिम गाँव, शेरा बरौला एवं बद्री प्रसाद का पुरवा में अवैध कार्रवाई के दौरान कुल 36 लीटर अवैध कच्ची शराब एवं 150 किलोग्राम लहन बरामद किया गया। बरामद लहन को मौके पर ही नष्ट कर दिया गया।

प्रकरण में आबकारी अधिनियम की सुसंगत धाराओं के अंतर्गत कुल 02 अभियोग पंजीकृत किए गए। आबकारी विभाग द्वारा अवैध शराब के निर्माण, बिक्री एवं तस्करी के विरुद्ध अभियान लगातार जारी रहेगा।

राष्ट्रीय खेल दिवस पर 29 से 31 अगस्त तक होंगी विभिन्न खेल प्रतियोगिताएं

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। क्रीड़ाधिकारी धीरेंद्र कुमार पुरुषोत्तम ने बताया कि मेजर ध्यानचंद जी के जन्मदिवस (29 अगस्त) के उपलक्ष्य में राष्ट्रीय खेल दिवस 2026 के अवसर पर जिला खेल कार्यालय, पं. मोतीलाल नेहरू स्टेडियम, रायबरेली में 29 से 31 अगस्त 2026 तक विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाएगा। 29 अगस्त को 14 वर्षीय बालक हॉकी प्रतियोगिता, 30 अगस्त को बालक जूनियर वर्ग कबड्डी प्रतियोगिता तथा 31 अगस्त को बालक जूनियर वर्ग फुटबॉल प्रतियोगिता आयोजित होगी। प्रतियोगिताओं में प्रतिभाग करने के इच्छुक बालक कार्यालय दिवस में निःशुल्क प्रवेश करा सकते हैं। प्रतियोगिताओं से संबंधित अधिक जानकारी के लिए जिला खेल कार्यालय, रायबरेली में संपर्क किया जा सकता है।

घर का आंगन 25 फीट धस गया जिसमे गिरकर लड़की की हुई मौत, 7 घंटे फंसी रही, 60 जवानों ने गड्ढा खोदकर निकाला, बोरवेल के ऊपर फर्श बना दी थी

कानपूर। कानपुर में घर का आंगन अचानक धंसने से 25 फीट गहरे गड्ढे में गिरी लड़की को 7 घंटे के ऑपरेशन के बाद बाहर निकाल लिया गया। लेकिन अस्पताल में उसे डॉक्टरों ने मृत घोषित कर दिया। हादसा शुक्रवार सुबह 6:40 बजे हुआ। एसडीआरएफ दोनों रेस्क्यू में लग चुकी थी। जेसीबी से करीब 20 फीट गड्ढा खोदा गया, लेकिन यशी की सटीक लोकेशन नहीं मिल रही थी। तब पोकलेन मंगाई गई। इससे 10 फीट और गहरा गड्ढा खोदा गया। दोपहर 2.20 बजे 30 फीट की खुदाई के बाद

रक्षाबंधन पर 18 साल की यशी सविता नहाकर बाथरूम से बाहर निकली थी। जैसे ही उसने अपना एक कदम आंगन की तरफ बढ़ाया, नीचे की जमीन धंस गई। यशी नीचे मौजूद बोरिंग में समा गई। उसे संभलने का मौका तक नहीं मिला। हादसे के वक्त घर में सिर्फ बड़ी बहन थी। मां-बाप घर से 200 मीटर दूर भैंस बांधने गए थे। बहन ने देखा तो उसने पहले रस्सी डालकर यशी को निकालने की कोशिश की। इतनी देर में मिट्?टी और धंस गई और लड़की नीचे अंदर चली गई। बहन चीखते हुए घर से बाहर भागी। मां-बाप और पड़ोसियों को बुलाया। तुरंत पुलिस को सूचना दी गई। 35 मिनट बाद पुलिस आई, लेकिन वह बेबस दिखी। घर से 22 किमी दूर जाजमऊ से फायरब्रिगेड को बुलाया गया। तब तक डेढ़ घंटे बीत चुके थे। 8 बजे फायरकर्मी मौके पर आए। उन्होंने उसी गड्?ढे को फावड़े से खोदना शुरू किया, जिसमें यशी गिरी थी। मिट्?टी धंसकर गड्?ढे में गिर रही थी, इसलिए रेस्क्यू रोक दिया गया। फिर जेसीबी मंगवाई गई और बरामदे को तोड़ा गया। हादसा स्थल से 10 फीट दूर जेसीबी से गड्?ढा खोदा गया। 10 बजे तक एनडीआरएफ और 60 जवानों की रेस्क्यू टीम लड़की तक पहुंच पाई। उसे जब बाहर निकाला गया। वह अचेत थी। मामला जिला मुख्यालय से करीब 35 किमी दूर महाराजपुर थाना क्षेत्र के पुरवामीर गांव का है। यशी, पिता विनोद, मां रेखा, बड़ी बहन ऋचा और भाई अमित उर्फ भास्कर के साथ रहती थी। यशी सबसे छोटी थी। दो बहनों रूपा और अनुपमा की शादी हो चुकी है। भाई अमित लखनऊ में एक मेडिकल कंपनी में जॉब करता है। पिता बंटाई पर खेती करते हैं। तीन साल पहले बोरिंग कराई, पानी नहीं निकला तो ऊपर फर्श बनवा दी-घरवालों ने बताया, करीब तीन साल पहले 630 स्क्वॉयर फीट में घर बनाया गया, जो 18 फीट चौड़ा और 35 फीट लंबा है।

घर की शुरुआत में एक बरामदा है। फिर आंगन और आखिर में कमरा है। आंगन से सटा बाथरूम है। घर निर्माण के समय आंगन में बोरिंग कराई गई थी, लेकिन पानी नहीं निकलने के कारण उसे छोड़ दिया गया और दूसरी जगह नई बोरिंग कराई गई। उसी पुरानी बोरिंग के ऊपर फर्श बना दी गई थी। लगातार बारिश के कारण जमीन कमजोर हो गई थी। अब जमीन धंसने से यह हादसा हो गया।

जिला व्यापार बन्धु की बैठक सम्पन्न,व्यापारियों की समस्याओं के त्वरित निस्तारण के दिए गए निर्देश

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। गुरूवार को

जिलाधिकारी सरनीत कौर ब्रोका के निर्देशानुसार अपर जिलाधिकारी (प्रशासन) सिद्धार्थ की अध्यक्षता में जिला व्यापार बन्धु की बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में व्यापारियों से संबंधित विभिन्न समस्याओं एवं विभागीय प्रकरणों पर विस्तार से चर्चा की गई तथा संबंधित अधिकारियों को समस्याओं का प्राथमिकता के आधार पर निस्तारण सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए। बैठक में व्यापारियों द्वारा विभिन्न विभागों से संबंधित समस्याएं एवं सुझाव प्रस्तुत किए गए। अपर जिलाधिकारी ने संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया कि व्यापारियों की समस्याओं को गंभीरता से लेते हुए नियमानुसार प्रभावी एवं समयबद्ध कार्यवाही सुनिश्चित की जाए। उन्होंने कहा कि व्यापारियों को किसी प्रकार की अनावश्यक कठिनाई न हो तथा शासन की मंशा के अनुरूप व्यापारिक गतिविधियों के लिए बेहतर एवं सुगम वातावरण उपलब्ध कराया जाए। बैठक में नगर मजिस्ट्रेट राम अवतार, उपायुक्त राज्यकर परमहंश श्रीवास्तव, अपर मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. अरविन्द कुमार, अधिशासी अधिकारी नगर पालिका स्वर्ण सिंह सहित संबंधित विभागों के अधिकारी एवं व्यापार बन्धु के प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

बाढ़ से बचाव एवं राहत उपायों को लेकर ग्रामीणों को किया गया जागरूक,ग्राम हसनपुर एवं कोड़ारी मजरे ऐमापुर में बाढ़ राहत चौपाल आयोजित की गई

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। गुरूवार को

जिलाधिकारी सरनीत कौर ब्रोका के निर्देशानुसार जनपद में संभावित बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में ग्रामीणों को जागरूक करने के उद्देश्य से बाढ़ राहत चौपालों का आयोजन किया गया। तहसीलदार महराजगंज मंजुला मिश्रा की अध्यक्षता में ब्लॉक महराजगंज के ग्राम हसनपुर में तथा शिवगढ़ ब्लॉक के कोडारी मजरे ऐमापुर में नायब तहसीलदार की अध्यक्षता में बाढ़ राहत चौपाल आयोजित की गई। चौपाल में राजस्व निरीक्षक, क्षेत्रीय लेखपाल, पशु चिकित्सा विभाग, चिकित्सा विभाग सहित संबंधित विभागों के अधिकारी-कर्मचारी उपस्थित रहे। चौपाल के दौरान ग्रामीणों को बाढ़ से बचाव, डूबने की घटनाओं की रोकथाम, बाढ़ के दौरान उत्पन्न होने वाली विभिन्न समस्याओं, आवश्यक सुरक्षा उपायों, सतर्कता एवं राहत व्यवस्था के संबंध में विस्तार से जागरूक किया गया। अधिकारियों ने ग्रामीणों को आपदा की स्थिति में घबराने के बजाय सतर्कता बरतने तथा प्रशासन द्वारा जारी दिशा-निर्देशों का पालन करने की अपील की। ग्रामीणों को विशेष रूप से बच्चों को नदी, नालों एवं जलभराव वाले क्षेत्रों से दूर रखने के लिए जागरूक किया गया। साथ ही किसी भी आपात स्थिति में तत्काल संबंधित अधिकारियों एवं आपातकालीन सेवाओं से सहायता लेने की अपील की गई। चौपाल के माध्यम से ग्रामीणों को प्रशासन द्वारा बाढ़ से निपटने के लिए किए जा रहे राहत एवं बचाव कार्यों की जानकारी भी दी गई तथा उनकी समस्याओं एवं आवश्यकताओं को सुना गया।

42वीं वाहिनी पीएसी नैनी, प्रयागराज में तीन दिवसीय राष्ट्रीय खेल दिवस उत्सव का भव्य शुभारंभ

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

प्रयागराज। सेनानायक श्री राजेश कुमार श्रीवास्तव (आई0पी0एस0) के कुशल निर्देशन में 42वीं वाहिनी पीएसी नैनी, प्रयागराज में हॉकी के महान जादूगर मेजर ध्यानचंद जी की जयंती (राष्ट्रीय खेल दिवस) के पावन अवसर पर तीन दिवसीय खेल एवं फिटनेस संबंधी गतिविधियों का भव्य शुभारंभ किया गया। 'खेलेगा भारत, जीतेगा भारत' विषय पर आधारित यह विशेष आयोजन दिनांक 28.08.2026 से 30.08.2026 तक संचालित रहेगा।इस गरिमामयी कार्यक्रम की शुरुआत एक घंटा खेल के मैदान में अभियान के अंतर्गत सामूहिक खेल गतिविधियां की गई, जिसमें सभी के लिए विकास को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन हुआ। इनमें 100 मीटर तथा 400 मीटर दौड़, वॉलीबॉल, शतरंज, टेबल टेनिस और पास द बॉल् जैसे रोचक खेल शामिल रहे। सभी प्रतिभागियों ने पूरे उत्साह, ऊर्जा और उत्कृष्ट खेल भावना के साथ मैदान पर अपना हुनर दिखाया। उपस्थित सभी जवानों और परिवारजनों ने इन रोमांचक मुकाबलों का भरपूर आनंद उठाया।इस तीन दिवसीय आयोजन का मुख्य उद्देश्य जवानों तथा उनके परिवारों में खेल भावना, शारीरिक फिटनेस, उत्तम स्वास्थ्य और आपसी सौहार्द व भाई-चारे को बढ़ावा देना है।

कराई गईं। इसके पश्चात वाहिनी के जवानों एवं फैमिली लाइन के बच्चों के शारीरिक व मानसिक

इसके साथ ही, इन खेल प्रतियोगिताओं के माध्यम से हॉकी के जादूगर मेजर ध्यानचंद जी एवं देश के अन्य महान खिलाड़ियों को डिजिटल श्रद्धांजलि भी अर्पित की गई। उद्घाटन के अवसर पर वाहिनी के समस्त अधिकारी, कर्मचारी एवं उनके परिवारजन भारी संख्या में उपस्थित रहे।

डीएम की अध्यक्षता में सीएम डैशबोर्ड की समीक्षा बैठक सम्पन्न हुई

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। गुरूवार को

जिलाधिकारी सरनीत कौर ब्रोका की अध्यक्षता में सीएम डैशबोर्ड के अंतर्गत राजस्व एवं विकास कार्यों की समीक्षा बैठक कलेक्ट्रेट सभागार में सम्पन्न हुई। बैठक में जिलाधिकारी ने विभिन्न विभागों की प्रगति की समीक्षा करते हुए संबंधित अधिकारियों को निर्धारित लक्ष्यों एवं प्राथमिकताओं के अनुरूप कार्यों में तेजी लाने तथा योजनाओं का लाभ पात्र लाभार्थियों तक समय से पहुंचाने के निर्देश दिए। प्रधानमंत्री आवास योजना (शहरी) की समीक्षा के दौरान जिलाधिकारी ने निर्देश दिए कि आवासों के सत्यापन कार्य को प्राथमिकता के आधार पर शीघ्र पूर्ण कराया जाए, जिससे पात्र लाभार्थियों को योजना का लाभ समय से उपलब्ध कराया जा सके। आईजीआरएस की समीक्षा करते हुए जिलाधिकारी ने निर्देशित किया कि जनशिकायतों का निर्धारित समय-सीमा के भीतर समयबद्ध एवं गुणवत्तापूर्ण निस्तारण सुनिश्चित किया जाए। किसी भी दशा में समय सीमा के उपरांत प्रकरण लंबित न रहे। उन्होंने अधिकारियों को शिकायतों के निस्तारण की गुणवत्ता पर विशेष ध्यान देने के निर्देश दिए। इसी प्रकार लंबित वादों की समीक्षा करते हुए जिलाधिकारी ने संबंधित अधिकारियों को अधिक से अधिक वादों का प्राथमिकता के आधार पर निस्तारण सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि लंबित प्रकरणों के निस्तारण में अनावश्यक विलंब न हो तथा विभागीय कार्यों की नियमित रूप से समीक्षा करते हुए प्रगति में अपेक्षित सुधार लाया जाए। जल जीवन मिशन की समीक्षा करते हुवे निर्देश दिए गए कि हाउस होल्ड कनेक्शन के कार्य में तेजी लाये, शत प्रतिशत घरों को कवर कर जलापूर्ति सुनिश्चित कराई जाए, इसके साथ ही सड़कों को भी प्राथमिकता से रेस्टोरेशन का कार्य कराया जाए। जिलाधिकारी ने सभी संबंधित अधिकारियों को सीएम डैशबोर्ड के विभिन्न संकेतकों में जनपद की स्थिति बेहतर करने के लिए माह के अंत तक प्रभावी कार्ययोजना बनाकर कार्य करने तथा शासन की प्राथमिकता वाली योजनाओं एवं कार्यक्रमों का समयबद्ध क्रियान्वयन सुनिश्चित करने के निर्देश दिए।

बैठक में मुख्य विकास अधिकारी अंजुलता, अपर जिलाधिकारी (प्रशासन) सिद्धार्थ, उपायुक्त श्रम रोजगार प्रमोद सिंह, परियोजना निदेशक डीआरडीए मुनेश चन्द्र, उप जिलाधिकारी सदर गौतम सिंह सहित संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे।

रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएं

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) मैहर। भाई-बहन के अटूट प्रेम, विश्वास और स्नेह का यह पावन पर्व आपके जीवन में खुशियां, सुख, शांति और समृद्धि लेकर आए।ईश्वर से प्रार्थना है कि भाई-बहन का यह पवित्र रिश्ता सदैव प्रेम और विश्वास से मजबूत बना रहे। समस्त देशवासियों एवं क्षेत्रवासियों को रक्षाबंधन पर्व की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

योग शिविर में गूंजी रक्षाबंधन की खुशियां, बहन शिवांशी ने बांधी राखी,मातृभूमि सेवा मिशन ने दिया सामाजिक एकता, प्रेम और सौहार्द का संदेश

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। मातृभूमि सेवा मिशन रायबरेली इकाई की ओर से बांधना कार्यक्रम का विशेष आकर्षण रहा। इस दौरान उपस्थित लोगों ने एक-दूसरे के परिवार तक सीमित नहीं होते। प्रेम, सम्मान और अपनत्व से पूरा समाज एक परिवार बन सकता है। सामाजिक कुरीतियों को समाप्त कर आपसी सौहार्द और एकता को मजबूत करना ही इस पवित्र पर्व की सच्ची भावना है।' उन्होंने कहा कि मातृभूमि सेवा मिशन निरंतर ऐसे सामाजिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित करता है, जिनसे समाज में एकता, सद्भाव, सेवा और मानवता की भावना मजबूत हो। रक्षाबंधन का पवित्र सूत्र समाज को आपसी प्रेम और विश्वास से जोड़ने का संदेश देता है। कार्यक्रम में मुख्य योग शिक्षक अनुज शर्मा, सहयोगी शिक्षक सचिन पटेल, कोषाध्यक्ष राकेश, अनुराधा, अरविंद, केके, रश्मि पाण्डेय, सत्येंद्र सहित बड़ी संख्या में योग साधक मौजूद रहे। सभी ने मिलकर हर्ष और उल्लास के साथ रक्षाबंधन का पर्व मनाया और सामाजिक एकता व सौहार्द को मजबूत करने का संकल्प लिया।

शहीद स्मारक प्रांगण में संचालित दैनिक निःशुल्क योग शिविर में रक्षाबंधन का पर्व हर्ष और उल्लास के साथ मनाया गया। योगाभ्यास के उपरांत बहन शिवांशी पांडे ने सभी योग साधकों को राखी बांधकर भाई-बहन के पवित्र प्रेम, विश्वास और सामाजिक सौहार्द का संदेश दिया। बहन शिवांशी पांडे मिशन के योग शिविर में नियमित रूप से योगाभ्यास भी कराती हैं। रक्षाबंधन के अवसर पर उनके द्वारा सभी योग साधकों को राखी प्रति सम्मान, अपनत्व और भाईचारे की भावना को मजबूत करने का संकल्प लिया। मिशन के महामंत्री ने कहा कि रक्षाबंधन केवल भाई-बहन के प्रेम का पर्व नहीं, बल्कि आपसी विश्वास, सम्मान और सामाजिक एकता का प्रतीक है। ऐसे आयोजन समाज में व्याप्त कुरीतियों और भेदभाव को दूर कर प्रेम, सौहार्द एवं भाईचारे की भावना को मजबूत करते हैं। संयोजक प्रदीप पांडे ने कहा, 'रक्षाबंधन हमें यह संदेश देता है कि रिश्ते केवल

लखीमपुर खीरी में 730 दिन से बेघर 37 परिवार,बाढ़ पीड़ितों को मुआवजा मिला, मगर रहने के लिए जमीन नहीं

लखीमपुर खीरी। लखीमपुर खीरी में निघासन तहसील क्षेत्र के 37 परिवार 730 दिनों से बेघर हैं। 26 गांवों के करीब 35 हजार की आबादी पर हर साल की तरह इस बार भी बाढ़ का खतरा मंडरा रहा है। सबसे ज्यादा जसनगर और नया पिंड गांव के कई घर प्रभावित हैं, वहीं दोनों गांव के अब तक 2 घर कट चुके हैं। 2 साल पहले इन गांवों के 37 घर नदी में समा गए थे। अभी तक उन बाढ़ पीड़ितों को रहने के लिए जमीन नहीं मिल पाई हैं। कटान से विस्थापित हुए 37 परिवार दो साल बाद भी झुग्गियों में रहकर गुजर बसर कर रहे हैं। दो साल से बेघर लोगों की हकीकत जानने दैनिक भास्कर टीम इन दोनों गांवों में पहुंची। बातचीत का लहजा सुनने के बाद एक बार फिर ग्रामीणों को लगा कि प्रशासनिक टीम शायद मदद के लिए आई है। हकीकत से परे दुर्व्यवस्थाओं के बीच रह रहे लोगों के हाथ अपने आप जुड़ गए। इसके बाद जो संवाद शुरू हुआ, उसे सुनकर उनके दुख का अहसास हुआ। हालात यह थे कि कई लोगों ने हाथ जोड़कर रोते हुए कहा- साहब किसी तरह रहने का इंतजाम करा दें। उनकी अंगुलियां कांप रही थी और होठों से शब्द बड़ी मुश्किल से बाहर आ रहे थे। शायद यह महीनों से गुहार लगाते-लगाते थक गए थे। आंसू देखकर मन द्रवित हुआ, लेकिन भास्कर टीम ने अपने सवालों के बीच वहां की हकीकत जानी। जो सच सामने आया वो प्रशासनिक व्यवस्था में छेद ही छेद दिखा रहे थे। मुआवजे के अलावा इन्हें आज तक वो नहीं मिला, जिसकी उन्हें सबसे ज्यादा जरूरत थी। आशियानाष्ठ शायद धरती पर हर इंसान के लिए यह पहली प्राथमिकता होती है। गांव के किनारे झुग्गी बनाकर रह रहे लोग-निघासन के 26 गांव मोहाना नदी के सीधे प्रभाव में आते हैं। इन 26 गांवों में दो गांव नया पिंड और जसनगर नदी के सबसे करीब बसा है। साल 2024 में नदी का जलस्तर बढ़ने से दोनों गांव भीषण कटान की जद में आ गए।

बाढ़ आने से नया पिंड के 28 घर और जसनगर के 9 घर नदी की धारा में समा गए। साथ ही परिवारों की कई एकड़ कृषि योग्य भूमि भी समाप्त हो गई। तबाही के बाद इन 37 परिवारों के कुछ लोग इधर-उधर गांव किनारे बस गए।

करीब 28 से 30 परिवार के लोग अभी भी वहीं गांव किनारे झुग्गी बनाकर रह रहे हैं। इन सभी परिवारों को मकान कटने के बाद प्रशासन ने 1 लाख 20 हजार मुआवजा दिया था।

बच्चियों ने योगी को बांधी राखी,जेल में बहनों को देखकर रोने लगे भाई, मां ने पोछे आंसू; बसों में खिड़की से चढ़े लोग

लखनऊ/वाराणसी/प्रयागराज/कानपुर। लखनऊ में रक्षाबंधन पर बच्चियों ने सीएम योगी आदित्यनाथ को राखी बांधी। उनका ऑटोग्राफ लिया। राखी बंधवाने के बाद योगी ने सभी बच्चियों को चॉकलेट, शगुन के लिफाफे और तोहफे में एक-एक बैग दिया। इस दौरान उन्होंने बच्चों से बातचीत भी की। सीएम आवास आईं संस्कृति स्कूल की छात्रा श्रेयसी सिंह ने पूछा कि सोशल मीडिया के इस दौर में खुद को फोकस्ड कैसे रखें? इस पर योगी ने जवाब दिया-'मेरे जैसा व्यक्ति मोबाइल का इस्तेमाल कम से कम करता है। बहुत जरूरी हुआ, तो बमुश्किल आधा घंटा ही मोबाइल देखता हूं। मैं प्रदेश के सभी बच्चों से कहूंगा कि मोबाइल फोन पर अनावश्यक समय बर्बाद करने के बजाय किताबें पढ़ना शुरू करें।' इधर, लखनऊ, मथुरा, अयोध्या, बलरामपुर और श्रावस्ती समेत प्रदेश भर की जेलों में बंद भाइयों को राखी बांधने उनकी बहनें पहुंचीं। लखनऊ जेल प्रशासन ने बहनों के लिए कोल्ड ड्रिंक की व्यवस्था की थी। वहीं, श्रावस्ती में बहनों को देखकर बंदी भाई रोने लगे। एक बंदी की मां ने अपने आंचल से उसके आंसू पोछे।

उधर, बाजारों में मिठाई और राखी की दुकानों पर खरीदारों की भारी भीड़ उमड़ी। बसों और ट्रेनों में जबरदस्त भीड़ के चलते यात्रियों को अंदर दाखिल होने के लिए कड़ी मशक्कत करनी पड़ी।

हालत यह रहे कि लोगों ने खिड़कियों के रास्ते बच्चों को अंदर बैठाया। कई लोग खड़े-खड़े सफर करने को मजबूर रहे। वहीं, काशी में बाबा विश्वनाथ को मंगला आरती के बाद रक्षासूत्र (राखी) पहनाया गया।

वाराणसी में बेटे-बहू ने 24 घंटे लाश नहीं उठाने दी,बोले- मां रास्ते के लिए 2 साल दर-दर भटकीं

वाराणसी। 'पड़ोसी ने 2 साल पहले हमारे घर का रास्ता जबरदस्ती बंद कर दिया। सास रास्ता खुलवाने के लिए अधिकारियों के पास करीब 100 बार गईं। लेकिन, किसी ने नहीं सुनी। तीन ननद की शादी सिर्फ इसलिए इस घर से नहीं हो सकी, क्योंकि आने-जाने का रास्ता नहीं था। सास इस अफसोस में घुट रही थीं। आखिरकार उन्होंने खुदकुशी कर ली।' यह दर्द है कि वाराणसी की रहने वाली दीक्षा उपाध्याय का। उनकी 50 साल की सास कविता ने गुरुवार को टॉयलेट में फांसी लगाकर जान दे दी। पुलिस पहुंची तो परिवार ने करीब 24 घंटे तक लाश नहीं उठाने दी। बहू दीक्षा ने कहा, सास की मौत के बाद अब प्रशासन हमें आश्वासन दे रहा है। लेकिन अब आश्वासन लेकर क्या करेंगे?कविता उपाध्याय का घर वाराणसी में पिंडरा तहसील इलाके के अहरक खास गांव में है। बुधवार शाम करीब 7 बजे उन्होंने टॉयलेट में फांसी लगा ली। जब बेटे विशाल ने टॉयलेट का दरवाजा खोला, तो मां फंदे से लटकती मिली। उसने चिल्लाकर परिवार के लोगों को बुलाया। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमॉर्टम कराने की बात कही, तो परिजन ने इनकार कर दिया। उन्होंने कहा, 'हमारे रास्ते पर कुछ लोगों ने कब्जा कर रखा है। जब रास्ता ही नहीं है, तो शव किस रास्ते से लेकर जाएंगे?

झुग्गी-झोपड़ी की छात्राओं ने छात्रों को राखी बांधकर मनाया पवित्र रक्षाबंधन पर्व

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। महिला उन्नति संस्था एवं सावित्री बाई फुले शिक्षा केंद्र, सेक्टर-44 नोएडा के नेतृत्व में आज रक्षाबंधन का पावन पर्व बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। कार्यक्रम में झुग्गी-झोपड़ी में रहने वाली सभी छात्राओं ने स्नेहपूर्वक छात्रों की कलाई में राखी बांधकर भाई-बहन के अटूट प्रेम और विश्वास के साथ इस त्योहार को मनाया। सभी छात्राओं ने भविष्य में भाई होने का फर्ज निभाने की बात भी कही। बच्चों के चेहरों पर खुशी और उत्साह देखते ही बन रहा था।कार्यक्रम का नेतृत्व संस्था की अध्यक्ष एवं शिक्षा केंद्र की संचालिका श्रीमती रेनू बाला शर्मा ने किया।इस अवसर पर रेनू बाला शर्मा जी ने सभी बच्चों और उपस्थित लोगों को रक्षाबंधन की भी हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं दी। उन्होंने कहा कि रक्षाबंधन केवल एक कच्चा धागा ही नहीं, बल्कि भाई-बहन के स्नेह, प्रेम और विश्वास के अटूट बंधन का प्रतीक है। इस दिन भाई अपनी बहन की रक्षा का संकल्प लेता है। उन्होंने सभी बच्चों को इस पवित्र त्योहार का महत्व समझाया और आपसी प्रेम और एकता बनाए रखने का संदेश दिया। कार्यक्रम के अंत में बच्चों को मिठाई और उपहार वितरित किए।

यूपी में हर तरफ पानी ही पानी, मछुआरे नदी में फंसे,गाजियाबाद में अचानक धुंध छा गई, 25 शहरों में बारिश, 53 में अलर्ट

लखनऊ/वाराणसी/प्रयागराज/कानपुर। यूपी में मानसूनी बारिश का सिलसिला जारी है। शुक्रवार सुबह लखनऊ, कानपुर, मुरादाबाद और संभल समेत 25 शहरों में बारिश हुई। गाजियाबाद में अचानक धुंध छा गई। कई जगह विजिबिलिटी 50-60 मीटर तक सिमट गई। कानपुर में इतनी बारिश हुई कि घर का आंगन 20 फीट धंस गया। गड्ढे में लड़की गिर गई। मौसम विभाग ने 53 शहरों में बारिश का अलर्ट जारी किया है। चंदौली, मिर्जापुर और सोनभद्र में भारी बारिश की चेतावनी जारी की गई है। इससे पहले, गुरुवार को मुरादाबाद-सीतापुर समेत 61 जिलों में बारिश हुई। सबसे ज्यादा 131.6 मिमी बारिश महोबा में रिकॉर्ड हुई। इधर, मानसूनी बारिश से नदियां उफान पर हैं। झांसी में 48 घंटे से हो रही मूसलाधार बारिश की वजह से सुखनई नदी में अचानक बाढ़ आ गई। मछली पकड़ने गए चार मछुआरे तेज बहाव में फंस गए। किनारे पर लगे एक पेड़ पर चढ़कर मदद की गुहार लगाने लगे। एसडीआरएफ की टीम ने चारों को बचाया। झांसी में ही उफनाते नाले में वैन बह गई, जिसमें सवार 6 लोगों को लोगों ने बचाया। वहीं, नेपाल-तिब्बत बॉर्डर पर बुधवार सुबह आई अचानक बाढ़ के बाद शव बहकर यूपी आ रहे हैं। गुरुवार को महराजगंज और कुशीनगर में प्रशासन ने तीन-तीन शवों को गंडक (नारायणी) नदी से बाहर निकाला। अभी तक किसी की पहचान नहीं हो पाई है। रेस्क्यू टीम लगातार मॉनिटरिंग कर रही है। लखनऊ के मौसम वैज्ञानिक अतुल कुमार सिंह ने बताया-'मध्य प्रदेश-राजस्थान और दक्षिणी यूपी के ऊपर बने दबाव के क्षेत्र से अब तक प्रदेश में जमकर मानसूनी बारिश हुई। लेकिन, अब यह सिस्टम आगे बढ़ रहा है, जिससे बारिश की गतिविधियों पर ब्रेक लगेगा। 2-3 दिन यानी 31 अगस्त तक बारिश में कमी आएगी। इसके बाद सितंबर के पहले सप्ताह में फिर से बारिश का सिलसिला शुरू होगा।' गाजियाबाद में शुक्रवार सुबह शहर के कई इलाकों में धुंध छाई रही, जिससे कुछ देर तक दृश्यता प्रभावित हुई। सुबह के समय हवा में नमी और धुंध के कारण मौसम सुहाना नजर आया। सीतापुर में घाघरा नदी का जलस्तर घटने के साथ रामपुर मथुरा क्षेत्र में कटान तेज हो गया है। ग्राम पंचायत नागेश्वरपुरवा के शुक्लपुरवा गांव में नदी तेजी से जमीन को काट रही है। हालात ऐसे हैं कि ग्रामीण अपने हाथों से घर तोड़कर गृहस्थी का सामान सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाने को मजबूर हैं। गुरुवार शाम तक करीब 8 बीघा कृषि भूमि नदी में समा चुकी थी। वहीं बैराजों से करीब 2.45 लाख क्यूसेक पानी छोड़े जाने से ग्रामीणों की चिंता और बढ़ गई है। लगातार कटान के चलते गांव के कई परिवारों पर आशियाना उजड़ने का खतरा मंडरा रहा है।

20 सितंबर को वाराणसी में नई पीढ़ी संवाद,तैयारी को लेकर रासपहरी में हुई बैठक,पूर्वांचल यात्रा सोनभद्र में चलेगी

म्योरपुर/सोनभद्र। गुरूवार को जवाबदेह सरकार के लिए सरकार ने वादा खिलाफी की है। जनगणना में ओबीसी कालम को हुआ कि माइक्रोफाइनेंस कंपनियों द्वारा महिलाओं की

मिर्जापुर से शुरू हुई पूर्वांचल यात्रा सोनभद्र में जारी रहेगी। इस यात्रा में गांव, कस्बा, बाजार, स्कूल-कालेज, अधिवक्ताओं और गणमान्य नागरिकों से संपर्क और संवाद किया जाएगा। इस यात्रा के प्रथम चरण के समापन पर वाराणसी शास्त्री घाट पर नई पीढ़ी संवाद और आम सभा का आयोजन किया जाएगा। इस बाबत आज रासपहरी कार्यालय में रोजगार सामाजिक अधिकार अभियान की बैठक हुई। बैठक में उपस्थित ऑल इंडिया पीपुल्स फ्रंट के संस्थापक सदस्य अखिलेन्द्र प्रताप सिंह ने कहा कि भाजपा शामिल करने की बात करके भी उसे पूरा नहीं किया। साथ ही आदिवासी समाज की तरफ से उठ रही आदिवासी धर्म कोड के कालम को जोड़ने की बात भी अनसुनी कर दी जा रही है। इस सवाल को सोनभद्र में प्रमुख सवाल बनाया जाएगा। उन्होंने कहा कि हर नागरिक के रोजगार, शिक्षा, स्वास्थ्य, पेंशन और भूमिहीनों को आवास के संवैधानिक अधिकारों की गारंटी हो सकती है। यदि सरकार कारपोरेट घरानों की संपत्ति पर टैक्स लगाने और काली पूंजी की अर्थव्यवस्था को नियंत्रित करने का साहस दिखाएं। बैठक में तय आर्थिक लूट, प्राकृतिक संसाधनों के दोहन, पर्यावरण को नुकसान पहुंचाने, पूंजी पलायन पर रोक लगाने, लड़कियों की उच्च शिक्षा जैसे सवालों को यात्रा में मजबूती से उठाया जाएगा। बैठक के अध्यक्षता राजेंद्र प्रसाद गोंड और संचालन कृपा शंकर पनिका ने किया। बैठक में प्रदेश महासचिव दिनकर कपूर, इंद्रदेव खरवार, रूबी सिंह गोंड, सविता गोंड, महेंद्र प्रताप सिंह, मनोहर गोंड, मंगरू प्रसाद श्याम, गुंजा गोंड, सुगवंती गोंड, राजकुमार खरवार, राम विचार गोंड, महावीर गोंड, आदि लोग शामिल रहे।

एक एक रक्षासूत्र की सौगन्ध है बिना जिले को प्रदूषण मुक्त किए पेड़ हैं तो प्राण हैं अभियान नहीं रुकेगा-संदीप मिश्र

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। नगवा ब्लाक के आप सबके रक्षासूत्र की सौगन्ध खाकर एक बात का दावा करते

खलियारी में आज किसान निर्मल इण्टर कालेज में रक्षाबन्धन की पूर्व सन्ध्या पर विद्यालय परिवार की बहनों ने किसान नौजवान संघर्ष मोर्चा के संयोजक संदीप मिश्र जी को रक्षासूत्र बाँधकर अपनी सुरक्षा के साथ सोनभद्र के जल जंगल जमीन व पर्यावरण के सुरक्षा का संकल्प दिलाया वही कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए विद्यालय परिवार की ओर से शिक्षिका बहन सिन्धु प्रजापति ने कहा कि आज भैया को हम लोगों ने रक्षासूत्र बाँधकर एक संकल्प अपनी सुरक्षा के साथ सोनभद्र के पर्यावरण की सुरक्षा कर प्रदूषण मुक्त करने का संकल्प दिलाया है वही कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए मोर्चा संयोजक श्री मिश्र ने बहनों से कहा? कि हम वादा नहीं करते हैं कि जब सोनभद्र प्रदूषण मुक्त नहीं हो जाता तब तक पेड़ हैं तो प्राण हैं अभियान निरन्तर चलता रहेगा साथ ही सोनभद्र के जल जंगल जमीन के लिए किसान नौजवान संघर्ष मोर्चा कृत संकल्पित है आने वाले समय में यह आन्दोलन निरन्तर चलता रहेगा साथ में उन्होंने यह भी कहा जल जंगल जमीम पेड़ पानी पहाड़ नदी झील झरना इनका सरक्षण सुरक्षा सभी नागरिकों का संविधान में मौलिक कर्तव्य भी हैं आज के कार्यक्रम में सैकड़ों बहनों ने राखी रक्षा सूत्र के रुप में मोर्चा संयोजक को बाधा कार्यक्रम में विद्यालय के प्रबन्धक निर्मल यादव जी कमलेश जी सिन्धु जी सुमन जी आकश चौहान अरविन्द चौहान रोहित यादव व सैकड़ों बहने उपस्थित रही।

दी आर्यन्स एकेडमी में धूमधाम से मना सावन महोत्सव, बच्चों ने बिखेरे सांस्कृतिक रंग

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रॉबर्ट्सगंज/सोनभद्र। सन्त नगर स्थित 'दी आर्यन्स एकेडमी' में सावन माह के पावन अवसर पर भव्य 'सावन सेलिब्रेशन' का आयोजन हर्षोल्लास के साथ किया गया। इस अवसर पर पूरा विद्यालय परिसर हरे रंग के परिधानों और आकर्षक सजावट से सावन के रंग में रंगा नजर आया। कार्यक्रम का शुभारंभ विद्यालय के प्रबंध निदेशक विनोद कुमार जालान एवं प्रधानाचार्या श्रीमती चित्रा जालान द्वारा दीप प्रज्वलन कर किया गया।प्रबंध निदेशक विनोद कुमार जालान ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि सावन का महीना प्रकृति के सौंदर्य, हरियाली और नवजीवन का प्रतीक है। ऐसे आयोजनों से बच्चों को अपनी समृद्ध भारतीय संस्कृति और परंपराओं से जुड़ने का अवसर मिलता है। प्रधानाचार्या श्रीमती चित्रा जालान ने सावन के प्राकृतिक व आध्यात्मिक महत्व पर प्रकाश डालते हुए सभी को प्रकृति संरक्षण और पौधरोपण का संकल्प लेने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम के दौरान छात्राओं ने सावन गीतों, कजरी, लोकनृत्य और कविता पाठ की

मनमोहक प्रस्तुतियां देकर सबका मन मोह लिया। विद्यालय परिसर में झूले और मेहंदी प्रतियोगिता का भी विशेष आयोजन किया गया, जिसमें बच्चों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। उत्सव को सफल बनाने में विद्यालय की शिक्षिकाओं – सुषमा पांडे, निशा चौबे, प्रियंका भट्टाचार्या, सुमन, नेहा, प्रिया, काजल, प्रतिमा चौबे, याशमिन और अपर्णा का सराहनीय योगदान रहा।

सोनभद्र जनपद की समस्याओं पर निरंकुश हुए आला अधिकारी, समाजवादी पार्टी ने जिलाधिकारी को सौंपा ज्ञापन

सोनभद्र। संवाददाता अजीत प्रताप सिंह। जनपद सोनभद्र में किसानों, नौजवानों, व्यापारियों और आम जनमानस की विभिन्न समस्याओं को लेकर समाजवादी पार्टी सोनभद्र के प्रतिनिधिमंडल ने कलेक्ट्रेट पहुँचकर जिलाधिकारी को ज्ञापन सौंपा। इस दौरान सपा नेताओं ने जिला प्रशासन और राज्य सरकार के खिलाफ जमकर नारेबाजी की और अधिकारियों पर जनसमस्याओं के प्रति संवेदनहीन होने का आरोप लगाया। ज्ञापन सौंपने के उपरांत जनसभा को संबोधित करते हुए समाजवादी पार्टी के जिलाध्यक्ष राम निहोर यादव ने कहा कि जनपद सोनभद्र में वर्तमान समय में जनसमस्याओं का अंबार लगा हुआ है। लेकिन सत्ताधारी भाजपा सरकार के दबाव में जिला प्रशासन के आला अधिकारी पूरी तरह निरंकुश हो चुके हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि जब सपा नेता या जनप्रतिनिधि आम जनता की समस्याओं को लेकर अधिकारियों को फोन करते हैं, तो वे फोन तक उठाना मुनासिब नहीं समझते। जिलाध्यक्ष ने चेतावनी देते हुए कहा कि यदि जिला प्रशासन ने जनसमस्याओं का समयबद्ध निस्तारण नहीं किया, तो समाजवादी पार्टी जिले स्तर पर व्यापक जनआंदोलन करने के लिए

बाध्य होगी, जिसकी पूरी जिम्मेदारी जिला प्रशासन की होगी। उन्होंने कहा कि सपा शासनकाल में हर वर्ग खुशहाल था, जबकि वर्तमान सरकार में किसान खाद व बिजली के लिए परेशान हैं। कार्यक्रम में उपस्थित पूर्व विधायक रमेश चंद दुबे ने घोरावल (विधानसभा क्षेत्र 400) की बदहाल स्थिति पर चिंता जताते हुए कहा कि क्षेत्र में सैकड़ों विद्युत ट्रांसफार्मर हफ्तों से जले पड़े हैं। इसके कारण किसान फसलों की सिंचाई नहीं कर पा रहे हैं और आम जनता भीषण गर्मी व बिजली संकट से जूझ रही है। उन्होंने कहा कि बार-बार शिकायत करने के बावजूद बिजली विभाग और प्रशासनिक अधिकारी ध्यान नहीं दे रहे हैं। यदि जले हुए ट्रांसफार्मरों को तत्काल नहीं बदला गया, तो सपा कार्यकर्ता सड़कों पर उतरेंगे। ज्ञापन सौंपने के दौरान समाजवादी पार्टी के प्रमुख पदाधिकारियों और सैकड़ों कार्यकर्ताओं ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। इस अवसर पर विधानसभा अध्यक्ष बाबूलाल यादव, जिला उपाध्यक्ष रामप्यारे सिंह पटेल, प्रमुख नेता पवन पटेल, बाबू हाशमी, जगत पटेल, राजेश विश्वकर्मा ,सहित बड़ी संख्या में समाजवादी पार्टी के कार्यकर्ता एवं स्थानीय नागरिक उपस्थित रहे।

दुर्गा मंदिर स्थित प्रजापिता ब्रह्माकुमारीज के उपसेवाकेन्द्र पर रक्षाबंधन का पावन पर्व संस्कृति और राष्ट्र के रक्षा दिवस के रुप में मनाया गया

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र घोरावल। बुधवार को घोरावल में दुर्गा मंदिर स्थित प्रजापिता ब्रह्माकुमारीज के उपसेवाकेन्द्र पर रक्षाबंधन का पावन पर्व संस्कृति और राष्ट्र के रक्षा दिवस के रुप में मनाया गया। इस अवसर पर राबर्ट्सगंज से पधारी ब्रह्माकुमारीज सेवाकेन्द्र की मुख्य संचालिका बी0के0सुमन बहन ने कहा कि रक्षाबंधन का पावन स्वयं को मर्यादा और पवित्रता के पवित्र बंधन में बंधकर समस्त नारियों की सुरक्षा का संकल्प लेने का महान पर्व है। नारी सांस्कृति मूल्यों और परम्पराओं की संवाहक होती है। इसलिए नारी के सशक्तिकरण और सुरक्षा से ही सशक्त और समृद्ध राष्ट्र के नवनिर्माण संकल्पना साकार होती है। इस अवसर उपस्थित लोगों ने स्वयं को व्यसनों के सेवन से दूर रहने का प्रतिज्ञा लिया। घोरावल स्थित उपसेवाकेन्द्र की संचालिका बी0के0 सीता बहन ने रक्षाबंधन के आध्यात्मिक रहस्य पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यह पर्व

मनुष्यात्माओं के लिए ईश्वरीय उपहार है जिसके द्वारा जीवन में जीवन-मुक्ति के मार्ग प्रशस्त होता है। थाना प्रभारी श्री बृजेश सिंह जी ने ब्रह्माकुमारीज संस्था का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि संस्था द्वारा किए जा रहे मानव सेवा के कार्य सराहनीय है। क्राइम निरीक्षक श्री भानु प्रताप सिंह, चौकी इंचार्ज श्री उदयनाथ कुशवाहा जी, व अन्य स्टाप को रक्षा सूत्र बाँधी गईं। संस्था में कुछ समाजसेविकों को भी राखी बांधी गई शिवद्वार मंदिर के मुख्य पुजारी श्री अजय गिरी जी, पूर्व चेयरमैन श्री राकेश कुमार उमर, समाजसेवी श्री रमेश चंद्र पांडे, श्री विपिन बिहारी उमर, श्री राजकुमार उमर, श्री काजू अग्रहरी जी को राखी बाँधी गईं।ब्रह्मकुमारी बहनों ने बताया कि रक्षाबंधन के अवसर पर वे किसी भी प्रकार का उपहार स्वीकार नहीं करती उनके लिए सबसे बड़ा उपहार यही है कि भाई - बहन अपने जीवन की किसी कमी कमजोरी विकार मादक पदार्थों के सेवन को छोड़ने का संकल्प ले। इस प्रोग्राम को सफल करने में बी के दीपशिखा बहन, डॉ बी के हरींन्द्र भाई,कुंजलता बहन रानी बहन राजेश भाई, आनंद भाई नें सक्रिय योगदान दिया।

NAINI INDUSTRIAL TRAINING CENTRE
(Govt. Affiliated, Star Graded, Record Holder, ISO Certified Training Centre)
सर्टिफिकेट इन फायर सेफ्टी एण्ड इण्डस्ट्रीयल सिक्योरिटी
फायर सेफ्टी पर जिसकी कमाण्ड, उसकी ही है ग्लोबल डिमाण्ड
कोर्स के बाद सेफ्टी सुपरवाइजर, फायर प्रोटेक्शन, सिक्योरिटी एडमिनिस्ट्रेटर आदि विभिन्न पदों पर नियुक्ति मिल जाती है। रिलीफ एजेन्सी N.G.O., डिफेन्स सर्विसेज फायर सर्विस आर्डिनेन्स फैक्ट्री, महानगर पालिका, नगर निगम, एयरपोर्ट, पावर प्लांट, स्टील प्लान्ट, माइनिंग इन्डस्ट्रीज, पेट्रोलियम कम्पनी, फूड इण्डस्ट्रीज, रिफाइनरीज, टेक्सटाइल मिल, टावर कम्पनी, इलेक्ट्रानिक कम्पनी, कोयले की खदानों एवं जहाजों आदि क्षेत्रों में फायर सेफ्टी के जानकारों को बहुत अधिक मौका मिलता है

नोटः फायर सेफ्टी कोर्स करें और देश -विदेश, सरकारी और प्राइवेट क्षेत्रों में अच्छे पैकेज के साथ नौकरी पायें।
Visit us at www.nainiiti.com Call: 9415608710, 7459860480
Enjoy Publicity

स्पोर्ट्स

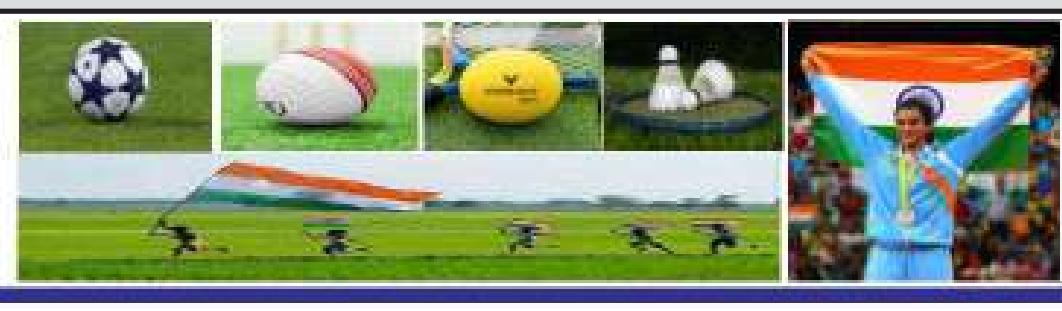

भारत से फॉलोऑन खेलकर श्रीलंका ने पहली बार मैच बचाया,दिनूषा ने सीरीज में 3 शतक लगाए

कोलंबो। भारत और श्रीलंका के बीच कोलंबो में खेला गया दूसरा टेस्ट मैच ड्रॉ रहा। भारत ने सीरीज 1-0 से अपने नाम की। फॉलोऑन खेलने को मजबूर हुई

श्रीलंका की टीम ने दूसरी पारी में 9 विकेट पर 429 रन बनाए और मैच बचाया। टीम ने भारत के खिलाफ फॉलोऑन खेलने के बाद पहली बार मैच ड्रॉ कराया है। श्रीलंका के बल्लेबाज सोनल दिनूषा ने सीरीज में 3 शतक लगाए। उन्होंने 2 मैचों की टेस्ट सीरीज में सबसे ज्यादा शतक लगाने के मामले श्रीलंका के पूर्व कप्तान कुमार संगकारा और साउथ अफ्रीका के जैक्स कैलिस के रिकॉर्ड की बराबरी की। 1. श्रीलंका ने फॉलोऑन के बाद चौथी बार मैच बचाया-श्रीलंका ने टेस्ट में चौथी बार फॉलोऑन मिलने के बाद मैच बचाया। टीम ने भारत के खिलाफ पहली बार ऐसा किया है। 2. दिनूषा ने स्पिनरों के खिलाफ स्वीप से 173 रन बनाए-दिनूषा एक टेस्ट सीरीज में स्पिनरों के खिलाफ स्वीप से सबसे ज्यादा रन बनाने वाले बल्लेबाज बन गए। उन्होंने इस सीरीज में स्पिनरों के खिलाफ 173 रन स्वीप से बटोरें। उन्होंने इंग्लैंड के कप्तान जो रुट के 160 रन का रिकॉर्ड तोड़ा। 3. श्रीलंका ने दूसरी पारी में 216 रन की बढ़त बनाई- श्रीलंका ने फॉलोऑन मिलने के बाद दूसरी पारी में 216 रन की बढ़त बनाई। जो भारत के खिलाफ फॉलोऑन खेलने के बाद तीसरी सबसे बड़ी बढ़त है। 4. तीसरे श्रीलंकाई जिन्होंने भारत के खिलाफ दोनों पारियों में शतक लगाए-दिनूषा भारत के खिलाफ टेस्ट मैच की दोनों पारियों में शतक लगाने वाले तीसरे श्रीलंकाई बल्लेबाज बन गए। उनसे पहले दलीप मेंडिस और अरविंदा डी सिल्वा यह कारनामा कर चुके हैं। 5. दिनूषा ने 5 टेस्ट में 606 रन बनाए-दिनूषा करियर के शुरुआती 5 टेस्ट मैचों में 600 रन तक पहुंचने वाले श्रीलंका के दूसरे बल्लेबाज बने। उनके टेस्ट में 606 रन हो चुके हैं। 631 रन के साथ कामिंदु मेंडिस पहले स्थान पर हैं। 6. दिनूषा ने सीरीज में 3 शतक लगाए-दिनूषा 2 मैचों की टेस्ट सीरीज में 3 शतक जमाने वाले बल्लेबाजों के क्लब में शामिल हो गए। उनसे पहले 7 बल्लेबाज यह कारनामा कर चुके हैं। अरविंद डी-सिल्वा ने सबसे ज्यादा 2 बार यह मुकाम हासिल किया है। 7. दिनूषा ने सीरीज की सभी 4 पारियों में बनाए 50 से अधिक स्कोर-दिनूषा एक टेस्ट सीरीज की चारों पारियों में 50 से ज्यादा रन बनाने वाले तीसरे श्रीलंकाई बल्लेबाज बन गए। उन्होंने भारत के खिलाफ सीरीज की चारों पारियों में 50 प्लस का स्कोर बनाया। यहां से टॉप मोमेंट्स- 1. नुवानथा के पैर के अंगूठे पर गेंद लगी-104वें ओवर में रवींद्र जडेजा की गेंद श्रीलंकाई बल्लेबाज केशरा नुवनथा के पैर के अंगुठे पर लगी। ओवर की दूसरी गेंद जडेजा ने ब्लॉकहोल में डाली। केशरा बैट नीचे लाने में लेट हो गए और गेंद जाकर उनके पैर पर लगी। इम्पैक्ट आउटसाइज स्टंप था, इसलिए वे एलबीडब्लू से बच गए। इसके बाद नुवानथा ने जूता उतारकर फिजियो को मैदान पर बुलाया। ट्रीटमेंट के बाद दोबारा खेल शुरु हुआ। 2. जडेजा चोट के बाद मैदान से बाहर चले गए-128वें ओवर में रवींद्र जडेजा तकलीफ में नजर आए। ओवर की तीसरी गेंद फेंकने के बाद जडेजा असहज दिखे। उनके दाहिने पैर की एड़ी में तकलीफ थी। इसके बाद वे अंपायर से अपनी कैप लेकर मैदान से बाहर चले गए हैं। उनका ओवर प्रसिद्ध कृष्णा ने पूरा किया। 3. टी-ब्रेक के बाद पहली गेंद पर सोनल ने शतक पूरा किया-134वें ओवर की पहली ही गेंद पर सोनल ने सीरीज का तीसरा शतक पूरा किया। 98 रन पर खेल रहे सोनल ने मोहम्मद सिराज की गेंद को उन्होंने मिड-विकेट की ओर फ्लिक किया।

फिर 2 रन लेकर अपना शतक पूरा किया। स्टैंड्स में मौजूद उनकी मां और ड्रेसिंग रूम में खड़े खिलाड़ियों ने तालियां बजाकर उनकी पारी की सराहना की।

2030 कॉमनवेल्थ गेम्स की तैयारियों को लेकर बैठक हुई,अहमदाबाद में 2036 ओलिंपिक की बोली पर चर्चा हुई, गृहमंत्री अमित शाह और खेलमंत्री शामिल

अहमदाबाद। कॉमनवेल्थ गेम्स 2030 की तैयारियों को लेकर अहमदाबाद में गृहमंत्री अमित शाह, खेलमंत्री मनसुख मांडविया और गुजरात के डिप्टी सीएम हर्ष सांघवी की बैठक हुई। इस बैठक में 2036 ओलिंपिक की मेजबानी के लिए भारत की बोली पर भी चर्चा हुई। गृह मंत्रालय खेलों के दौरान सुरक्षा व्यवस्था, आवाजाही और दूसरे इंतजामों की निगरानी में अहम भूमिका निभाएगा। शाह ने एक्स पर बैठक की जानकारी दी-शाह ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर बैठक की जानकारी दी। उन्होंने कहा- हम इंटरनेशनल खेल आयोजनों की मेजबानी करके भारत को वैश्विक खेल स्थल बनाने के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध है।' उन्होंने बताया की बैठक में 2029 पुलिस और फायर गेम्स की मेजबानी पर भी चर्चा हुई। अहमदाबाद में पहले पुलिस और फायर गेम्स होंगे-वर्ल्ड पुलिस और फायर गेम्स इन सभी आयोजनों से पहले अहमदाबाद में होगी। यह एक बड़ी मल्टी-गेम्स इंटरनेशनल प्रतियोगिता होगी। इसमें 70 देशों के करीब 10 हजार खिलाड़ी शामिल होंगे। ओलिंपिक बोली पर फैसला 2029 तक संभव-कॉमनवेल्थ गेम्स दो दशक बाद भारत लौटेंगे। साल 2010 में दिल्ली ने पहली बार इसका आयोजन किया था। अहमदाबाद 2036 ओलंपिक की मेजबानी की दौड़ में भी शामिल है। सांघवी खेल विभाग भी संभालते हैं, इसलिए वे इंटरनेशनल ओलिंपिक समिति के साथ होने वाली बातचीत में शहर का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। भारत अभी मेजबान चुनने की प्रक्रिया के 'कंटीन्यूअस डायलॉग' चरण में है। देश की बोली पर फैसला 2029 से पहले होने की उम्मीद नहीं है। 2030 में गेम्स के 100 साल पूरे होंगे-2030 में कॉमनवेल्थ गेम्स अपने 100 साल पूरे करेगा। पहला एडिशन 1930 में कनाडा के हैमिल्टन शहर में हुआ था। भारत दूसरी बार गेम्स की मेजबानी करेगा। इससे पहले भारत ने 2010 में गेम्स की मेजबानी की थी। तब सारे इवेंट दिल्ली में हुए थे। ऑस्ट्रेलिया ने सबसे ज्यादा 5 बार गेम्स की मेजबानी की है। कनाडा और स्कॉटलैंड में 4 बार टूर्नामेंट खेला गया।

आर प्रज्ञानानंदा बने ग्रैंड चेस टूर जीतने वाले पहले भारतीय,कारूआना को 15-13 से हराया, रु1.91 करोड़ की प्राइज मनी मिली

स्पोर्ट डेस्क। भारतीय ग्रैंडमास्टर आर प्रज्ञानानंदा ने 2026 ग्रैंड चेस टूर (जीसीटी) का खिताब जीतकर इतिहास रच दिया है। वे जीसीटी का खिताब

जीतने वाले पहले भारतीय बन गए हैं। सेंट लुइस में खेले गए फाइनल में प्रज्ञानानंदा ने अमेरिका के ग्रैंडमास्टर फैबियानो कारूआना को 15-13 से हराया। इस जीत के साथ प्रज्ञानानंदा ने 2 लाख डॉलर (लगभग रु1.91 करोड़) की प्राइज मनी अपने नाम की। 6 पॉइंट पीछे रहने के बाद प्रज्ञानानंदा ने की वापसी-फाइनल मुकाबले के आखिरी दिन की शुरुआत में प्रज्ञानानंदा कारूआना से 6 पॉइंट पीछे चल रहे थे। हालांकि, उन्होंने दिन की शुरुआत में ही दोनों रैपिड गेम्स जीतकर अपनी स्थिति मजबूत की और स्कोर में बढ़त हासिल कर ली। इसके बाद हुए ब्लिट्ज मैचों में दोनों खिलाड़ियों का प्रदर्शन बराबरी का रहा, जिससे प्रज्ञानानंदा ने 2 पॉइंट की बढ़त बनाए रखी और 15-13 के अंतिम स्कोर के साथ पहली बार ग्रैंड चेस टूर का खिताब अपने नाम किया। तीसरे नंबर के मैच में वेस्ली सो की जीत-तीसरे स्थान के लिए खेले गए मैच में अमेरिका के ग्रैंडमास्टर वेस्ली सो ने जर्मनी के विंसेंट कीमर को 18-12 के अंतर से हराया। रैपिड सेक्शन में दोनों खिलाड़ियों के बीच बराबरी का मुकाबला रहा, लेकिन वेस्ली सो ने लगातार चारों ब्लिट्ज गेम्स जीतकर एक मैच शेष रहते ही जीत तय कर ली। 2027 ग्रैंड चेस टूर के लिए टॉप 3 खिलाड़ी क्वालिफाई- इस टूर्नामेंट के फाइनल नतीजों के साथ ही अगले सीजन यानी 2027 ग्रैंड चेस टूर के लिए टॉप 3 खिलाड़ियों ने डायरेक्ट क्वालिफाई कर लिया है। इन 3 खिलाड़ियों में चैंपियन प्रज्ञानानंदा, रनर-अप फैबियानो कारूआना और तीसरे स्थान पर रहने वाले वेस्ली सो शामिल हैं। टूर्नामेंट सिंगल-एलिमिनेशन नॉकआउट फॉर्मेट में खेला गया, जिसमें चार खिलाड़ियों फैबियानो कारूआना, वेस्ली सो, विंसेंट कीमर और प्रज्ञानानंदा ने हिस्सा लिया। 2015 में हुई थी शुरुआत-ग्रैंड चेस टूर दुनिया के बड़े शतरंज टूर्नामेंट की एक सीरीज है।

इसकी शुरुआत 2015 में हुई थी। इसमें सालभर अलग-अलग शहरों में क्लासिकल, रैपिड और ब्लिट्ज फॉर्मेट में मुकाबले खेले जाते हैं।

खिलाड़ियों को उनके प्रदर्शन के आधार पर पॉइंट्स मिलते हैं और सीजन के अंत में इन्हीं पॉइंट्स के आधार पर ग्रैंड चेस टूर फाइनल के लिए खिलाड़ियों का चयन होता है।

वैभव सूर्यवंशी अंडर-19 टीम से बाहर,ऑस्ट्रेलिया सीरीज नहीं खेलेंगे, बीसीसीआई के वन-वर्ल्ड कप नियम,2026 वर्ल्डकप खेल चुके

स्पोर्ट डेस्क। बीसीसीआई ने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ घरेलू सीरीज के लिए भारत की 15

सदस्यीय अंडर-19 टीम घोषित की है। इसमें पूर्व भारतीय दिग्गज वीरेंद्र सहवाग के बेटे आर्यवीर सहवाग और पूर्व भारतीय कोच राहुल द्रविड़ के बेटे अन्वय द्रविड़ को जगह मिली है। हालांकि, बीसीसीआई के नियम के नियम की वजह से 15 साल के वैभव सूर्यवंशी टीम में शामिल नहीं हैं। वैभव अच्छा प्रदर्शन कर चुके हैं और इंग्लैंड के खिलाफ टी-20 इंटरनेशनल में सीनियर टीम के लिए डेब्यू भी कर चुके हैं। बीसीसीआई ने 2016 में खिलाड़ियों के लिए एक नियम बनाया था। इसके मुताबिक, पात्र होने के बावजूद कोई खिलाड़ी एक से ज्यादा अंडर-19 वर्ल्ड कप नहीं खेल सकता है। इसी नियम के कारण वॉशिंगटन सुंदर 2018 का अंडर-19 वर्ल्ड कप नहीं खेल सके थे। उनसे पहले सरफराज खान, संदीप शर्मा, विजय जोल और अन्य खिलाड़ी टूर्नामेंट के कई एडिशन में हिस्सा ले चुके थे। वैभव 2026 का अंडर-19 वर्ल्ड कप खेल चुके हैं। इसलिए वे किसी और एडिशन में हिस्सा नहीं ले सकेंगे। रिपोर्ट के मुताबिक, इसी वजह से उन्हें अंडर-19 टीम की योजनाओं में शामिल नहीं किया गया। राजकोट में 18 सितंबर से शुरू होगी सीरीज-जूनियर मेंस सिलेक्शन कमेटी ने घरेलू सीरीज के लिए टीमों का ऐलान किया है। इसमें ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ राजकोट में 50 ओवर के तीन मैच खेले जाएंगे। ये मुकाबले 18, 21 और 23 सितंबर को होंगे। इसके बाद दो रेड-बॉल मल्टी-डे मैच खेले जाएंगे। पहला मैच 27 से 30 सितंबर तक राजकोट में होगा। दूसरा मुकाबला 5 से 8 अक्टूबर तक अहमदाबाद के नरेंद्र मोदी स्टेडियम के बी ग्राउंड पर खेला जाएगा। आर्यवीर और अन्वय को सिर्फ 50 ओवर की टीम में जगह-50 ओवर की टीम की कप्तानी उत्तराखंड के बल्लेबाज लक्ष्य रायचंदानी करेंगे। मध्य प्रदेश के बल्लेबाज यशवर्धन चौहान उपकप्तान होंगे। रेड-बॉल मैच में चौहान कप्तानी संभालेंगे, जबकि रायचंदानी उपकप्तान की भूमिका में रहेंगे। लेग-स्पिन ऑलराउंडर आर्यवीर और विकेटकीपर-बल्लेबाज अन्वय को 15 सदस्यीय वनडे टीम में शामिल किया गया है। दोनों को मल्टी-डे फॉर्मेट के मैचों के लिए चुनी गई टीम में जगह नहीं मिली। भारत की अंडर-19 वनडे टीम-लक्ष्य रायचंदानी (कप्तान), यशवर्धन चौहान (उप कप्तान), रजत बघेल, आर्यवीर सहवाग, वीके विनीत, कुशाग्र ओझा, अर्जुन राजपूत, मनाल चौहान, अन्वय द्रविड़, वी यशवीर, रोहित यादव, शाविन विनोद, मोहित उल्वा, चिगुरुपति वेंकट और काव्य पटेल। मल्टी-डे टीम में आर्यवीर-अन्वय नहीं- दो मल्टी-डे मैचों के लिए भारत टीमः यशवर्धन चौहान (कप्तान), लक्ष्य रायचंदानी (उप कप्तान), सागर विर्क, कुशाग्र ओझा, मनाल चौहान, कुश पटेल, मानव कृष्णा, अभिप्राय बिस्वास, रोहित यादव, ईशान ओम, अयान अकरम, प्रणव राघवेंद्र, प्रियांशु सिंह, मोहित उल्वा और आर्यन यादव शामिल हैं।

25 साल बाद पेरेंट्स के घर लौटी हूंःयहां मन नहीं लग रहा, अपनी अकेली जिंदगी याद आती है, क्या मैं स्वार्थी हूं

नयी दिल्ली। विषय को समझेंगे एक्सपर्ट- डॉ. द्रोण शर्मा, कंसल्टेंट साइकेट्रिस्ट, दिन बातचीत करना और अपनी दिनचर्या में दूसरों को शामिल करना माता-पिता के लिए

आयरलैंड, यूके। यूके, आयरिश और जिब्राल्टर मेडिकल काउंसिल के मेंबर जी के साथ सवाल जवाब के माध्यम से। सवाल- मेरी उम्र 45 साल है। पिछले 25 सालों से मैं घर से दूर रह रही थी। पहले पढ़ाई और फिर जॉब के लिए। एक साल पहले ही मैं अपने होमटाउन में पेरेंट्स के घर में शिफ्ट हुई हूं। लेकिन जैसा मैंने सोचा था, वैसा बिल्कुल फील नहीं हो रहा। मुझे लगा था कि इतने साल बाद घर लौटना अच्छा लगेगा। ज्यादा सुकून और खुशी होगी। लेकिन इसका ठीक उल्टा हुआ है। मुझे ज्यादा तनाव और अकेलापन महसूस होने लगा है। यहां मेरा बिल्कुल मन नहीं लगता। मुझे अपनी अकेली जिंदगी की याद आती है। बेंगलुरू में मेरा घर और मेरी सिंगल लाइफ। ये बात मैं अपने पेरेंट्स से कैसे कहूं कि मुझे इस घर में रहना अच्छा नहीं लग रहा। मैं अपनी मेंटल हेल्थ को कैसे ठीक रखूं? सबसे पहले यह समझना जरूरी है कि आपकी भावनाएं गलत नहीं हैं। 25 साल तक घर से दूर रहना बहुत लंबा समय होता है। इस दौरान आपने सिर्फ पढ़ाई और नौकरी नहीं की, बल्कि अपनी पूरी जिंदगी अपने तरीके से जीना सीखा है। आपने तय किया होगा कि कब उठना है, कब खाना है, किससे मिलना है, कब घर से बाहर जाना है, छुट्टी कैसे बितानी है और कितना समय अकेले रहना है। अब एक साल से आप फिर उसी घर में हैं, जहां कभी आपकी जिंदगी की शुरुआत हुई थी। लेकिन इस बीच आप खुद बहुत बदल चुकी हैं। इसलिए घर वही होने के बावजूद आपका अनुभव पहले जैसा नहीं है। यह जरूरी नहीं कि आपका अपने माता-पिता से प्यार कम हो गया है। हो सकता है कि आपको सिर्फ अपनी पुरानी स्वतंत्र जिंदगी की कमी महसूस हो रही हो। 25 साल स्वतंत्र जीवन जीने के बाद माता-पिता के घर लौटना बड़ा बदलाव है। परिवार वही है, लेकिन व्यक्ति की आदतें, सोच और जरूरतें बदल चुकी हैं। इसलिए घर में रहते हुए घुटन या बेचैनी महसूस हो सकती है। घर लौटने की खुशी की जगह तनाव क्यों? लंबे समय तक अकेले रहने के बाद जब कोई व्यक्ति माता-पिता के साथ वापस रहने लगता है तो उसे अपनी आजादी कम होती हुई महसूस हो सकती है। माता-पिता का ये पूछना कि- 'कहां जा रही हो?' 'कब वापस आओगी?' 'खाना खाया या नहीं?' ये उनका प्यार और चिंता का तरीका हो सकता है। लेकिन इतने साल अपने फैसले खुद लेने के बाद यही बातें आपको रोक-टोक जैसी लग सकती हैं। इसी तरह परिवार के साथ खाना, हर सामान्य हो सकता है। लेकिन आपको अपने अकेलेपन और पर्सनल स्पेस की जरूरत ज्यादा महसूस हो सकती है। इसमें किसी एक को गलत ठहराने की जरूरत नहीं है। दोनों की जरूरतें अलग हो सकती हैं।घर लौटने पर तनाव की वजह पुराने नियमों में लौटना। प्राइवेसी कम होना। पेरेंट्स के सवाल टोकाटाकी। दिनचर्या बदलना। पर्सनल स्पेस कम होना हर वक्त निगरानी में रहना। परेशानी की असल वजह क्या है? पहले यह समझें कि आपको वास्तव में परेशानी किस बात से है, जैसेकि- क्या आपको अपने कमरे में पर्याप्त निजी जगह नहीं मिलती? क्या आपके आने-जाने के समय पर सवाल होता है? क्या आप अपनी पसंद के अनुसार खाना, सोना या आराम करना चाहती हैं, लेकिन ऐसा नहीं कर पातीं? क्या दोस्तों से मिलने या बाहर जाने पर आपको सफाई देनी पड़ती है? क्या आपको लगता है कि घर में रहते हुए आप फिर से बेटी की उसी भूमिका में चली गई हैं, जबकि पिछले 25 सालों में आप अपने फैसले खुद लेने वाली एक स्वतंत्र महिला बन चुकी हैं? इन सवालों के जवाब आपको असली समस्या को समझने में मदद करेंगे। खुद से पूछें ये 7 सवाल-घर में मन क्यों नहीं लग रहा? क्या पेरेंट्स टोकाटाकी करते हैं? क्या पेरेंट्स हर बात पूछते हैं? क्या बाहर जाने पर टोकते हैं? क्या पर्सनल स्पेस नहीं मिलता ? क्या अपने फैसले नहीं ले पाती ? क्या हर बात की सफाई देनी पड़ती है? क्या दोस्तों से मिलने नहीं आ सकती? माता-पिता से बात कैसे करें? सबसे जरूरी बात यह है कि माता-पिता से यह न कहें कि मुझे आपके साथ रहना अच्छा नहीं लगता। ऐसा सुनकर उन्हें लग सकता है कि आप उनके प्यार या घर को अस्वीकार कर रही हैं। इसके बजाय अपनी परेशानी को अपनी जरूरत के रूप में बताएं। पहले चिट्?ठी लिखना भी अच्छा विकल्प-अगर आपको लगता है कि आमने-सामने बात करते समय आप अपनी बात ठीक से नहीं कह पाएंगी, तो पहले माता-पिता को एक पत्र भी लिख सकती हैं। यहां मैं आपके लिए एक काल्पनिक खत लिख रहा हूं। आप इसमें अपने मन की बातें लिख सकती हैं। प्यारे मम्मी-पापा, मैं आप दोनों से एक जरूरी बात कहना चाहती हूं। शायद सामने बैठकर मैं इसे ठीक से न कह पाऊं। इसलिए पत्र लिख रही हूं। सबसे पहले मैं आपको बताना चाहती हूं कि इतने साल बाद घर लौटने पर आपने जिस तरह मुझे अपनाया, उसके लिए मैं बहुत आभारी हूं। मुझे पता है कि मेरे लिए आपके मन में बहुत प्यार है और आप चाहते हैं कि मैं आपके साथ रहूं। लेकिन पिछले 25 सालों में मेरी जिंदगी बहुत बदल गई है। मैं लंबे समय तक अकेले रही हूं। मुझे अपने समय, काम, फैसले और निजी जगह को अपने तरीके से संभालने की आदत हो गई है। घर लौटने के बाद मुझे महसूस हुआ कि मैं अपनी उस स्वतंत्र जिंदगी को बहुत याद कर रही हूं। इसका मतलब यह नहीं है कि मैं आपसे दूर होना चाहती हूं। मैं सिर्फ यह समझने की कोशिश कर रही हूं कि आपके साथ रहते हुए अपनी स्वतंत्रता कैसे बनाए रखूं। मैं चाहती हूं कि हम मिलकर कुछ बातें तय करें। जैसे हम कितना समय साथ बिताएं, मुझे कब अपने काम या अकेले रहने का समय चाहिए और किन निजी फैसलों में मुझे अपनी आजादी बनाए रखने की जरूरत है। मैं यह भी समझती हूं कि मेरे घर लौटने के बाद आपको भी अपनी दिनचर्या में बदलाव करना पड़ा होगा। इसलिए मैं सिर्फ अपनी बात नहीं रखना चाहती। मैं आपकी परेशानी भी समझना चाहती हूं। मैं घर छोड़कर आपसे दूर नहीं जाना चाहती। मैं ऐसा रास्ता ढूंढना चाहती हूं, जिसमें हमारा रिश्ता भी अच्छा रहे और मैं अपनी स्वतंत्र पहचान भी बनाए रखूं। प्यार के साथ। घर में तय करें कुछ स्पष्ट सीमाएं-माता-पिता के साथ रहने का मतलब यह नहीं है कि आपकी सारी स्वतंत्रता खत्म हो जाए। आप मिलकर कुछ ऐसी बातें तय कर सकते हैं, जिनसे दोनों पक्ष सहज रहें। मसलन-आपके कमरे में आने से पहले दरवाजा खटखटाया जाए। आपके काम के समय में आपको परेशान न किया जाए। दोस्तों से मिलने या बाहर जाने के लिए हर बार इजाजत लेने की जरूरत न हो। हर दिन कुछ वक्त आपको अकेले रहने के लिए मिले। इसी तरह हर मील साथ लेना भी जरूरी न हो। आप कुछ समय परिवार के साथ बिताएं और कुछ समय अपनी पसंद से। लेकिन सीमाएं तय करते समय सिर्फ अपनी सुविधा के बारे में न सोचें। माता-पिता की भी अपनी दिनचर्या है। 25 सालों में उन्होंने भी अपने घर को अपने तरीके से चलाया होगा। इसलिए उनसे भी यह पूछें– 'मेरे यहां रहने से आपको किन बातों से परेशानी हो रही है?' इस सवाल से बातचीत एकतरफा नहीं रहेगी। दोनों पक्ष अपनी जरूरतें समझा पाएंगे। अपनी सीमाएं तय करना दूरी बनाना नहीं है।

स्वस्थ रिश्ते में दोनों पक्षों की जरूरतों का सम्मान होना चाहिए। वयस्क बच्चे को पर्सनल स्पेस चाहिए, वहीं माता-पिता को भी अपने घर और दिनचर्या में सहज रहने का अधिकार है। अपनी मेंटल के लिए क्या करें? सबसे पहले खुद को दोष देना बंद करिए। यह मत सोचिए कि 'मुझे तो खुश होना चाहिए, फिर मैं दुखी क्यों हूं?' भावनाएं इस तरह काम नहीं करतीं। अपनी पुरानी जिंदगी की वे चीजें वापस अपनी दिनचर्या में शामिल करें, जिनसे आपको अच्छा महसूस होता था। दोस्तों से मिलें, अकेले बाहर जाएं, टहलें, एक्सरसाइज करें, पढ़ें या अपने किसी पुराने शौक के लिए समय निकालें। सबसे जरूरी है कि आपकी पूरी जिंदगी सिर्फ घर और माता-पिता के इर्द-गिर्द न सिमट जाए। आपकी अपनी सामाजिक जिंदगी, काम, दोस्त, रुचियां और निजी समय भी जरूरी है। चार से छह सप्ताह तक कुछ बदलाव करके देखिए। फिर खुद से पूछिए- क्या अब मैं बेहतर महसूस कर रही हूं? क्या मुझे अभी भी अलग रहने की उतनी ही जरूरत महसूस हो रही है? अगर बदलावों के बाद भी लगातार उदासी बनी रहे, किसी काम में मन न लगे, नींद या भूख में बड़ा बदलाव आए, बहुत ज्यादा चिंता हो, रोजमर्रा के काम प्रभावित होने लगें या जीवन को लेकर निराशा बढ़ने लगे, तो काउंसिलर से बात करना सही रहेगा। मेंटल हेल्थ के लिए क्या करें? खुद को दोष न दें, भावनाओं को स्वीकार करें। रोज़ थोड़ा समय अकेले बिताएं। अपना पुराना रुटीन फॉलो करें। अपने दोस्तों से जुड़े रहे। अपनी पसंद का काम करें। पेट्स से बात करे।अंतिम बातः-आखिर में एक बात याद रखिए, माता-पिता से प्यार करने और उनके साथ न रह पाने की इच्छा, दोनों बातें एक साथ सच हो सकती हैं। आपको अपने माता-पिता और अपनी स्वतंत्र जिंदगी में से किसी एक को चुनने की जरूरत नहीं है।शायद आपको घर छोड़ने या खुद को बदलने से पहले एक नया तरीका खोजने की जरूरत है– माता-पिता के साथ एक वयस्क बेटी की तरह रहना, न कि 25 साल पहले वाली बेटी की तरह।इससे रिश्ता भी बचेगा, अपनापन भी बना रहेगा और आपकी स्वतंत्र जिंदगी भी रहेगी।

जरूरत से ज्यादा जांचें और दवाइयां भी अपने आप में एक बीमारी हैं

हाल ही में दो खबरें सामने आईं। पहली यह थी कि भारत के लगभग दस में से नौ वयस्कों में कोलेस्ट्रॉल या अन्य लिपिड

का स्तर सामान्य सीमा से ऊपर या नीचे है। दूसरी खबर अमेरिका से आई, जहां ऐसी नई दवाई को मंजूरी मिली है, जो एलडीएल कोलेस्ट्रॉल को 60फीसदी तक घटा सकती है। यह महज संयोग हो सकता है, लेकिन यह एक असुविधाजनक प्रश्न भी उठाता है : क्या किसी बीमारी का बोझ हमें तभी याद दिलाया जाता है, जब उसके इलाज के लिए नया बाजार तैयार होता है? मोटापा घटाने वाली दवाओं का हालिया अनुभव इसका स्पष्ट उदाहरण है। मोटापा वर्षों से बढ़ रहा था। लेकिन नई दवाओं के आते ही मोटापा चिकित्सा और मीडिया की सबसे चर्चित समस्याओं में शामिल हो गया। इससे जागरूकता तो बढ़ी, पर वजन को दवा से ठीक होने वाली बीमारी बना दिया गया। शारीरिक निष्क्रियता, तनाव, प्रोसेस्ड फूड जैसे मूल कारण पीछे छूट गए। भारत में हृदय रोग, मधुमेह, मोटापा और फैटी लिवर बढ़ रहे हैं। हमारी जीवनशैली में बैठना बढ़ा है, चलना घटा है और भोजन में चीनी, मैदा तथा प्रोसेस्ड फूड बढ़े हैं। पिछले कुछ सालों में लिपिड और कोलेस्ट्रॉल उपचार के लक्ष्य लगातार नीचे आए हैं। अधिक जोखिम वाले मरीजों के लिए एलडीएल कोलेस्ट्रॉल को 55 मिलीग्राम प्रति डेसीलीटर से नीचे रखने की सलाह दी जाती है। इससे पहले यह सीमा 70 थी। नई दवा एलडीएल कोलेस्ट्रॉल को 56 से 59फीसदी तक घटा सकती है। लेकिन हर मरीज को इसकी जरूरत नहीं है। यह उनके लिए महत्वपूर्ण हो सकती है, जिन्हें पहले हृदयाघात हो चुका है, जिनका हृदय जोखिम अधिक है या जिन्हें आनुवंशिक रूप से अत्यधिक कोलेस्ट्रॉल रहता है। इसी समय आईसीएमआर-इंडिया अध्ययन के परिणाम भी आए। यह अध्ययन भारत के 23,665 वयस्कों पर आधारित था और इसमें पाया गया कि 87.3फीसदी लोगों में लिपिड से जुड़ी कम से कम एक असामान्यता थी। यहां यह समझना जरूरी है कि इसका अर्थ यह नहीं कि लगभग 90फीसदी भारतीयों का खराब कोलेस्ट्रॉल खतरनाक स्तर पर है या उन्हें दवा शुरू कर देनी चाहिए। इसमें वो लोग भी शामिल हैं, जिनका एचडीएल लेवल कम है। यह अच्छा कोलेस्ट्रॉल माना जाता है लेकिन इसको बढ़ाने की दवा नहीं आती है। यह सिर्फ अच्छी और स्वस्थ दिनचर्या से ही बढ़ सकता है। समस्या तब शुरू होती है, जब उपचार से हासिल किए जाने वाले लक्ष्य पूरी आबादी के लिए सामान्य मान लिए जाते हैं। जैसे ही इलाज का लक्ष्य बदला जाता है, लाखों लोग अचानक उस श्रेणी में आ जाते हैं, जिन्हें दवा दिए जाने योग्य माना जाता है। जबकि उनके शरीर में रातोंरात कोई नया नुकसान नहीं हुआ होता। इसे मेडिकलाइजेशन कहते हैं। इसका मतलब है कि किसी जोखिम, शारीरिक भिन्नता या जीवनशैली की समस्या को ऐसी बीमारी में बदल दिया जाए, जिसके लिए लगातार जांच और दवा जरूरी मानी जाने लगे। इसका अर्थ यह नहीं कि कोलेस्ट्रॉल की दवाएं बेकार हैं। असली प्रश्न यह है कि दवा किसे और कितने समय तक चाहिए। एक ओर करोड़ों लोगों को जरूरी उपचार नहीं मिलता, वहीं सम्पन्न वर्ग में जरूरत से अधिक जांच और दवाएं बढ़ रही हैं। थोड़े बढ़े एलडीएल वाला स्वस्थ युवा और हृदयाघात झेल चुका व्यक्ति एक जैसे मरीज नहीं हो सकते। जीवनशैली से पैदा बीमारियों का समाधान गोलियों से नहीं होगा। हमें बेहतर भोजन, सक्रिय जीवन और मजबूत प्राथमिक स्वास्थ्य-सेवाएं चाहिए। समझदार मरीज दवा से इनकार नहीं करता; वह दवा की जरूरत, लाभ और अवधि पर प्रश्न पूछता है और सोच-समझकर निर्णय लेता है। (ये लेखक के अपने विचार हैं, डॉ. चन्द्रकान्त लहारिया)

सोशल बफर्स के तौर पर बॉट्स का इस्तेमाल 'सेल्फ मिसट्रस्ट' की महामारी

अजय रिसर्चर के तौर पर अपने काम में एआई का इस्तेमाल करता है। लेकिन लैब से बाहर भी एआई टूल उसका कन्वर्सेशन-कोच बन गया है। वह ईवनिंग

पार्टियों में बातचीत की शुरुआती लाइनें और मेहमानों व दोस्तों को विश करने के आइडिया लिखने में भी उसकी मदद लेता है। जब वह पूछता है कि यदि कोई ऐसा मुश्किल सवाल पूछ ले कि 'शादी कब कर रहे हो?' तब भी सामने वाले को जवाब देने में एआई उसकी मदद करता है। मान लीजिए बातचीत किसी ऐसी किताब या आर्टिकल पर पहुंच गई, जिसके बारे में अजय को जानकारी नहीं है तो वह तुरंत एआई से समरी मांग लेता है। जब तक एआई समरी बनाता है, उन पलों में अजय एक लाइन कहता रहता है कि 'मैं कभी-कभी पढ़ता हूं।' ऐसा नहीं कि अजय खुद नहीं सोच सकता, लेकिन एआई चीजों को थोड़ा आसान बना देता है। 20 वर्षीय अजय युवाओं की तेजी से बढ़ती उस जमात का हिस्सा है, जो बेहद इंसानी कामों को भी एआई से करवा रहे हैं। छोटी-बड़ी सोशल एंग्जायटी से जूझ रहे कई युवा अजय की तरह ही आमने-सामने की मुलाकात से पहले एआई की मदद लेते हैं। सामान्य व्हाट्सएप चैट में भी अब बॉट-जनरेटेड मैसेज दिखने लगे हैं, लेकिन इस उम्र के रोमांटिक पार्टनर्स के बीच इनकी संख्या काफी है। अचानक उनके टेक्स्ट सटीक ग्रामर वाले हो जाते हैं। जबकि सामने वाला जानता है कि यह वही व्यक्ति है, जो साधारण लाइनें भी पांच गलतियों के बगैर नहीं लिख पाता था। कई रिश्ते तो मजबूत बनने से पहले ही टूटने लगे हैं। एक पार्टनर चाहता है कि बातचीत थोड़ा विस्तार लिए हो, क्योंकि अपनापन उसी इनफॉर्मेलिटी से आता है। यह परफेक्शन इसलिए आती है, क्योंकि चैटबॉट्स इंसानी भाषा के पैटर्न को जोड़कर वाक्य बनाते हैं। मैं एक ऐसी लड़की को जानता हूं, जिसने अपनी रिलेशनशिप इसलिए खत्म कर दी, क्योंकि उसे लगा कि जिस लड़के को वह डेट कर रही थी, वह इतना आलसी और अनरोमांटिक है कि उसने उनकी बातचीत को भी एआई को सौंप दिया। ब्लॉक करने से पहले उसने अपने आखिरी मैसेज में कहा कि 'अजीब है कि तुम्हारे प्यार के शब्द भी अपने नहीं, एआई जनरेटेड हैं।' स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी स्कूल ऑफ मेडिसिन में क्लिनिकल साइकोलॉजिस्ट एशली गोल्डन कहती हैं कि 'यह दोनों पक्षों के लिए नुकसानदायक है। चैटबॉट्स का उद्देश्य प्रोडक्टिविटी बढ़ाना था, रिलेशनशिप बनाना नहीं।' अगर आप ऐसे युवा हैं, जो अपना हर टेक्स्ट एआई से जंचवा रहे हैं तो आप खुद को यही सिखा रहे हैं कि आपकी अपनी समझ भरोसे लायक नहीं। यह बात खासतौर पर उन लोगों पर ज्यादा लागू होती है, जिन्हें सोशल एंग्जायटी रहती है। गोल्डन मानती हैं कि एआई लोगों को सोशल मिसस्टेप्स की पीड़ा से बचा सकता है, लेकिन यह राहत अस्थायी होती है। धीरे-धीरे यही टूल बैसाखी बन जाता है और लोग खुद के फैसलों पर ही कम भरोसा करने लगते हैं।आज कई एग्जीक्यूटिव्स जब मैनेजमेंट के नोटिस का गुस्से भरा रिप्लाई लिखते हैं तो उसे एआई से सुधारने की कोशिश करते हैं। पहले मन के भाव लिखना और फिर उन्हें एआई के जरिए भाषा में ढालना रिसीवर को थोड़ा उलझन में डाल देता है। भाषा भले बेहतर हो जाती हो, लेकिन पत्र में भावनाएं कोई स्पष्ट रुख नहीं दर्शातीं। कई बार दोस्तों से आमने-सामने की बातचीत के लिए एआई का सहारा लेना युवाओं पर उल्टा भी पड़ चुका है और बाद में गोल्डन ने उनकी काउंसलिंग की। एक्सपर्ट्स का कहना है कि किसी मुश्किल बातचीत की तैयारी के लिए एआई का इस्तेमाल सही है, लेकिन पूरी बातचीत उसी के भरोसे नहीं होनी चाहिए। एआई यह बता सकता है कि क्या कहना है, लेकिन कैसे कहना है यह हर व्यक्ति को खुद सीखना होगा। विशेषज्ञों का सुझाव है कि बड़े इवेंट्स या क्लाइंट्स के जवाब तैयार करने तक तो एआई का इस्तेमाल ठीक है, लेकिन इमोशनल बातचीत की स्क्रिप्ट लिखवाना बैकफायर कर सकता है। क्योंकि वह आपके कैरेक्टर से मेल नहीं खाता। फंडा यह है कि अगर आप अपनी जिंदगी की हर चीज एआई से पॉलिश कराएंगे तो धीरे-धीरे अपनी ही आवाज पर भरोसा खो सकते हैं। एन. रघुरामन

हमें दुनिया को अपनी सभ्यता की बेहतर कहानी सुनानी होगी

मुझे दुनिया की विभिन्न सभ्यताओं से जुड़े महानतम संग्रहालयों को देखने का मौका

मिला है। हाल ही में जब मैंने गीजा के पिरामिड, एथेंस के एक्रोपोलिस और भूमध्यसागर के किनारे पर बने बिब्लियोथेका अलेक्जेंड्रिना (पुस्तकालय) को देखा तो वहां के ऐतिहासिक महत्व को देखकर अभिभूत रह गया। गीजा के ग्रैंड इजिप्शियन म्यूजियम में विश्वस्तरीय संरक्षण, सुचिंतित डिजाइन और जीवंत कहानियों के जरिए मिस्र की पांच हजार वर्ष पुरानी सभ्यता से जुड़े एक लाख से अधिक पुरावशेष संग्रहित हैं। इनमें तूतनखामुन के मकबरे का खजाना भी है। एक्रोपोलिस में कांच के फर्श के नीचे प्राचीन बसावट को देखा जा सकता है, जो खुदाई में मिली थी। बिब्लियोथेका में ज्ञान को संरक्षित रखने के लिए किया गया निवेश स्पष्ट नजर आता है। भारत की सभ्यतागत विरासत भी इतनी ही समृद्ध है। हमारे पास सिंधु घाटी के सुनियोजित शहरों से लेकर स्मारकों, पांडुलिपियों, मंदिरों, किलों और पुरावशेषों तक दुनिया की बेहद समृद्ध ऐतिहासिक धरोहरें हैं। लेकिन जब भी मेरी डेस्क पर पर्यटन या शहरी विकास से जुड़े बड़े प्रोजेक्ट की कोई फाइल आती तो वह एक ही समस्या में जाकर उलझ जाती थी।

हमारे पास कहानियां तो बहुत हैं, लेकिन उन्हें कहने वाले पर्याप्त संस्थान नहीं हैं। हमारे सबसे अच्छे पुरावशेष संग्रहालयों में ही कैद हैं। मसलन, कोलकाता के इंडियन म्यूजियम में कला, पुरातत्व और प्राकृतिक इतिहास से जुड़ी 25 लाख वस्तुएं हैं, नई दिल्ली के नेशनल म्यूजियम में दो लाख से अधिक पुरावशेषों का संग्रह है, लेकिन इनका एक छोटा-सा हिस्सा ही प्रदर्शित किया जाता है। इसमें भी समसामयिक डिजाइन, लाइटिंग और इंटरप्रिटेटिव मीडिया का सीमित ही उपयोग है। दरअसल, हमने उतनी महत्वाकांक्षा के साथ कभी हमारे इन संस्थानों में निवेश किया ही नहीं, जो हमारी महान विरासत को सहेजने, उनकी व्याख्या करने और इसे देश-दुनिया को बताने का काम करते हैं। हमारे म्यूजियम, आर्काइव्स और साइट इंटरप्रिटेशन सेंटर अपार संभावनाओं से भरे हैं, लेकिन उन्हें गंभीर संरक्षण, बेहतर क्यूरेशन, मजबूत डिजाइन और ज्यादा कल्पनाशीलता की जरूरत है। तभी वे उस सभ्यता के अनुरूप बन पाएंगे, जिसका वे प्रतिनिधित्व करते हैं। नॉर्थ-साउथ ब्लॉक को राष्ट्रीय संग्रहालय में बदलने की योजना इस बात का प्रतीक है कि संस्कृति राष्ट्र की मूल पहचान से जुड़ा मसला है। इसे दुनिया के सबसे बड़े संग्रहालयों में से एक बनाने की योजना है। इसमें इमर्सिव डिजाइन और डिजिटल माध्यमों से हजारों वर्षों की भारतीय सभ्यता की यात्रा बताई जाएगी। उम्मीद है कि अगले तीन वर्षों में कंटेंट टीमें आठ थीम आधारित क्षेत्रों में लगभग 30 दीर्घाएं विकसित करेंगी। केंद्रीय संग्रहालयों, एएसआई की साइटों और राज्यों के संग्रहालयों से 80 हजार से एक लाख तक पुरावशेष यहां लाए जाएंगे। इन्हें प्राचीन इतिहास और ज्ञान-परंपराओं से लेकर आधुनिक भारत तक की यात्रा के क्रम में व्यवस्थित किया जाएगा। अब तक सत्ता के केंद्र कहे जाने वाले नॉर्थ और साउथ ब्लॉक की पहचान अब महज दफ्तरों और औपचारिक आयोजनों से नहीं, बल्कि ऐसे स्थान के तौर पर होगी, जहां राष्ट्र को सुव्यवस्थित स्मृतियों के जरिए देखा जा सकता है। यहां सिंधु घाटी के शहर, ज्ञान-परंपराएं, कोणार्क के सूर्य-रथ, चोलकालीन कांस्य प्रतिमाएं और संविधान से जुड़े दस्तावेज तक प्रदर्शित किए जाएंगे। स्पष्ट मानक तय किए जाएं तो रायसीना हिल की प्रत्येक गैलरी दुनिया के प्रमुख संग्रहालयों की बराबरी कर सकती है। यदि हम वाराणसी, हम्पी या जयपुर जैसे शहरों में भी ऐसे संग्रहालय विकसित करें, जो संरक्षण, डिजाइन और सेवाओं के मामले में विश्वस्तरीय मानकों पर खरे हों तो भारत खुद को वैश्विक पर्यटन सर्किट में स्थापित कर सकता है। पर्यटक आज आर्ट हॉलिडे, प्राइवेट म्यूजियम टूर और क्यूरेटेड यात्रा कार्यक्रमों पर काफी पैसा खर्च कर रहे हैं। सांस्कृतिक अनुभव देने वाली यात्राएं लग्जरी ट्रैवल ट्रेंड में अपना अहम स्थान बनाए हुए हैं। ऐसे में हम मौका न चूकें। (ये लेखक के अपने विचार हैं, अमिताभ कांत)

भारतीय युवाओं के सामने उभरती चुनौतियां

लेखक - श्री अमरनाथ सक्सेना, चीफ टेक्निकल ऑफिसर - कमर्शियल, बजाज जनरल इंश्योरेंस लिमिटेड (पूर्व नाम बजाज आलियांज़ जनरल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड)

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) भारत की 26फीसदी आबादी ऐसे लोगों की है जिनकी उम्र 15 से 29 साल के बीच है। भारत को इस बात पर गर्व है कि उसके पास युवा प्रतिभाओं की भरमार है। ये युवा डिजिटल तौर-तरीकों को अच्छी तरह से समझते हैं, वे महत्वाकांक्षी हैं और कुछ नया प्रयोग करने से लेकर नए क्षेत्रों में कदम रखने से वे हिचकिचाते नहीं हैं। वे हमारे देश को विकास के अगले स्तर तक ले जाने के लिए पूरी तरह से तैयार हैं। हालांकि इन उम्मीदों के साथ उन्हें कुछ नए तरह के जोखिमों से दो-चार होना पड़ रहा है, जिसका सामना पिछली पीढ़ी ने कभी नहीं किया था। साइबर धोखाधड़ी करने वाले अपराधी ऑनलाइन ट्रेडिंग अकाउंट को हैक कर सकते हैं, और जो शॉपिंग वेबसाइटें बेहद सुरक्षित और भरोसेमंद दिखाई देती हैं, वहां भी लोग ठगी का शिकार बन सकते हैं। इससे आर्थिक सुरक्षा के लिए खतरा पैदा हो सकता है और यह एक गंभीर समस्या का रूप भी धारण कर सकती है। इसका असर केवल आर्थिक नुकसान तक ही सीमित नहीं रहता, बल्कि इसकी वजह से लोगों को गंभीर तनाव से गुज़रना पड़ता है, उनका मानसिक संतुलन बिगड़ता है और उन्हें चिंताजनक मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं का भी सामना करना पड़ता है। इतना ही नहीं, लंबे समय तक स्क्रीन के सामने बैठकर काम करने से लोगों में जीवनशैली से जुड़ी बीमारियां बढ़ रही हैं। वर्ष 2025 में भारत में 7फीसदी से अधिक ग्राहकों के साथ डिजिटल लेन-देन के दौरान धोखाधड़ी करने की कोशिश की गई, जो कि वैश्विक दर की तुलना में दोगुनी रही। डिजिटल खतरों में बढ़ोत्तरी- आज के दौर में स्मार्टफोन और टैबलेट शिक्षा, मनोरंजन से लेकर लोगों से संपर्क बनाने और यहां तक कि करियर बनाने की दिशा में भी अहम भूमिका निभा रहे हैं। रिपोर्टों के अनुसार 15 से 29 साल की उम्र के जिन लोगों के पास मोबाइल है, उनमें से 95.5फीसदी लोग ग्रामीण क्षेत्रों से आते हैं, जबकि शहरों में इसी उम्र के 97.6फीसदी लोगों के पास अपना स्मार्टफोन है। गौरतलब है कि जहां टेक्नोलॉजी ने भारतीय युवाओं को सशक्त बनाया है, वहीं इसकी वजह

से वे गंभीर जोखिमों के प्रति असुरक्षित भी बन गए हैं। साइबर धोखाधड़ी जैसे कि पहचान चुराना, फिशिंग अटैक और वित्तीय धोखाधड़ी जैसे अपराध दिनोंदिन बढ़ते ही जा रहे हैं। युवा लोग जो अक्सर ऑनलाइन लेन-देन करते हैं, डिजिटल प्लेटफॉर्म के ज़रिए निवेश करते हैं और कई पेमेंट एप्लीकेशन का इस्तेमाल करते हैं, यहां वे अक्सर साइबर अपराधों की वजह से होने वाले आर्थिक नुकसान को गंभीरता से नहीं लेते हैं। राष्ट्रीय साइबर अपराध रिपोर्टिंग पोर्टल (एनसीआरपी) के अनुसार वर्ष 2021 से जून 2025 तक के बीच 65.9 लाख शिकायतें प्राप्त हुईं। ये आंकड़े दर्शाते हैं कि भारत में न केवल साइबर खतरों से जुड़े मामलों में वृद्धि हुई है, बल्कि ये मामले तेज़ी से बढ़ भी रहे हैं। सिर्फ एक साइबर घटना आपको भारी आर्थिक नुकसान पहुंचाने, कानूनी दिक्कतों में डालने और भावनात्मक रूप से तोड़ने के लिए काफी हो सकती है। कई युवा नौकरीपेशा लोग इस बात से अनजान होते हैं कि भारत में अब लोगों के लिए खास साइबर इंश्योरेंस पॉलिसियां उपलब्ध हैं। ये पॉलिसियां अनधिकृत डिजिटल लेन-देन, ऑनलाइन शॉपिंग धोखाधड़ी, पहचान चुराना, ऑनलाइन वसूली और साइबर खतरों से प्रभावित हुए डिजिटल उपकरणों को ठीक करने में होने वाले खर्चों के लिए आर्थिक मदद पेश करती हैं। जैसे-जैसे डिजिटल जीवनशैली हमारी ज़िंदगी का हिस्सा बनती जा रही है, वैसे-वैसे युवा पीढ़ी के लिए साइबर इंश्योरेंस भी हेल्थ इंश्योरेंस जितना ज़रूरी बनते जा रहा है। साइबर अपराधी युवाओं को कई तरह से ठगी का शिकार बना सकते हैं, इसलिए साइबर खतरों से बचने के लिए आपके पास साइबर इंश्योरेंस का होना बेहद ज़रूरी है। साइबर अपराध और उसे अंजाम देने के तरीके:-जब ऑनलाइन शॉपिंग की बात आती है, तो विभिन्न सोशल मीडिया साइटों पर हमें तरह-तरह के विज्ञापन दिखते हैं और ये युवाओं को खासतौर पर आकर्षित करते हैं, क्योंकि इन पर ज़बरदस्त सेल ऑफर नज़र आता है। कई विज्ञापनों में तो ऐसे लुभावने प्रोडक्ट होते हैं, जो युवाओं को लगातार अपनी ओर आकर्षित करते हैं। उसके बाद जैसे ही खरीदार भुगतान कर देते हैं, वैसे ही फर्जी विक्रेता गायब हो जाते हैं। बाद में उनकी ऑनलाइन मौजूदगी का कोई नामोनिशान तक नहीं मिलता। इस तरह की धोखाधड़ी करने वालों को ढूंढने की सारी कोशिशें नाकामयाब हो जाती हैं और खरीदार को अपने पैसे गंवाने पड़ते हैं। कुछ मामलों में ऐसे विज्ञापनों की लिंक पर टैप या क्लिक करने से आपके मोबाइल पर मैलवेयर इंस्टॉल हो सकता है, जिसकी वजह से आपकी पहचान चुराई जा सकती है और यहां तक कि लोगों के पैसों की डिजिटल चोरी हो सकती है और वे ऑनलाइन वसूली का शिकार भी बन सकते हैं। युवाओं को इस बात की भी सावधानी बरतनी चाहिए कि ऑनलाइन लिंक में छिपा मैलवेयर उनके डिवाइसों को खराब कर सकता है। व्यक्तिगत साइबर पॉलिसी लोगों को कई तरह के कवर पेश करती है, जो कि उपरोक्त घटनाओं की वजह से होने वाले आर्थिक नुकसान से सुरक्षा प्रदान करती है। जहां ऑनलाइन शॉपिंग कवर फर्जी शॉपिंग वेबसाइट या ऐप पर की गई खरीदारी से हुए आर्थिक नुकसान से सुरक्षा पेश करता है, वहीं डेटा रिस्टोरेशन कवर मैलवेयर हमले के बाद डिवाइस को सुरक्षित रखने और उसे पुरानी स्थिति में वापस लाने के लिए आईटी पेशेवरों पर होने वाले खर्चों से आपको बचाता है। स्वास्थ्य संबंधी विकार और इंश्योरेंस की अहमियत- आज के भारतीय युवा जिस चुनौती का सामना कर रहे हैं, वह है जीवनशैली से जुड़ी बीमारियां। हाल के अध्ययन पुष्टि करते हैं कि भारतीय युवाओं में डायबिटीज़, कार्डियक अरेस्ट जैसे मामले तेज़ी से बढ़ रहे हैं, जबकि पहले ये बीमारियां अधेड़ उम्र के लोगों को होती थीं। हाल की रिपोर्टों के अनुसार लगभग 18-40 साल की उम्र के 18फीसदी लोग डायबिटीज़ से जूझ रहे हैं, जबकि 25फीसदी लोग प्री-डायबिटीक हैं। इससे यह बात पता लगती है कि पहले डायबिटीज़ को अधेड़ उम्र में होने वाला रोग माना जाता था, लेकिन अब यह विचारधारा बदल रही है। अध्ययन दर्शाते हैं कि 40 साल से कम उम्र के लोगों में कार्डियक के मामले बढ़ रहे हैं, जो कि गंभीर चिंता का विषय है।इन बीमारियों के बढ़ते मामलों को देखते हुए, युवाओं के लिए बेहद ज़रूरी है कि वे अपने लिए एक ज़बरदस्त हेल्थ इंश्योरेंस पॉलिसी ज़रूर चुनें। और तो और युवाओं के लिए यह भी ज़रूरी है कि वे इसे कम से कम उम्र में लें, ताकि सेहतमंद रहते हुए वे पॉलिसी की प्रतीक्षा अवधि पूरी कर लें। इससे यह बात भी पक्की हो जाएगी कि उन्हें फटाफट कवरेज मिलेगा और जब उन्हें इसकी सबसे ज़्यादा ज़रूरत होगी, तब वे इसे अच्छी तरह से इस्तेमाल कर पाएंगे। जब भी हेल्थ इंश्योरेंस चुनने की बात आए, तो सूझबूझ के साथ ऐसी पॉलिसी लें जिसमें ओपीडी कवर शामिल हो। इस तरह का कवर मामूली बीमारी/विकार के इलाज के लिए खासतौर पर फायदेमंद है, जिसमें आपको अस्पताल में भर्ती होने की ज़रूरत नहीं होती और डॉक्टर की सलाह और बताई गई दवाइयों से आसानी से इलाज हो सकता है। इसके अलावा, एक और चुनौती जिसका यह देश सामना कर रहा है वह है कैंसर और दिल से जुड़ी बीमारियों में आ रही तेज़ी। इसी के मद्देनज़र बेहतर है कि आप क्रिटिकल इलनेस पॉलिसी कवर का चयन करें। यह एक लाभ-आधारित पॉलिसी है, जिसमें कैंसर, कार्डियक सर्जरी के साथ-साथ कई दूसरी बीमारियों का पता लगने पर आपको एकमुश्त राशि प्रदान की जाती है।

नागरिकों की जान बराबर तो फिर मुआवजों में अंतर क्यों?

अब जब धर्मेंद्र प्रधान ने अपने पद से इस्तीफा दे दिया है और प्रदर्शनकारी छात्रों के खिलाफ दर्ज एफआईआर भी रद्द की गई हैं तो कॉकरोच जनता पार्टी द्वारा पेपर-लीक से

आत्महत्या करने वाले 21 छात्रों को एक करोड़ रुपए के मुआवजे की मांग अटक सकती है। रेप विक्टिम, एसिड अटैक, सीवर लाइन में मौत, साइबर फ्रॉड जैसे मामलों में मुआवजे के लिए सुप्रीम कोर्ट के फैसले हैं। दुर्घटना में घायल होने वालों और मृतकों के मुआवजे के लिए कानून हैं। वीडियो मैसेज में प्रधानमंत्री ने युवाओं के आक्रोश को स्वीकारा है। अन्याय और कुशासन के खिलाफ जेन-जी के आंदोलन को गवर्नेंस में बेहतरी और सरकारी जवाबदेही से नियंत्रित किया जा सकता है। संविधान में नागरिकों को समान अधिकार हैं और एक देश एक कानून के नारे पर जोर है। ऐसे में तंत्र की विफलता और अन्याय से पीड़ित लोगों को समान मुआवजा देने की अपेक्षा से जुड़े 4 पहलुओं को समझें:- 1. राहुल गांधी ने पिछले 10 सालों में 152 परीक्षाओं में पेपर-लीक का आरोप लगाया है। इसका सामना करने के बजाय भाजपा नेता विपक्ष-शासित राज्यों में परीक्षा माफिया के खिलाफ कार्रवाई की मांग कर रहे हैं। एक रिपोर्ट के अनुसार 2014 से 2024 के दौरान लगभग 1.23 लाख छात्रों ने अलग-अलग कारणों से आत्महत्या की थी। ऐसे में क्या सभी मामलों में एक करोड़ रुपए का मुआवजा दिया जाएगा? 2. सांड के हमले से मृत एक व्यक्ति के परिवार को हाईकोर्ट जज ने 29.32 लाख मुआवजा दिलवाने का आदेश दिया था, जिसे डिवीजन बेंच ने रद्द कर दिया। दुर्घटना के 20 साल बाद, सुप्रीम कोर्ट में जस्टिस करोल की पीठ ने मानवीय आधार पर 15 लाख रुपए मुआवजा देने का फैसला दिया। दूसरे मामले में जस्टिस उज्जल भुइयां की पीठ ने सड़क दुर्घटना में घायल 6 महीने की बच्ची के लिए मुआवजे को 45.40 लाख से बढ़ाकर 83.38 लाख कर दिया। उनके अनुसार मानवीय गरिमा और जीवन के अधिकार के प्रति जजों को संवेदनशील रहना चाहिए। एक रिपोर्ट के अनुसार महानगरों में 58 फीसदी से ज्यादा सड़क हादसे आवारा कुत्तों और मवेशियों की वजह से हो रहे हैं। तब तो मवेशियों की वजह से घायल, मरने वालों और फसल नुकसान के सभी मामलों में भी पीड़ितों और किसानों को मुआवजा मिलना चाहिए। 3. सरकारी आंकड़ों के अनुसार कोरोना से लगभग 4.5 करोड़ लोग बीमार हुए और 5.33 लाख मौतें हुईं। 2015 के कानून में बाढ़, सूखा और भूकम्प जैसी आपदा में मरने वालों के परिजनों के लिए 4 लाख के मुआवजे का प्रावधान किया गया था। कोरोना संकट से निपटने के लिए आपदा प्रबंधन कानून लागू हुआ था, लेकिन उसके अनुसार मुआवजा नहीं मिला। 2020-21 के लॉकडाउन की वजह से 989 मृतकों को भी मुआवजा नहीं मिला। खबरों के अनुसार नोटबंदी के दौरान 105 लोग मरे थे, पर उन्हें भी मुआवजा नहीं मिला। पानी-हवा के प्रदूषण से मरने वालों को मुआवजे के लिए व्यावहारिक कानून नहीं हैं। 4. पुलिस लॉकअप में आधे घंटे की अवैध हिरासत के मामले में 2023 में दिल्ली हाईकोर्ट ने 50 हजार रुपए मुआवजे का आदेश दिया था। सजा खत्म होने के बावजूद जेल में रखने के मामले में 2022 में मध्य प्रदेश हाईकोर्ट ने 3 लाख रुपए मुआवजे का आदेश दिया था। दिल्ली सरकार की योजना के अनुसार जेल में अप्राकृतिक मौत (फांसी लगाकर या उत्पीड़न से) पर 7.5 लाख का मुआवजा मिलेगा। जेलों में बंद दो तिहाई कैदी वंचित वर्ग से हैं। ऐसे लाखों लोगों को मुकदमे में रिहाई के बावजूद गैर-कानूनी गिरफ्तारी के लिए मुआवजा नहीं मिलता। केंद्र सरकार और सुप्रीम कोर्ट के फैसलों को पूरे देश में लागू करवाने की खासी जरूरत है। कोरोना संकट से निपटने के लिए आपदा प्रबंधन कानून लागू हुआ था, लेकिन उसके अनुसार मुआवजा नहीं दिया गया है। 2020-21 के कोविड लॉकडाउन की वजह से 989 मृतकों को भी मुआवजा नहीं मिला है। (ये लेखक के अपने विचार हैं,विराग गुप्ता)

नेपाल बाढ़- 472 लोगों की मौत की पुष्टि, 1500 अभी भी लापता, 290 भारतीयों की तलाश जारी

काठमांडू।नेपाल सेना ने आपदा प्रभावित इलाकों में फंसे 1,024 विदेशी नागरिकों को सुरक्षित निकाल लिया है। बचाव दल अब भी लोगों को सुरक्षित जगह पहुंचाने, क्षतिग्रस्त बुनियादी ढांचे का जायजा लेने और टूटी सड़कों-पुलों के कारण बाकी इलाकों से कट चुके लोगों तक पहुंचने में जुटे हैं। नेपाल में विनाशकारी बाढ़ और भूस्खलन के बाद कई इलाकों में हालात अब भी गंभीर हैं। बड़ी संख्या में लोगों के फंसे होने और सड़कों-पुलों के टूटने से राहत और बचाव अभियान में मुश्किलें आ रही हैं। नेपाल में बाढ़ की वजह से त्रिशूली-3ए हाइड्रोपावर प्रोजेक्ट की सुरंग में करीब 100 लोग फंसे हुए हैं। नेपाली सेना की हेलिकॉप्टर रेस्क्यू टीमें उन्हें बाहर निकालने की कोशिश कर रही हैं। नेपाल सेना के प्रवक्ता राजा राम बसनेत ने एएफ़पी को बताया कि फिलहाल सेना का मुख्य फोकस लोगों की तलाश और उन्हें बचाने पर है। उन्होंने कहा कि त्रिशूली-3ए हाइड्रोपावर प्रोजेक्ट की सुरंग में कुछ लोग फंसे हुए हैं। प्रधानमंत्री कार्यालय ने शुक्रवार को एक बयान में बताया कि इलाके से 350 लोगों को सुरक्षित निकाल लिया गया है, लेकिन करीब 100 लोग अब भी सुरंग में फंसे हुए हैं। चीन ने तिब्बत से 555 फंसे पर्यटकों को निकाला- तिब्बत में 555 फंसे हुए पर्यटकों को सुरक्षित बाहर निकाल लिया गया है। शिन्हुआ न्यूज ने चीनी अधिकारियों के हवाले से यह जानकारी दी है। अभी यह पता नहीं है कि तिब्बत से निकाले गए इन 555 पर्यटकों का आंकड़ा नेपाल की ओर से जारी लापता या प्रभावित लोगों के आंकड़ों में शामिल है या नहीं। शिन्हुआ ने यह नहीं बताया कि बचाए गए पर्यटक किन देशों के नागरिक हैं। भारत, ऑस्ट्रेलिया और अमेरिका ने पहले ही बताया है कि उनके नागरिक इस आपदा के बाद लापता हैं। बाढ़ ने नेपाल में सिर्फ लोगों की जान ही नहीं ली, बल्कि देश की नई सरकार के लिए आर्थिक मुश्किलें भी बढ़ा दी हैं। नेपाल की अर्थव्यवस्था काफी हद तक विदेशी मदद, विदेशों में काम करने वाले नेपाली लोगों के भेजे पैसे और चीन-भारत से आने वाले सामान पर निर्भर है। अब बाढ़ ने इस स्थिति को और मुश्किल बना दिया है। नेपाल के राष्ट्रीय आपदा जोखिम न्यूनीकरण और प्रबंधन

प्राधिकरण के मुताबिक, बाढ़ से 80 पुल और करीब 40 किलोमीटर पक्की सड़कें खराब हो गई हैं। बाढ़ से प्रभावित इलाका चीन की सीमा के पास है। वहां की कई सड़कें और पुल चीन से सामान लाने और नेपाल से सामान भेजने के लिए बेहद जरूरी हैं। चीन नेपाल का दूसरा सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार है। नेपाल-तिब्बत सीमा क्षेत्र में विनाशकारी अचानक आई बाढ़ के बाद करीब 90 अमेरिकी नागरिकों का अब तक पता नहीं चल पाया है। अमेरिकी विदेश विभाग ने कहा कि उसे किसी अमेरिकी नागरिक की मौत की जानकारी नहीं है। वहीं, तीन अमेरिकी नागरिकों को बचा लिया गया है। लापता अमेरिकी नागरिकों में कई लोग तिब्बत में कैलाश पर्वत की तीर्थयात्रा पर गए थे। कैलाश पर्वत हिंदू, बौद्ध और अन्य धर्मों के लोगों के लिए पवित्र माना जाता है। लापता लोगों में 32 देशों के 700 से अधिक विदेशी नागरिक शामिल हैं। नेपाल पर्यटन बोर्ड के मुताबिक, इनमें से कम से कम 517 विदेशी नागरिक नेपाल में लापता हैं। वहीं, चीन के अधिकारियों के अनुसार 260 लोग चीन में लापता हैं।चीन-नेपाल सीमा पर स्थित ग्यिरोंग काउंटी में अगले तीन दिनों तक बारिश होने का अनुमान है। यह इलाका हालिया भूस्खलन से बुरी तरह प्रभावित हुआ है। अधिकारियों ने आगे भी भूस्खलन और बाढ़ का खतरा जताया है। चीनी सरकारी मीडिया सीसीटीवी ने चीन मौसम विज्ञान विभाग के हवाले से बताया कि ग्यिरोंग में अगले तीन दिनों के दौरान रुक-रुककर बारिश होगी। चीन के प्राकृतिक संसाधन मंत्रालय ने पहले चेतावनी दी थी कि नेपाल में भूस्खलन के कारण बनी अस्थायी बांध जैसी संरचना टूट सकती है। इसके पीछे एक झील बन रही है। अगर यह संरचना टूटी तो नीचे की ओर फिर बाढ़ आ सकती है। नेपाल में भोटेकोशी नदी में आई विनाशकारी बाढ़ के बाद रसुवा में 7 बैंकों की शाखाओं में काम करने वाले कम से कम 27 कर्मचारी अब भी संपर्क से बाहर हैं। बुधवार सुबह बाढ़ आने के बाद से इन कर्मचारियों से संपर्क नहीं हो पाया है। सबसे ज्यादा कर्मचारी नेपाल इन्वेस्टमेंट मेगा बैंक के हैं। उसके 7 कर्मचारी संपर्क से बाहर हैं। इसके अलावा माछापुच्छ्रे बैंक के 5, सानिमा बैंक के 2, लक्ष्मी सनराइज बैंक के 3, हिमालयन बैंक का 1, एनएमबी बैंक के 4और प्रभु बैंक के 5 कर्मचारी अब तक संपर्क में नहीं आए हैं। नेपाल में मौत का आंकड़ा बढ़ा- नेपाल के रसुवा में आई विनाशकारी बाढ़ में मरने वालों की संख्या बढ़कर 469 हो गई है। गृह मंत्रालय की आपदा तैयारी और प्रतिक्रिया शाखा की ओर से आज सुबह 7:30 बजे जारी रिपोर्ट के मुताबिक, 977 लोग अभी भी लापता हैं। पूर्व भारतीय क्रिकेटर सचिन तेंदुलकर ने बाढ़ से प्रभावित परिवारों के प्रति संवेदना जताई है। उन्होंने सोशल मीडिया पर लिखा कि इससे बड़ी अनिश्चितता शायद ही कोई हो सकती है कि आपको यह पता न हो कि आपका कोई अपना सुरक्षित है या नहीं। सचिन ने नेपाल की बाढ़ से प्रभावित सभी परिवारों के प्रति संवेदना जताते हुए कहा कि खास तौर पर उन लोगों के साथ उनकी संवेदनाएं हैं, जो अब भी किसी खबर का इंतजार कर रहे हैं। वह लापता लोगों के परिजनों और उन तक पहुंचने के लिए दिन-रात काम कर रही बचाव टीमों के लिए प्रार्थना कर रहे हैं।त्रिशूली और नारायणी नदी के किनारे से बरामद कुल 102 शवों को पहचान और पोस्टमार्टम के लिए पोखरा भेजा गया है। इनमें नवलपरासी से 41, धादिंग से 27, तनहूं से 23 और गोरखा से 11 शव शामिल हैं। इन जिलों में शवों को रखने की व्यवस्था नहीं होने के कारण भेजा गया। जिला प्रशासन अब मेडिकल प्रक्रिया पूरी होने के बाद सार्वजनिक सूचना जारी करने की तैयारी कर रहा है, ताकि शोक में डूबे परिवार अपने लापता रिश्तेदारों की पहचान कर सकें। ऑस्ट्रेलिया ने नेपाल में बाढ़ और भूस्खलन से प्रभावित लोगों की मदद के लिए 50 लाख ऑस्ट्रेलियाई डॉलर (करीब 35 करोड़ भारतीय रुपए) की मदद देने का ऐलान किया है। ऑस्ट्रेलियाई विदेश मंत्रालय ने बताया कि प्रभावित ऑस्ट्रेलियाई नागरिकों की मदद के लिए अतिरिक्त कर्मचारियों को भी नेपाल भेजा जा रहा है। ऑस्ट्रेलियाई विदेश मंत्रालय ने कहा कि बाढ़ और भूस्खलन के कारण कई सड़कें और पुल तबाह हो गए हैं। इसकी वजह से कई समुदाय अब भी दूसरे इलाकों से कटे हुए हैं और वहां पहुंचना मुश्किल है। ऐसे में तेजी से मानवीय सहायता पहुंचाना जरूरी है।

मंत्रालय के मुताबिक, नेपाल में कम से कम 39 ऑस्ट्रेलियाई नागरिक अब भी लापता हैं।

लॉरेंस का घर पूछा तो झिझका दुकानदार,बुजुर्ग बोले लैंडलॉर्ड का बेटा; चंडीगढ़ जाकर गलत संगत में पड़ा

पंजाब। पंजाब के अबोहर का दुतारांवाली गांव। बाहर गांव का बोर्ड, अंदर जाती सड़क के दोनों तरफ खेत। कहीं बैलगाड़ी गुजर रही है, तो कहीं पेड़ के नीचे ताश खेलते बुजुर्ग। यही गैंगस्टर लॉरेंस का गांव है। लॉरेंस को गुजरात की साबरमती जेल में आज 3 साल पूरे हो गए हैं। अमेरिकी जांच एजेंसी एफबीआई के ऑपरेशन हॉर्डबॉल में लॉरेंस पर जेल से नेटवर्क चलाने के आरोप कुछ रिपोर्टर उसके गांव दुतारांवाली पहुंचे। गांव में पहुंचते ही लॉरेंस का घर पूछा तो किराना दुकानदार थोड़ा झिझका, फिर रास्ता बता दिया। आगे मंदिर के पास मिले बुजुर्गों से बात हुई तो जुर्म की चर्चा से पहले लॉरेंस के बचपन की बातें सामने आईं- क्रिकेट, स्कूल और गांव का खेल का मैदान। ग्रामीणों के मुताबिक, लॉरेंस के परिवार के पास करीब 110 किले (एकड़) जमीन और 3-4 कोठियां हैं। एक ग्रामीण ने कहा, 'उसे फिरौती मांगने की जरूरत नहीं थी।' ग्रामीणों ने यह भी बताया कि आखिरी बार लॉरेंस को 10-12 साल पहले गांव में देखा गया था। तब से वह सिर्फ मीडिया में ही नजर आता है। वहीं, ग्राउंड में खेल रहे बच्चों ने लॉरेंस के बारे में कैमरे पर बात करने से इनकार कर दिया। घर पूछने पर दुकानदार झिझका, फिर मंदिर का रास्ता बताया। गांव में लॉरेंस का घर और उसके दादा की याद में बना मंदिर तलाशने के लिए टीम ने एक किराना की दुकान पर रुककर रास्ता पूछा। दुकानदार पहले थोड़ा झिझका, लेकिन बाद में मंदिर की तरफ जाने का रास्ता बता दिया। आगे बढ़ने पर मंदिर के पास पेड़ के नीचे कुछ बुजुर्ग ताश खेलते मिले। टीम ने अपना परिचय दिया तो उन्होंने बातचीत शुरू की। दादा की याद में मंदिर, यहीं मिले गांव के बुजुर्ग-दुतारांवाली में लॉरेंस के दादा की याद में मंदिर बना हुआ है। इसी मंदिर के पास मिले बुजुर्गों से बातचीत में लॉरेंस के बचपन की बातें सामने आईं। बुजुर्गों ने बताया कि बचपन में लॉरेंस खेलकूद में आगे रहता था। उसे क्रिकेट का शौक था। क्रिकेट टूर्नामेंट के लिए घर से पैसे लाता था. गांव निवासी अशोक कुमार ने लॉरेंस के बचपन को याद करते हुए कहा कि वह खेलकूद में ज्यादा ध्यान देता था। अशोक के मुताबिक, लॉरेंस गांव में क्रिकेट टूर्नामेंट करवाने के लिए

अपने घर से पैसे लगाता था। 'लॉरेंस हमारे गांव में बहुत अच्छा लड़का था। लॉरेंस नशे के खिलाफ रहता था और नशा करने वाले युवाओं को रोकता-समझाता था' 5वीं तक साथ पढ़े, तब कोई गैंग या ग्रुप नहीं था। लॉरेंस के साथ पांचवीं कक्षा तक पढ़े दर्शी राज ने भी उसके बचपन की बातें बताईं। उन्होंने कहा कि उस समय लॉरेंस खेलकूद में रहता था और बच्चों को खिलवाने के लिए अपने घर से पैसे लगाता था। दर्शी राज ने बताया कि वह खुद मध्यम परिवार से हैं। उनके मुताबिक, लॉरेंस ने उन्हें भी अपनी तरफ से खिलवाने के लिए पैसे दिए थे। उन्होंने कहा कि लॉरेंस पढ़ाई में भी अच्छा था और स्कूल के शिक्षकों के साथ उसका रिश्ता पिता-बेटे जैसा था। बचपन में उसका कोई गैंग या ग्रुप नहीं था। वह खेल में ही रमा रहता था। परिवार के पास 110 किले जमीन, 3-4 कोठियां बातचीत में लॉरेंस के परिवार की संपत्ति का भी जिक्र आया। ग्रामीणों के मुताबिक, परिवार के पास करीब 110 किले (एकड़) जमीन और 3-4 कोठियां हैं। उसके पिता खेती से जुड़े रहे हैं। गांव में रहने वाले कृष्ण कुमार ने कहा कि परिवार आर्थिक रूप से संपन्न है। जब परिवार के पास अपनी जमीन-जायदाद है तो लॉरेंस को किसी से रंगदारी मांगने की जरूरत नहीं थी। लोगों ने गांव में जरूरतमंद परिवारों की मदद और लड़कियों की शादी में पैसे देने की बात भी कही। कृष्ण कुमार बताते हैं कि लॉरेंस के परिवार की आर्थिक स्थिति अच्छी थी। परिवार के पास अपनी जमीन थी, इसलिए लॉरेंस को किसी से रंगदारी मांगने की जरूरत नहीं थी।कृष्ण कुमार के मुताबिक, लॉरेंस पढ़ाई में अच्छा था। चंडीगढ़ जाने के बाद उसकी जिंदगी बदल गई। लॉरेंस ईमानदार लड़का था और अच्छी पढ़ाई कर रहा था। चंडीगढ़ गया और वहां किसी गलत संगत में पड़ गया। इसके बाद उसकी जिंदगी बदलती चली गई। आखिरी बार करीब 10-12 साल पहले देखा-दुतारांवाली गांव में रहने वाले शालू के मुताबिक, हमने लॉरेंस को करीब 10-12 साल पहले आखिरी बार देखा था। उस समय लॉरेंस क्रिकेट खेलने के लिए ग्राउंड की तरफ जा रहा था। मंदिर के पास मुलाकात हुई तो लॉरेंस से हाथ भी मिलाया था। इसके बाद वह गांव नहीं आया। बच्चे ग्राउंड में खेलते मिले, लेकिन लॉरेंस पर बात नहीं की-गांव के ग्राउंड में बच्चे खेलते मिले। टीम ने उनसे लॉरेंस के बारे में बात करने की कोशिश की, लेकिन उन्होंने कैमरे पर कुछ भी बोलने से मना कर दिया। उन्होंने ऐसा क्यों किया, इसकी वजह उन्होंने नहीं बताई। चंडीगढ़ से साबरमती जेल तक: लॉरेंस की कहानी- कॉलेज से छात्र राजनीति: 2010 में चंडीगढ़ आया लॉरेंस डीएवी कॉलेज-10 में दाखिल हुआ और एसओपीयू से जुड़ा। 2010 का चुनाव हारा, 2011 में जीतकर कैंपस प्रेसिडेंट बना। इसी दौरान विक्की मिड?डूखेड़ा और गोल्डी बराड़ से संपर्क हुआ। 2011 में पहली एफआईआर: अप्रैल 2011 में हत्या के प्रयास और घर में घुसने के आरोप में पहली एफआईआर हुई। इसके बाद मारपीट, हथियार और आपराधिक साजिश समेत कई मामलों में नाम जुड़ता गया। 2014 में राजस्थान पुलिस ने उसे गिरफ्तार किया। सलमान खान को धमकी: 2018 में काला हिरण मामले को लेकर सलमान खान को धमकी देने के बाद वह राष्ट्रीय सुर्खियों में आया। उसके करीबी संपत नेहरा की सलमान की रेकी के आरोप में गिरफ्तारी हुई। मूसेवाला हत्याकांड: 2021 में विक्की मिड?डूखेड़ा की हत्या के बाद 29 मई 2022 को सिद्धू मूसेवाला की हत्या हुई। गोल्डी बराड़ ने इसे मिड?डूखेड़ा की हत्या का बदला बताया। जेल से इंटरव्यू: मार्च 2023 में जेल से लॉरेंस का टीवी इंटरव्यू सामने आया। इससे जेल की सुरक्षा व्यवस्था पर सवाल उठे। हाईकोर्ट के निर्देश पर जांच और एफआईआर हुई। 700 सदस्यों का नेटवर्क: एनआईए की चार्जशीट में उसके कथित सिंडिकेट को करीब 700 सदस्यों वाला नेटवर्क बताया गया। इसमें शूटर, हथियार-ड्रग्स सप्लाई और रंगदारी से जुड़े लोग शामिल बताए गए।साबरमती जेल: 2023 में ड्रग्स केस में गुजरात एटीएस ने उसे कस्टडी में लिया। 10 मई 2023 को उसे साबरमती सेंट्रल जेल भेजा गया।

गृह मंत्रालय के आदेश के बाद उसे जेल से बाहर ले जाना प्रतिबंधित है। बाबा सिद्दीकी हत्याकांड: अक्टूबर 2024 में बाबा सिद्दीकी की हत्या के बाद लॉरेंस नेटवर्क फिर चर्चा में आया। जांच में गैंग से जुड़े लोगों और उसके भाई अनमोल के नाम सामने आए। जेल से नेटवर्क, अमेरिका तक पहुंच: अमेरिकी जांच एजेंसी एफबीआई के मुताबिक लॉरेंस जेल से अपना नेटवर्क चला रहा। अमेरिकी जांच में उसके नेटवर्क पर हत्या, रंगदारी और ड्रग्स तस्करी जैसे अपराधों के आरोप सामने आए हैं। जुलाई 2026 में अमेरिका ने लॉरेंस पर कनाडा में हरदीप सिंह निज्जर की हत्या की साजिश रचने का आरोप लगाया।

पीएम की अपील पर 97फीसदी मंत्री इंस्टाग्राम पर एक्टिव,शाह के 8 लाख फॉलोअर्स बढ़े, ज्यादा पोस्ट किए

नयी दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 24 जुलाई 2026 को कैबिनेट बैठक में मंत्रियों से इंस्टाग्राम पर ज्यादा सक्रिय होने, रील बनाने व युवाओं से संवाद करने को कहा था। इसके बाद 24 अगस्त तक 29 में से 28 यानी 97फीसदी कैबिनेट मंत्रियों की इंस्टाग्राम एक्टिविटी बढ़ी है। जदयू के राजीव रंजन सिंह को छोड़ सभी मंत्री ज्यादा सक्रिय हैं। मोदी कैबिनेट में सबसे ज्यादा फॉलोअर्स गृह मंत्री शाह के बढ़े हैं। पिछले 1 महीने में उनके 8.53 लाख फॉलोअर्स बढ़े हैं।रील्स पर जोर-पीएम की सलाह के बाद मंत्रियों ने रील्स पर जोर दिया है। उपभोक्ता मामले, खाद्य व सार्वजनिक वितरण मंत्री प्रल्हाद जोशी ने नीतियों व अहम मुद्दों को रील्स के ज़रिए समझाने पर जोर दिया। मंत्रियों ने पिछले 1 महीने में 1,179 पोस्ट किए हैं। यह पहले की तुलना में 48फीसदी ज्यादा है। पीएम ने खुद सोशल मीडिया पर कई वीडियो जारी किए-नीट पेपर लीक पर जंतर-मंतर पर हो रहे विरोध प्रदर्शन के बीच पीएम मोदी ने कई बार सोशल मीडिया पर वीडियो जारी किया था। इन वीडियो में उन्होंने जेन-जी को पेपर लीक के मुद्दे पर संबोधित किया था। एक वीडियो में पीएम ने उन स्टूडेंट्स को माफ करने की भी बात कही थी जिन्होंने प्रदर्शन के दौरान उन्हें गाली दी थी। सरकार जेन-ज़ी से करेगी बात, वन डे-वन यूनिवर्सिटी प्लान-मोदी सरकार युवाओं से जुड़ने के लिए रोज एक यूनिवर्सिटी में एक केंद्रीय मंत्री भेजने की योजना बना रही है। मंत्री छात्रों से उनकी चिंताओं पर बात करेंगे और देश से जुड़े मुद्दों पर उनका नजरिया समझेंगे। 19 अगस्त को मोदी कैबिनेट की बैठक के दौरान 'वन डे, वन यूनिवर्सिटी' कार्यक्रम के तहत मंत्री तय यूनिवर्सिटी में जाकर छात्रों से अलग-अलग मुद्दों पर चर्चा करेंगे। वे छात्रों की राय सुनेंगे और खासकर युवाओं व छात्रों के लिए चल रही सरकारी योजनाओं की जानकारी देंगे। न्यूज एजेंसी पीटीएआई के सूत्रों के मुताबिक, इसके जरिए जेन-ज़ी से सीधे जुड़ना है। सूत्रों के मुताबिक, शिक्षा मंत्री प्रल्हाद जोशी और युवा मामले एवं खेल मंत्री मनसुख मांडविया को यूनिवर्सिटी और दौरे पर जाने वाले मंत्रियों के साथ तालमेल की जिम्मेदारी दी गई है। हालांकि, मंत्रियों के यूनिवर्सिटी दौरे का पूरा कार्यक्रम अभी सामने नहीं आया है। बैठक में मंत्रियों की सोशल मीडिया पोस्ट की पहुंच पर भी चर्चा हुई। इसमें खासतौर पर युवा लोगों तक संदेश पहुंचाने के लिए ज्यादा मेहनत करने की बात कही गई।

नेपाल त्रासदी से कैसे बचा बिहार,2 घंटे देर होती तो 8 जिले बह जाते,22 घंटे में 35 लाख क्यूसेक पानी आया

पटना। बगहा के गंडक बैराज के एग्जक्यूटिव इंजीनियर मो. इकबाल ने जानकारी दी की 'अगर पटना से हमें दो घंटे भी लेट जानकारी मिलती तो हालात कंट्रोल नहीं कर पाते। पहले जानकारी मिलने से पानी को समय से बैराज से छोड़ने का मौका मिल गया और गंडक के तटबंधों पर अचानक ज्यादा प्रेशर नहीं आया।' एग्जक्यूटिव इंजीनियर ने बताया, 26 अगस्त को सुबह 11 बजकर 10 मिनट पर दिल्ली से पटना सचिवालय को नेपाल त्रासदी के बारे में जानकारी दी गई। कहा गया कि आपके यहां नेपाल से सटे उत्तर-पश्चिम इलाके में स्थिति बिगड़ सकती है। पटना से तुरंत बगहा डीएम को फोन पर सारी जानकारी दी गई। इसके बाद डीएम ने गंडक बैराजइंचार्ज से गंडक में पानी की स्थिति जानी। उस वक्त बैराजमें साढ़े 5 लाख क्यूसेक पानी था, जबकि उसकी क्षमता साढ़े 8 लाख क्यूसेक थी। अधिकारियों को यह पता नहीं था कि नेपाल से कितना पानी आएगा, लेकिन इतना जरूर जानते थे कि अगर नेपाल से पानी आने से पहले बैराजके पानी को खाली कर उसकी क्षमता नहीं बढ़ाई गई तो स्थिति नियंत्रण से बाहर हो सकती है। तत्काल डेढ़ लाख क्यूसेक पानी छोड़ने का आदेश दिया गया। 36 फाटक खोले गए। इसके बाद हर एक घंटे पर करीब डेढ़ लाख क्यूसेक पानी छोड़ा जा रहा था। अगर एक साथ 4-5 लाख क्यूसेक पानी छोड़ दिया जाता तो आसपास के इलाकों में बाढ़ जैसी स्थिति आ सकती थी। गंडक की चौड़ाई ज्यादा नहीं है। इसलिए नियंत्रित तरीके से पानी छोड़ गया। गंडक बैराज से 22 घंटे में करीब 35 लाख क्यूसेक पानी छोड़ा गया। बैराज से छोड़ा गया पानी गंडक से होते हुए धीरे-धीरे गंगा में मिलता गया। इसी बीच गंगा का जलस्तर भी बढ़ रहा था, लिहाजा वैशाली में जहां गंडक गंगा में मिली, वहां बाढ़ जैसी स्थिति उत्पन्न हो गई। दूसरी तरफ गंडक से लगे सभी जिलों के अधिकारियों को अलर्ट कर दिया गया। करीब पांच जिलों के 70 से ज्यादा ब्लॉक में अधिकारियों की छुट्टियां रद्द कर दी गईं। नदी किनारे बसे लोगों को माइक के जरिए बताया गया कि वे जितनी जल्दी हो सके ऊंचे स्थानों पर चले जाएं। बाढ़ की चपेट में कितने जिले? बिहार में गंडक के उद्गम से लेकर गंगा के बंगाल में प्रवेश करने तक 13 जिलों के नदी किनारे के हिस्से बाढ़ की चपेट में आए हैं। करीब 20 लाख लोग या तो बेघर हो गए हैं या पानी में रहने को मजबूर हैं। वैशाली

और खगड़िया में स्थिति ज्यादा खराब हुई है। वैशाली में गंडक का पानी गंगा में मिलता है, यहां पिछले 16 घंटे में साढ़े 28 लाख क्यूसेक पानी गंगा में आया।यही पानी समस्तीपुर, बेगूसराय, लखीसराय, मुंगेर, खगड़िया, भागलपुर और कटिहार होकर बंगाल गया। इन जिलों के दियारा इलाके में बाढ़ जैसी स्थिति बन गई है। नेपाल का पानी गंगा तक कैसे पहुंचता है? नेपाल के रसुवा जिले में बुधवार को आई बाढ़ के बाद बिहार के गंडक बैराज से 22 घंटे में करीब 35 लाख क्यूसेक पानी छोड़ा गया है। यह पानी गंगा तक कैसे पहुंचा, इसे समझिए। नेपाल के ऊपरी जलग्रहण क्षेत्र में अचानक पानी बढ़ने से नारायणी/गंडकी नदी में उफान आया, जो भारत में प्रवेश करने के बाद गंडक कहलाती है। यह पानी वाल्मीकिनगर गंडक बैराजतक पहुंचा। बैराजके गेट खोलकर अतिरिक्त पानी डाउनस्ट्रीम गंडक में छोड़ा गया। 26 अगस्त को नेपाल में फ्लैश फ्लड के बाद बिहार में गंडक के जलस्तर में अचानक बढ़ोतरी की आशंका जताई गई और वाल्मीकिनगर बैराजके सभी 36 गेट खोले गए। गंडक का तेज बहाव पश्चिम चंपारण से होते हुए गोपालगंज, सारण और वैशाली के आसपास पहुंचा।गंडक गंगा नदी में हाजीपुर-सोनपुर के पास मिलती है। वैशाली में गंगा और गंडक दोनों नदियों के बढ़े जल स्तर का असर दिख रहा है। 27 अगस्त को जल संसाधन विभाग के आंकड़ों में वैशाली के हाजीपुर क्षेत्र में गंगा का जलस्तर सामान्य से ऊपर दर्ज किया गया है। आइए, अब जिला वाइज समझते हैं पूरे हालात- पिछले दिनों गंडक में अचानक पानी बढ़ने से वैशाली जिले के करीब 10 से ज्यादा ब्लॉक के 700 घरों में पानी घुस गया। राघोपुर के चकसिंगार, वीरपुर, जुरावनपुर बरारी, जुरावनपुर करारी, फतेहपुर, रामपुर, जफराबाद, जहांगीरपुर, शिवनगर सहित कई इलाकों में बाढ़ का पानी फैल गया है।

निचले इलाकों में पानी बढ़ने से ग्रामीणों की मुश्किलें लगातार बढ़ रही हैं। बाढ़ का पानी अब जुरावनपुर थाना परिसर में भी प्रवेश कर गया है। जुरावनपुर में मोबाइल टावर का निचला हिस्सा बाढ़ के पानी में डूब गया है। जुरावनपुर बरारी स्थित बिंदा चौक तक भी पानी पहुंच चुका है। बगहा में 500 से ज्यादा घरों को कराया गया खाली-पश्चिम चंपारण के बगहा में गंडक का पानी कई गांव में भर गया है। बगहा-2 ब्लॉक में 500 से ज्यादा घरों को खाली कराया गया। यहां के लोगों को ऊंचे जगहों पर बसाया गया है। कम्युनिटी किचन की शुरुआत की गई है। गोपालगंज के 6 और मोतिहारी में 3 ब्लॉक के खेतों में बाढ़ का पानी घुस आया है। यहां भी निचले इलाके के लोगों को निकालकर ऊंचे स्थानों पर बसाया जा रहा है। समस्तीपुर में दो नदियां बहती हैं, एक बूढ़ी गंडक और दूसरी गंगा। जिले का ज्यादातर क्षेत्र दोनों के बीच है। यहां गंगा तीन ब्लॉक से गुजरती है। तीनों ब्लॉक में फिलहाल बाढ़ जैसी स्थिति नहीं है। प्रशासन ने किनारे में रहने वाले लोगों को सावधान रहने की अपील की है। बेगुसराय में भी ऐसे ही हालात हैं। समस्तीपुर और बेगुसराय के दीयारा इलाके के क्षेत्रफल ज्यादा होने के कारण यहां घरों और गांवों तक पानी नहीं पहुंचा है। बाढ़ की स्थिति नहीं बनी है। लखीसराय गंगा दो ब्लॉक से गुजरती है, बरैया, पिपरिया। इन दोनों ब्लॉक के 10 से ज्यादा गांव में पानी घुस आया है। यहां करीब 25 हजार लोग प्रभावित हुए हैं। किनारे पर रहने वाले लोगों को माइक के जरिए सावधान किया जा रहा है। एनडीआरएफ की दो टीमें लगाई गईं हैं। खगड़िया में सात नदियां बहती हैं। यहां गंगा से बागमती और बूढ़ी गंडक मिलती है। 4 ब्लॉक (परबत्ता, गोगड़ी, खगड़िया सदर 1, और मानसी) गंगा के तटीय इलाके में हैं। खगड़िया सदर में गंगा से बूढ़ी गंडक भी मिलती है। यहां लोगों को सावधान रहने के लिए माइकिंग की जा रही है। 4 ब्लॉक के 25 पंचायतों में 75 हजार से ज्यादा घर पानी में हैं। सिर्फ परबत्ता में 15 हजार से ज्यादा पॉलिथिन बांटने की तैयारी है। सरकार की तरफ से निशुल्क नाव सेवा चलाई जा रही है। एनडीआरएफ-एसडीआरएफ टीम को तैनात किया गया है। इन तीनों ब्लॉक के अंचलाधिकारियों की छुट्टियां रद्द कर दी गई हैं। मुंगेर में गंगा नदी के उफान के चलते निचले इलाके के तीन ब्लॉक में पानी पहुंचा है। बुधवार रात से गंगा का जलस्तर खतरे के निशान से महज 50 सेंटीमीटर नीचे आकर स्थिर हो गया था। आपदा प्रबंधन विभाग के अनुसार, गुरुवार सुबह 10 बजे मुंगेर में गंगा का जलस्तर 38.83 मीटर दर्ज किया गया सीताचरण जापुर के रहने वाले हरेराम ने बताया कि 'हमारे गांव में करीब एक हफ्ते से पानी फैला हुआ है। पानी में हेलकर करीब एक हफ्ते से इधर-उधर समय काट रहे हैं। कोई मुखिया या अधिकारी देखने तक नहीं आया है। अनाज कल-परसों से सरकार की तरफ से भिजवाया जा रहा है। हमारे इलाके में करीब 150 घर प्रभावित हुए हैं, इनमें 2,000 लोग फंसे हैं।' जिले के सदर मुंगेर, बरियारपुर, जमालपुर, धरहरा, हवेली खड़गपुर और असरगंज प्रखंडों के निचले इलाकों में पानी घुस गया है। कई स्थानों पर घर पानी से घिर गए हैं और धान की फसलें भी डूब गई हैं।

जेल में बहनों ने संजय दत्त को जब बांधी थी राखी, तोहफे में दिए थे चाय-नाश्ते के 2-2 रुपए के कूपन

मुंबई। रक्षाबंधन भाई-बहन के रिश्ते का त्योहार है। इस दिन बहन भाई की कलाई पर

राखी बांधती है। भाई भी अपनी बहन को कुछ न कुछ गिफ्ट देता है, लेकिन संजय दत्त की जिंदगी में एक रक्षाबंधन ऐसा भी आया था, जब उनकी बहनों ने उन्हें जेल में राखी बांधी और उन्हें तोहफे में 2-2 रुपए के कूपन दिए थे। 1994 में संजय दत्त ठाणे सेंट्रल जेल में थे-बात जुलाई 1994 की है। अवैध हथियार रखने के मामले में संजय दत्त की अंतरिम जमानत रद्द हो गई थी। इसके बाद उन्हें ठाणे सेंट्रल जेल भेज दिया गया। उन्हें जेल की सबसे कड़ी सुरक्षा वाली अंडा बैरक में रखा गया था। यहां खतरनाक अपराधियों और टाडा के आरोपियों को रखा जाता था। संजय दत्त पर लिखी यासिर उस्मान की किताब के मुताबिक, संजय दत्त जिस बैरक में थे, वह करीब 10 बाई 10 फीट की थी। वहां न धूप आती थी और न बाहर की दुनिया दिखाई देती थी। कमरे में एक छोटा बल्ब, गद्दा और बिना फ्लश वाला शौचालय था। संजय ने बाद में बताया था कि जेल में शुरुआती डेढ़ महीने काफी मुश्किल रहे। उन्हें दूसरे कैदियों से मिलने की इजाजत भी नहीं थी। अकेलापन इतना ज्यादा था कि वह समय बिताने के लिए घंटों चींटियों को चलते देखते थे। इस मुश्किल समय में उनके पिता सुनील दत्त बेटे की जमानत के लिए लगातार कोशिश कर रहे थे। वहीं उनकी बहनें प्रिया और नम्रता भी संजय से मिलने जेल जाती थीं। कई बार उन्हें भाई से दूर से ही मिलने का मौका मिलता था। वहीं, रक्षाबंधन पर बहनों ने जेल में उन्हें राखी बांधी। उस समय संजय के पास देने के लिए कोई तोहफा नहीं था। उन्होंने अपनी बहनों को सिर्फ जेल की कैंटीन के दो-दो रुपए वाले चाय-नाश्ते के कूपन दिए और कहा था, 'मेरे पास फिलहाल यही है।' बता दें कि संजय दत्त और उनकी बहनों के रिश्ते में उतार-चढ़ाव आए। साल 2008 में संजय दत्त ने मान्यता दत्त से शादी की थी। शुरुआत में परिवार के कुछ सदस्यों ने इस रिश्ते को आसानी से स्वीकार नहीं किया था। प्रिया और मान्यता के बीच भी कुछ समय तक दूरी रही। संजय के राजनीति में आने को लेकर भी प्रिया से उनके मतभेद सामने आए थे। लेकिन बाद में परिवार में रिश्ते सुधरते गए। संजय और मान्यता के जुड़वां बच्चों के जन्म के बाद दूरियां कम हुईं। साल 2020 में संजय दत्त को कैंसर हुआ, तो उनकी बहनें फिर उनके साथ मजबूती से खड़ी रहीं। प्रिया और नम्रता ने इलाज के दौरान भाई का साथ दिया।

'अरे बेवकूफों, क्या एक मुसलमान, मुसलमान को राखी बांधता है?' पत्नी जरीना वहाब का नाम दाऊद से जोड़ने पर भड़के थे आदित्य पंचोली

मुंबई। 2000 के दशक में कुछ हिंदी अखबारों और मीडिया रिपोर्ट्स में यह दावा किया गया

था कि मुंबई में आदित्य पंचोली की 'दादागिरी' इसलिए चलती है क्योंकि उनकी पत्नी और अभिनेत्री जरीना वहाब अंडरवर्ल्ड डॉन दाऊद इब्राहिम को राखी बांधती हैं। इस दावे पर आदित्य पंचोली ने कड़ी नाराजगी जताई थी। आप की अदालत में दिए एक पुराने इंटरव्यू में उन्होंने कहा था, 'मेरी बीवी 17 साल की उम्र से फिल्म इंडस्ट्री में काम कर रही है। एक भी उंगली आज तक उस पर नहीं उठी। वह एक मुस्लिम औरत है। मैं बोलता हूं, वो पाक है, देवी है।' उन्होंने आगे कहा था, 'उसके बारे में लिखा गया कि वो इसलिए दादागिरी करता है क्योंकि आदित्य पंचोली की बीवी जरीना वहाब, दाऊद इब्राहिम को राखी बांधती है। अरे बेवकूफों, लिखने से पहले सोचो, क्या एक मुसलमान, मुसलमान को राखी बांधता है?' आदित्य पंचोली और जरीना वहाब की लव स्टोरी बॉलीवुड की सबसे चर्चित और अनोखी कहानियों में से एक है। दोनों की पहली मुलाकात साल 1986 में नारी हीरा की वीडियो फिल्म 'कलंक का टीका' के सेट पर हुई थी। जरीना वहाब के मुताबिक, आदित्य उनसे उम्र में लगभग 5 साल छोटे थे और पहली मुलाकात में ही उन्हें बेहद हैंडसम लगे थे। फिल्म की शूटिंग के दौरान दोनों एक-दूसरे के करीब आए और उन्हें प्यार हो गया। दोनों का प्यार इस कदर परवान चढ़ा कि पहली मुलाकात के महज 15 से 20 दिनों के अंदर ही दोनों ने साल 1986 में शादी कर ली। यह शादी उस दौर में इसलिए भी बहुत चर्चा में रही क्योंकि जरीना मुस्लिम थीं और आदित्य हिंदू। जरीना की मां रिश्ते को लेकर चिंतित थीं-जरीना ने एक इंटरव्यू में बताया था कि उनकी मां शुरुआत में इस रिश्ते को लेकर काफी चिंतित थीं, क्योंकि आदित्य दूसरे धर्म के थे और उम्र में छोटे थे। लेकिन जरीना ने अपनी मां को समझाते हुए कहा था, "मां, हिंदू-मुसलमान सब एक जैसे हैं। आप ही कहती हैं कि अल्लाह की मर्जी के बिना एक पत्ता भी नहीं हिल सकता। तो मेरी जिंदगी का इतना बड़ा फैसला भी अल्लाह ने ही लिया है। यह फैसला मैंने नहीं, उन्होंने लिया है।" जरीना की बात सुनकर उनके परिवार ने इस शादी को स्वीकार कर लिया। जरीना ने लहरें को दिए इंटरव्यू में बताया था कि उनकी शादी निकाह के तरीके से हुई थी। जब उनसे पूछा गया था कि क्या आदित्य ने इस्लाम कबूल किया था, तो उन्होंने कहा, 'उन्होंने धर्म नहीं बदला था, लेकिन मुस्लिम रीति के अनुसार उन्हें अपना नाम बदलना पड़ा था, इसलिए उन्होंने ऐसा किया।' जरीना वहाब ने बताया था कि उनकी बेटी का नाम सना एक पाकिस्तानी शो के किरदार से प्रेरित था। वहीं बेटे का नाम सूरज रखा गया, क्योंकि आदित्य की एक फिल्म में उनके किरदार का नाम सूरज था।

दिशा पाटनी 500 रुपए लेकर मुंबई आई थीं, 'हीरोपंती' के ऑडिशन में फेल हुईं, इंजीनियरिंग छोड़ी, फिर 'एमएस धोनी' से बनीं स्टार

मुंबई। दिशा पाटनी की बॉलीवुड तक पहुंचने की कहानी किसी फिल्मी कहानी से कम नहीं है। बरेली से निकलकर इंजीनियरिंग की पढ़ाई के बीच मॉडलिंग शुरू करने वाली दिशा 500 रुपए लेकर मुंबई पहुंची थीं। यहां उन्हें लगातार ऑडिशन देने पड़े और 'हीरोपंती' का ऑडिशन फेल हो गया। लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी और इंजीनियरिंग छोड़कर एक्टिंग को करियर बना लिया। 2015 में 'लोफर' से फिल्मी सफर शुरू हुआ, लेकिन 2016 की 'एमएस धोनीः द अनटोल्ड स्टोरी' ने उन्हें घर-घर पहचान दिलाई। इसके बाद 'बागी 2', 'भारत', 'मलंग' और 'कल्कि 2898 एडी' जैसी फिल्मों ने उन्हें चर्चित अभिनेत्रियों में शामिल कर दिया। हाल में उनकी मल्टीस्टार फिल्म 'वेलकम टू द जंगल' और 'अवारापन 2' रिलीज हुई है।बरेली में जन्म, पुलिस अधिकारी पिता और हेल्थ इंस्पेक्टर मां का परिवार-दिशा पाटनी का जन्म 13 जून 1992 को उत्तर प्रदेश के बरेली में हुआ। उनका परिवार उत्तराखंड के कुमाऊं क्षेत्र की राजपूत पृष्ठभूमि से आता है। उनके पिता जगदीश सिंह पाटनी पुलिस अधिकारी और मां हेल्थ इंस्पेक्टर हैं। बड़ी बहन खुशबू पाटनी भारतीय सेना में मेजर रह चुकी हैं और फिटनेस से भी जुड़ी हैं। छोटा भाई सूर्यांश पाटनी है। जिस दुनिया में दिशा बाद में ग्लैमर और फिल्म स्टारडम के लिए पहचानी गईं, उसकी शुरुआत एक सामान्य और अनुशासित पारिवारिक माहौल से हुई थी। इंजीनियरिंग की पढ़ाई के बीच आया मॉडलिंग का मौका-दिशा ने लखनऊ की एमिटी यूनिवर्सिटी से इंजीनियरिंग की पढ़ाई शुरू की थी। लेकिन उनकी जिंदगी में ऐसा मोड़ आया, जिसने उन्हें पढ़ाई से कैमरे की दुनिया तक पहुंचा दिया। दिशा ने बाद में 'आज तक' को दिए इंटरव्यू में बताया था कि वह नोएडा से बीटेक कर रही थीं और सेकेंड ईयर में उन्हें मॉडलिंग के ऑफर मिलने लगे। इन्हीं ऑफर्स से उनका मुंबई आना-जाना शुरू हुआ। पढ़ाई और मॉडलिंग के बीच संतुलन बनाना मुश्किल होता गया। आखिरकार उन्होंने इंजीनियरिंग की पढ़ाई दूसरे साल में छोड़ दी और मॉडलिंग को करियर बनाने की दिशा में कदम बढ़ाया। तब शायद उन्हें भी अंदाजा नहीं था कि कैमरे के सामने किया यह काम आगे चलकर उन्हें बॉलीवुड के बड़े सितारों के बीच पहुंचा देगा। 18 साल की उम्र में मॉडलिंग, फिर मिस इंडिया तक पहुंचीं-दिशा ने कम उम्र में मॉडलिंग शुरू कर दी थी। 2020 में 'फिल्मीबीट' को दिए इंटरव्यू में उन्होंने बताया था कि उन्होंने 18 साल की उम्र में मॉडल के तौर पर काम शुरू किया था। उनके मुताबिक उस समय उन पर कई जिम्मेदारियां थीं और उन्होंने परिवार पर आर्थिक रूप से निर्भर रहने के बजाय खुद काम करके अपना खर्च संभाला। 19 साल की उम्र में जब वह मुंबई आई थीं, तब शहर में उन्हें कोई जानने वाला नहीं था। फिल्मी परिवार से न होने के कारण उन्हें अपना रास्ता खुद बनाना था। वह अकेली रहती थीं, ऑडिशन देती थीं और अपनी जरूरतों का खर्च खुद उठाती थीं। मुंबई आने के समय उनके पास सिर्फ 500 रुपए थे। टीवी विज्ञापनों के ऑडिशन रोजमर्रा की जिंदगी का हिस्सा बन गए थे। किराया देने का दबाव इतना था कि उनके लिए हर काम पहले नौकरी जैसा था। मॉडलिंग के दौरान दिशा ने कई विज्ञापनों में काम किया। 2013 में उन्होंने पॉन्ड्स फेमिना मिस इंडिया इंदौर प्रतियोगिता में हिस्सा लिया और फर्स्ट रनर-अप रहीं। इससे उन्हें मॉडलिंग में और पहचान मिली। दिशा का लक्ष्य सिर्फ रैंप तक सीमित नहीं था। कैमरे के सामने काम करते हुए उन्हें एहसास हुआ कि उन्हें एक्टिंग ज्यादा पसंद है। मॉडलिंग उनके लिए मंजिल के बजाय बॉलीवुड तक पहुंचने का रास्ता बनने लगी। पहला ऑडिशन सफल नहीं हुआ, 'हीरोपंती' में मौका हाथ से निकला-दिशा की कहानी का दिलचस्प हिस्सा यह है कि उनका पहला बड़ा फिल्मी ऑडिशन सफल नहीं हुआ था। उन्होंने टाइगर श्रॉफ की डेब्यू फिल्म 'हीरोपंती' के लिए ऑडिशन दिया था। उस समय दिशा और टाइगर एक-दूसरे को जानते तक नहीं थे। 'बॉलीवुड हंगामा' को दिए इंटरव्यू में दिशा ने बताया था कि उस समय वह पढ़ाई कर रही थीं और एक शूट के सिलसिले में मुंबई आई थीं। वह खुद को एक्टर नहीं मानती

थीं और एक्टिंग के बारे में ज्यादा नहीं जानती थीं। उन्हें सिर्फ ऑडिशन के लिए बुलाया गया था। दिशा ने माना कि उनका ऑडिशन खराब था। उन्होंने यह भी बताया कि वह फिल्म के बारे में ज्यादा नहीं जानती थीं और मुंबई शिफ्ट भी नहीं हुई थीं।जिस फिल्म से टाइगर श्रॉफ का बॉलीवुड डेब्यू हुआ, उसी फिल्म में दिशा का सफर शुरू नहीं हो सका। लेकिन यह असफलता आगे की कहानी में अहम साबित हुई, क्योंकि दिशा रुकी नहीं। तेलुगु फिल्म 'लोफर' से एक्टिंग डेब्यू-2015 में दिशा को फिल्मी दुनिया में पहला बड़ा मौका मिला। उन्होंने पुरी जगन्नाध की तेलुगु फिल्म 'लोफर' में वरुण तेज के साथ काम किया। फिल्म में उन्होंने मौनी का किरदार निभाया था। यहीं से उनका आधिकारिक एक्टिंग करियर शुरू हुआ। 'लोफर' बॉक्स ऑफिस पर बड़ी सफलता हासिल नहीं कर सकी। लेकिन दिशा के लिए यह फिल्म महत्वपूर्ण थी, क्योंकि उन्हें पहली बार बड़े पर्दे पर खुद को साबित करने का मौका मिला था। कई कलाकारों के लिए पहली फिल्म की असफलता करियर रोक देती है। दिशा के मामले में ऐसा नहीं हुआ। उन्होंने अगले मौके का इंतजार किया और वही फिल्म उनके करियर की बड़ी शुरुआती सीढ़ी बनी। 'एमएस धोनी' ने बदली किस्मत-2016 में दिशा को वह फिल्म मिली जिसने उन्हें देशभर में पहचान दिलाई-'एमएस धोनीः द अनटोल्ड स्टोरी'। नीरज पांडे निर्देशित इस फिल्म में सुशांत सिंह राजपूत ने महेंद्र सिंह धोनी की भूमिका निभाई थी। दिशा ने प्रियंका झा का किरदार निभाया, जो धोनी की जिंदगी का बेहद भावनात्मक अध्याय था। फिल्म बॉक्स ऑफिस पर बड़ी सफलता साबित हुई और दिशा के काम को नोटिस किया गया। उनका स्क्रीन टाइम ज्यादा नहीं था, लेकिन प्रियंका के किरदार की कहानी भावनात्मक थी। यही वजह रही कि उनकी स्क्रीन प्रेजेंस दर्शकों को याद रह गई। इस फिल्म के बाद दिशा को सिर्फ मॉडल या नई एक्ट्रेस के तौर पर नहीं देखा गया। उन्हें ऐसी अभिनेत्री के रूप में पहचान मिलने लगी, जिसमें ग्लैमर के साथ भावनात्मक किरदार निभाने की क्षमता है। इस फिल्म के लिए उन्हें आईफा में 'स्टार डेब्यू ऑफ द ईयर- फीमेल' का पुरस्कार मिला। इसके अलावा उन्हें कई अन्य डेब्यू अवॉर्ड्स और नामांकन मिले। जैकी चैन के साथ इंटरनेशनल प्रोजेक्ट-'एमएस धोनी' के बाद दिशा का अगला बड़ा पड़ाव बॉलीवुड के बाहर था। 2017 में वह जैकी चैन की फिल्म 'कुंग फू योगा' में नजर आईं। फिल्म में सोनू सूद और अन्य कलाकार भी थे। इस प्रोजेक्ट से दिशा को इंटरनेशनल दर्शकों के सामने आने का मौका मिला। एक तरफ वह बॉलीवुड में जगह बनाने की कोशिश कर रही थीं और दूसरी तरफ अंतरराष्ट्रीय प्रोजेक्ट का अनुभव ले रही थीं। लेकिन दिशा को असली कमर्शियल स्टारडम अभी मिलना बाकी था। 'बागी 2' ने बनाया कमर्शियल स्टार-2018 में दिशा की फिल्म 'बागी 2' रिलीज हुई। इसमें वह टाइगर श्रॉफ के साथ नजर आईं। दोनों इससे पहले म्यूजिक वीडियो 'बेफिक्रा' में साथ काम कर चुके थे। 'बागी 2' उनकी टाइगर श्रॉफ के साथ पहली फिल्म थी, जिसमें दोनों की जोड़ी बड़े पर्दे पर दिखाई दी। फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर जबरदस्त प्रदर्शन किया और दुनिया भर में 258 करोड़ रुपये से ज्यादा का कारोबार किया। यह 2018 की सबसे ज्यादा कमाई करने वाली हिंदी फिल्मों में शामिल रही। दिशा के लिए 'बागी 2' महत्वपूर्ण थी, क्योंकि इससे उनकी लोकप्रियता तेजी से बढ़ी। उनका ग्लैमरस लुक, फिटनेस और टाइगर के साथ ऑन-स्क्रीन केमिस्ट्री चर्चा में रही। हालांकि समीक्षकों ने उनके किरदार की सीमाओं पर सवाल भी उठाए। दिशा के करियर की दिलचस्प सच्चाई यही रही-उनकी लोकप्रियता बढ़ती गई, लेकिन बतौर अभिनेत्री उन्हें मजबूत भूमिकाओं की तलाश भी रही। सलमान खान के साथ 'भारत', फिर 'राधे'2019 में दिशा को सलमान खान के साथ काम करने का मौका मिला। अली अब्बास जफर की 'भारत' में उन्होंने राधा का किरदार निभाया और 'स्लो मोशन' गाने में सलमान के साथ नजर आईं। फिल्म कमर्शियल तौर पर सफल रही और साल की बड़ी फिल्मों में शामिल हुई। दिशा ने 'भारत' को लेकर कहा था कि वह फिल्म से खुश थीं, क्योंकि उन्हें डांस करना पसंद है और वह ऐसा बॉलीवुड गाना करना चाहती थीं। उन्होंने सलमान खान और कोरियोग्राफर वैभवी मर्चेंट के साथ काम करने को खास अनुभव बताया था। इसके बाद सलमान और दिशा की जोड़ी 'राधे' में फिर नजर आई। हालांकि फिल्म को आलोचकों से खास प्रतिक्रिया नहीं मिली और कोविड-19 के कारण इसकी रिलीज प्रभावित हुई। 'मलंग' में ग्लैमर से आगे बढ़ने की कोशिश-2020 की 'मलंग' दिशा के लिए अलग तरह का प्रोजेक्ट था। मोहित सूरी की इस फिल्म में उनके साथ आदित्य रॉय कपूर, अनिल कपूर और कुणाल खेमू थे। दिशा ने सारा नांबियार का किरदार निभाया। फिल्म को व्यावसायिक रूप से मध्यम सफलता मिली, लेकिन दिशा को पहले की तुलना में ज्यादा स्क्रीन स्पेस मिला। उनके स्क्रीन टाइम और प्रदर्शन को सकारात्मक तरीके से नोट किया गया था। दिशा ने अपने करियर को लेकर कहा था कि वह सिर्फ नंबर वन बनने के लिए फिल्में साइन नहीं करतीं। उनके लिए जरूरी है कि वह चुनी गई भूमिका के सफर को एंजॉय करें। उन्होंने यह भी कहा कि फिल्म चुनते समय वह अपनी 'इनर वॉइस' पर भरोसा करती हैं। यही बात दिशा की करियर स्ट्रैटेजी को अलग करती है। उनकी फिल्मोग्राफी में बड़ी कमर्शियल फिल्में हैं, लेकिन उन्होंने खुद को हर फिल्म में एक ही तरह से पेश करने की कोशिश नहीं की। 'हर फिल्म के सेट पर खुद को नया कलाकार मानती हूं' अपने एक्टिंग ग्रोथ को लेकर दिशा पाटनी ने कहा था कि हर फिल्म करते समय उन्हें लगता है कि उन्होंने पहले जो सीखा था, वह भूल गई हैं और सेट पर खुद को नए कलाकार की तरह महसूस करती हैं। उन्होंने बताया कि उन्होंने एक्टिंग की कोई औपचारिक ट्रेनिंग नहीं ली। उन्होंने ऑडिशन और काम करते हुए एक्टिंग सीखी। उनके लिए हर फिल्म सीखने की प्रक्रिया रही। यह बयान अहम है, क्योंकि दिशा का करियर किसी फिल्म स्कूल या लंबे थिएटर अनुभव से शुरू नहीं हुआ था। मॉडलिंग, विज्ञापन, ऑडिशन और लगातार काम- यही उनका प्रशिक्षण बनता गया। फिटनेस और एक्शन बनीं पहचान-दिशा की पहचान सिर्फ फिल्मों तक सीमित नहीं रही। फिटनेस और डांस उनकी पब्लिक इमेज का बड़ा हिस्सा हैं। जिम, जिम्नास्टिक और फिटनेस से जुड़े वीडियो और तस्वीरों के कारण वह सोशल मीडिया पर भी चर्चा में रहती हैं। एक्शन फिल्मों में भी उनकी रुचि दिखाई दी। दिशा ने कहा था कि वह एक आउट-एंड-आउट एक्शन फिल्म करना चाहती हैं। उनके मुताबिक अगर दर्शक किसी लड़की को एक्शन करते हुए देखना चाहते हैं और उनकी धारणा बदलती है, तो ऐसी फिल्मों के लिए रास्ता और खुलेगा। यानी दिशा खुद को सिर्फ ग्लैमरस भूमिकाओं तक सीमित नहीं देखना चाहती थीं। 'राधे' से 'एक विलेन रिटर्न्स' तक आया उतार-'मलंग' के बाद दिशा के करियर में उतार-चढ़ाव आए। 2021 में 'राधे' रिलीज हुई और 2022 में वह 'एक विलेन रिटर्न्स' में नजर आईं। दोनों फिल्मों को अपेक्षित सफलता नहीं मिली। 'एक विलेन रिटर्न्स' में उन्होंने थ्रिलर कहानी से जुड़ा किरदार निभाया, लेकिन फिल्म बॉक्स ऑफिस पर उम्मीद के मुताबिक प्रदर्शन नहीं कर सकी। इसके बाद 2024 में 'योद्धा' आई। फिल्म में दिशा ने एक्शन से जुड़ा किरदार निभाया और उनके फाइट सीक्वेंस की तारीफ हुई, हालांकि फिल्म बॉक्स ऑफिस पर सफल नहीं रही। लेकिन उसी साल 'कल्कि 2898 एडी' ने तस्वीर बदल दी। फिल्म में दिशा का रोल छोटा था, लेकिन यह जबरदस्त कमर्शियल सफलता रही। 'कंगुवा' और नई इंडस्ट्री में कदम 2024 में दिशा ने तमिल सिनेमा में कदम रखा। वह सूर्या स्टारर 'कंगुवा' में नजर आईं और एंजेलिना का किरदार निभाया। हालांकि फिल्म को मिश्रित प्रतिक्रिया मिली और उनके किरदार के स्क्रीन स्पेस पर भी सवाल उठे। यह दौर बताता है कि दिशा का करियर हमेशा सीधी रेखा में नहीं चला। कभी बड़ी हिट मिली, कभी फिल्म असफल हुई, कभी भूमिका की तारीफ हुई तो कभी सीमित स्क्रीन टाइम के लिए आलोचना झेलनी पड़ी। 2026 में भी जारी है सफर-2025 में उनकी कोई फिल्म रिलीज नहीं हुई, लेकिन 2026 में दिशा की फिल्मोग्राफी में कई प्रोजेक्ट जुड़े। 'ओ'रोमियो' में वह जूली के किरदार में नजर आईं। इसके अलावा 'वेलकम टू द जंगल' और 'अवारापन 2' भी उनके करियर का हिस्सा बने। 'अवारापन 2' में उन्होंने इमरान हाशमी के साथ मुख्य भूमिका निभाई। यह 2007 की चर्चित 'अवारापन' का सीक्वल है।

अपने करियर के एक दशक से ज्यादा समय बाद भी दिशा अलग-अलग तरह के प्रोजेक्ट्स का हिस्सा बन रही हैं। स्टारडम के बीच भी खुद को 'इंट्रोवर्ट' मानती हैं-दिशा की सोशल मीडिया छवि बेहद ग्लैमरस है, लेकिन 'फिल्मीबीट' से बातचीत में उन्होंने वास्तविक जीवन को काफी अलग बताया था।

उन्होंने कहा था कि वह इंट्रोवर्ट हैं, सामाजिक कार्यक्रमों में असहज महसूस करती हैं और घर पर रहना ज्यादा पसंद करती हैं। बचपन के दिनों को याद करते हुए उन्होंने बताया कि स्कूल में उनके छोटे बाल थे,

वह टॉमबॉय की तरह रहती थीं और उन्हें 'जादू' कहकर चिढ़ाया जाता था। लेकिन उस समय वह अपनी छोटी-सी दुनिया में इतनी व्यस्त रहती थीं कि इन बातों को ज्यादा गंभीरता से नहीं लेती थीं।

शायद यही वजह है कि कैमरे के सामने आत्मविश्वासी दिखाई देने वाली दिशा निजी जिंदगी में खुद को अलग तरह से देखती हैं।

बॉक्स ऑफिस कलेक्शन-नेगेटिव रिव्यू का असर

टॉक्सिक की कमाई में 64फीसदी गिरावट,पहले दिन से आगे से भी कम कमाई हुई

मुंबई। कन्नड़ स्टार यश की फिल्म टॉक्सिक पर नेगेटिव रिव्यू और रेटिंग का बुरा असर पड़ा है। पहले दिन दर्शक बड़ी संख्या में ये फिल्म देखने पहुंचे और भारत में फिल्म ने करीब 101 करोड़ रुपए का बॉक्स ऑफिस कलेक्शन कर लिया। हालांकि खराब रिव्यू के चलते दूसरे दिन ही फिल्म की कमाई में 64फीसदी गिरावट आ गई। फिल्म ने पहले दिन के मुकाबले तीन गुना कम कमाई की है। इंडस्ट्री ट्रैकर वेबसाइट सैकनिल्क के मुताबिक, गुरुवार को दूसरे दिन टॉक्सिक ने देशभर में सभी भाषाओं को मिलाकर 22,629 शोज से 36.40 करोड़ रुपए की नेट कमाई की। बुधवार को फिल्म ने 101.10 करोड़ रुपए कमाए थे। इसके मुकाबले दूसरे दिन कमाई 63.99फीसदी घट गई। करीब 500 करोड़ रुपए के बजट में बनी टॉक्सिक ने दो दिन में भारत में 164.50 करोड़ रुपए का ग्रॉस कलेक्शन किया है। फिल्म का भारत में नेट कलेक्शन 137.50 करोड़ रुपए हो गया है। फिल्म को आज रक्षाबंधन और लॉन्ग वीकेंड का फायदा मिल सकता है, लेकिन दर्शकों द्वारा जिस तरह फिल्म की आलोचना की जा रही है, उससे ये अनुमान गलत साबित भी हो सकता है। हिंदी वर्जन से सबसे ज्यादा कमाई- दूसरे दिन भी टॉक्सिक की सबसे ज्यादा कमाई हिंदी डब वर्जन से हुई। हालांकि, हिंदी वर्जन की कमाई पहले दिन के मुकाबले काफी घट गई। बुधवार को रिलीज के दिन हिंदी वर्जन ने 55.00 करोड़ रुपए का नेट बिजनस किया था। गुरुवार को यह कमाई घटकर 23.00 करोड़ रुपए रह गई। विदेशों में भी कमाई घटी- यश, नयनतारा, कियारा आडवानी, हुमा कुरैशी, तारा सुतारिया और रुक्मिणी वसंत की फिल्म की विदेशों में भी दूसरे दिन कमाई कम हुई।ओपनिंग डे पर फिल्म ने ओवरसीज मार्केट में 16.25 करोड़ रुपए का ग्रॉस बिजनस किया था। दूसरे दिन विदेशों से 10.00 करोड़ रुपए का ग्रॉस कलेक्शन हुआ। दो दिनों में टॉक्सिक ने विदेशों से कुल 26.25 करोड़ रुपए का ग्रॉस कलेक्शन किया है। भारत और

विदेशों को मिलाकर फिल्म का वर्ल्डवाइड ग्रॉस कलेक्शन 190.75 करोड़ रुपए हो गया है। धुरंधर 2 के मुकाबले आधी कमाई भी नहीं-टॉक्सिक पहले दिन देश में रणवीर सिंह की धुरंधर 2 के ओपनिंग डे रिकॉर्ड के करीब पहुंची थी। धुरंधर 2 ने पहले दिन 102.55 करोड़ रुपए कमाए थे, जबकि टॉक्सिक की कमाई 101.10 करोड़ रुपए रही। दोनों फिल्मों की पहले दिन की कमाई की तुलना की जा रही है। हालांकि, आदित्य धर के डायरेक्शन में बनी धुरंधर 2 ने दूसरे दिन देश में 80.72 करोड़ रुपए का बिजनस किया था। फिल्म को माउथ पब्लिसिटी का फायदा मिला था। इसके मुकाबले टॉक्सिक दूसरे दिन 36.40 करोड़ रुपए ही कमा सकी। फिल्म की कमाई धुरंधर 2 की दूसरे दिन की कमाई की आधी भी नहीं है। आवारापन 2 की 14वें दिन की कमाई-टॉक्सिक की कमाई घटने का आवारापन 2 या बंटवारा 1947 को कोई फायदा नहीं मिला। गुरुवार को इमरान हाशमी की सुपरहिट फिल्म आवारापन 2 की कमाई भी कम हुई। 14वें दिन आवारापन 2 ने 1,085 शोज से 60 लाख रुपए की नेट कमाई की। इसके बाद भारत में फिल्म का कुल ग्रॉस कलेक्शन 171.90 करोड़ रुपए और कुल नेट कलेक्शन 144.25 करोड़ रुपए हो गया।आवारापन 2 का वर्ल्डवाइड ग्रॉस कलेक्शन 203.70 करोड़ रुपए है। नितिन कक्कड़ के डायरेक्शन में बनी यह फिल्म 45 करोड़ रुपए के बजट में बनी है। बंटवारा 1947 का कलेक्शन-सनी देओल की बंटवारा 1947 की कमाई 14वें दिन भी 5 लाख रुपए तक नहीं पहुंची। राजकुमार संतोषी के डायरेक्शन में बनी इस फिल्म ने गुरुवार को 126 शोज से 3 लाख रुपए कमाए। 150 करोड़ रुपए के बजट में बनी बंटवारा 1947 का वर्ल्डवाइड ग्रॉस कलेक्शन अब तक 53.88 करोड़ रुपए है। भारत में फिल्म ने 37.80 करोड़ रुपए का नेट कलेक्शन किया है। टॉक्सिक के मेकर्स पर नेगेटिव रेटिंग हटवाने के आरोप-केजीएफ स्टार यश की फिल्म टॉक्सिक को लगातार दर्शकों के नेगेटिव रिव्यू मिल रहे हैं। सोशल मीडिया और अन्य वेबसाइट्स में फिल्म को काफी निराशाजनक रेटिंग मिली है। इसी बीच अब फिल्म के मेकर्स पर बुक माय शो से फिल्म की रेटिंग हटवाने के आरोप लग रहे हैं। बुक माय शो पर आमतौर पर हर रिलीज हुई फिल्म की रेटिंग दिखाई जाती है। कुछ समय पहले तक फिल्म टॉक्सिक को बुक माय शो पर 5.5 रेटिंग मिली थी, लेकिन अब ये रेटिंग हटा दी गई है। इसके बदले वेबसाइट पर सिर्फ लाइक नजर आ रहे हैं। जबकि अन्य फिल्मों की रेटिंग अब भी मौजूद है। सोशल मीडिया यूजर्स ने दावा किया कि दर्शकों से खराब रिव्यू मिलने के बाद रेटिंग हटा दी गई। हालांकि, रेटिंग हटाने को लेकर बुक माय शो या फिल्म के निर्माताओं की ओर से कोई जानकारी नहीं दी गई है। एक्स के एक यूजर ने आरोप लगाते हुए लिखा, 'बुक माय शो ने टॉक्सिक फिल्म की रेटिंग बंद कर दी। यह इतनी खराब थी कि 5.5/10 मिली, बीएमएस के इतिहास में सबसे खराब।' एक दिन में कमाए 100 करोड़, फिर फ्लॉप का डर क्यों? फिल्म टॉक्सिक 26 अगस्त को रिलीज हुई। इंडस्ट्री ट्रैकर वेबसाइट सैकनिल्क के मुताबिक, फिल्म ने पहले दिन ही भारत में 101 करोड़ का कलेक्शन कर लिया है। लेकिन इसके बावजूद फिल्म के फ्लॉप होने के अनुमान लगाए जा रहे हैं। वजह है फिल्म की हाइप और अब आने वाले नेगेटिव रिव्यू। पहले दिन फिल्म को 24579 शोज मिले, जिसकी ऑक्यूपेंसी 57 पर्सेंट रही। वीक डे होने के बावजूद, दर्शक बड़ी संख्या में फिल्म देखने पहुंचे, लेकिन दोपहर तक फिल्म के नेगेटिव रिव्यू चर्चा में आ गए। फिल्म की आलोचना का एक कारण ये भी रहा कि पिछले कुछ महीनों से मेकर्स लगातार इसे बड़े स्केल और बड़े बजट में तैयार करने की बात कर रहे थे, जिससे फिल्म से ज्यादा उम्मीदें जुड़ी थीं।

नेपाल बाढ़ में पत्नी संग फंसे परिणीता एक्टर खराज मुखर्जी,शूटिंग के लिए गए थे, बंगाली एक्ट्रेस भी फंसी

काठमांडू। नेपाल में आई भीषण बाढ़ के बाद अब तक 332 शव बरामद किए जा चुके हैं। बॉलीवुड फिल्म परिणीता और कहानी में नजर आ चुके पॉपुलर बंगाली एक्टर खराज मुखर्जी और उनकी पत्नी प्रतिभा मुखर्जी भी नेपाल बाढ़ में फंसे हैं। वह एक फिल्म की शूटिंग के लिए नेपाल गए थे। खराज मुखर्जी लगातार परिवार के संपर्क में थे, फिर बाढ़ के बाद अचानक उनका नंबर बंद हो गया। उनके साथ शूटिंग यूनिट के कई और साथी भी थे। हिंदुस्तान टाइम्स की

रिपोर्ट में एक्टर के परिवार के सदस्य के अनुसार लिखा गया है, खराज और उनकी पत्नी अब सुरक्षित हैं, हालांकि आसपास की स्थिति बिगड़ी हुई है। वह नेपाल से नहीं निकल पा रहे हैं। खराज के साथ एक्टर रजताभ दत्ता भी फंसे हुए हैं। काठमांडू में मौजूदा हालात के कारण उनका ग्रुप वहां से उड़ान नहीं भर सका। अब उनकी योजना सड़क मार्ग से उत्तर प्रदेश के गोरखपुर पहुंचने की है। इसके बाद वे गोरखपुर से कोलकाता के लिए फ्लाइट लेंगे। कौन हैं खराज मुखर्जी? बंगाली फिल्म इंडस्ट्री का जाना-माना नाम रहे मुखर्जी ने 'द नेमसेक', 'एक्सीडेंट', 'मुक्तोधारा' और 'जातिस्वर' जैसी फिल्मों में काम किया है।उनकी हिंदी फिल्मों में 'युवा', 'परिणीता', 'लागा चुनरी में दाग', स्पेशल 26 और 'लफंगे परिंदे' शामिल हैं। सुजॉय घोष की फिल्म 'कहानी' में इंस्पेक्टर चटर्जी का किरदार उनकी चर्चित हिंदी फिल्म भूमिकाओं में शामिल है।

स्वत्वाधिकारी एवं मुद्रक
डॉ. दीपक अरोरा
द्वारा रामा प्रिंटर्स
53/25/1 ए बेली रोड
न्यू कटरा प्रयागराज
(उ.प्र) 211002 से
मुद्रित एवं सी-41यूपी
एसआईडीसी औद्योगिक
क्षेत्र नैनी प्रयागराज।
संपादक/प्रकाशक
डा.पुनीत अरोरा
मो.न.09415608710
RNINO.UPHIN/2015/63398
www.adhuniksamachar.com

नोटः- इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी0आर0बी0 एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होगा।